पैरोल पर
ब्रजेन्द्र नाथ गौड़

पैरोल पर

[मौलिक-उपन्यास]

लेखक

श्री व्रजेन्द्रनाथ गौड़

प्रथम बार] १६४३ [मूल्य १॥)

★ ★ ★ ★ ★ ★

प्रकाशक—
सेवकराम नागर
व्यवस्थापक,
शिवाजी बुकडिपो, लखनऊ.

४

पैरोल पर

[उपन्यास]

मुद्रक—
पं० मन्नालाल तिवारी
शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ.

यह उपन्यास—

इस उपन्यास का ढाँचा कुछ ऍडवंन्चरस लोगों की तूफ़ानी-ज़िन्दगी के घात-प्रतिघात, उथल-पुथल और कशूमकश की नींव पर खड़ा किया गया है. इसमें राजनीति नहीं है ; राजनीति से, किसी हद तक, सम्बन्धित व्यक्ति ज़रूर हैं ; जिन्हें लेखक ने बिल्कुल नहीं छुआ है—उन्हें उन्हीं के ढंग से चलने दिया है, उन्हीं के ढंग से बोलने दिया है और उन्हीं की दृष्टि से सारे वातावरण को देखने दिया है—इतने विश्वास के बाद भी, कि लेखक तटस्थ है, अगर पाठक उसे कहीं पाते या खोजते हैं, तो ग़लती लेखक की नहीं है. लेखक फ़ालतू बातों को छोड़कर, सफल स्क्रीन-चित्र की तरह, निर्दिष्ट चीजों को क़ायदे से, पेश करने में कामयाब होगा तो उसे असफल कहने का साहस कौन कर सकता है !

भाई श्रीराधेश्याम शर्मा, जिन्होंने मुझे इस उपन्यास का यह नाम, उपन्यास लिखने से पहले ही, दिया था और इसमें वर्णित कुछ घटनायें बताई थीं, साहित्य संसार से अपरिचित होते हुए भी, मेरे धन्यवाद के पात्र हैं. इसी तरह श्रीसुरेशचन्द्र अवस्थी तथा उन बहनों और मित्रों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे कुछ मशविरे इस शर्त पर दिए कि उनका नाम प्रकाश में न आए. प्रकाशक को धन्यवाद देना न भूलूँगा, जिन्होंने काग़ज़ की इस मँहगी के ज़माने में भी, यह उपन्यास तत्काल प्रकाशित किया.

अब मैं काफ़ी दिन के लिए पाठकों से बिदा होता हूँ, क्योंकि शीघ्र कोई चीज़ लिख सकूँगा; इसकी आशा, फ़िलहाल, नहीं है.

'उर्मिला' ऑफिस, लखनऊ
कृष्ण-जन्मोत्सव, '४३

—ब्रजेन्द्रनाथ गौड़

प्रकाशकीय—

गिनती के हिसाब से गौड़ जी की यह सातवीं पुस्तक है। इसे उन्होंने हमारे अनुरोध पर लिखा है। हमने सन् '४० में उनके प्रथम उपन्यास 'आवारा' के कुछ परिच्छेद पढ़े थे—उस उपन्यास की प्रशंसा कई-प्रकाशकों, साहित्यिकों और उनके पाठकों ने की थी। परन्तु उसे गौड़ जी ने प्रकाशित नहीं कराया। उसके कुछ परिच्छेद 'माधुरी', 'आज', 'जवानी' और 'संसार' आदि पत्रों में प्रकाशित हुए हैं।

हमने उनकी कहानियाँ लगभग सभी श्रेष्ठ पत्रों में सादर प्रकाशित होते देखी हैं—वे अत्यन्त सफल कहानी-लेखक हैं। अन्य भाषाओं में उनकी कहानियों के अनुवाद हुए हैं और साहित्यिकों व पाठकों द्वारा उनका सम्मान हुआ है। उनके तीसरे कहानी संग्रह 'सिन्दूर की लाज' की बिक्री और अनेक भाषाओं के पत्रों में हुई उसकी प्रशंसात्मक समालोचनाएँ इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि वे अपने युग के कहानी लेखकों में ऊँचे स्थान के अधिकारी हैं।

हमने उनके कलाकार को, उनकी क़लम के ज़ोर को और उनकी मौलिकता को अच्छी तरह समझा है—इस उपन्यास के अधिकांश परिच्छेद, पूर्ण और कुछेक के कुछ भाग, उन्होंने 'सरस्वती', 'आज', "माया' और 'मनोहर कहानियाँ' आदि पत्रों में प्रकाशित कराए थे, जिन्हें पढ़कर उनके पाठक और हम इस उपन्यास को शीघ्र ही मुद्रित-रूप में देखने के इच्छुक थे. इसीलिये काग़ज़ के अभाव में भी हम इसे छापने को वाध्य हुए।

हमें ही नहीं, हिन्दी के प्रत्येक प्रेमी को अपने इस युवक लेखक पर गर्व है जो, विरोधी-परिस्थितियों को रौंदते हुए, अपनी कलाकारिता को सफल बनाते हुए, साधनारत है।

—सेवकराम नागर

समर्पण

जिन्दगी की राह के उन मुलाकातियों को,
जिनकी मीठी याद मेरे साथ है
और जो मुझे भी याद
रख सकेंगे.

—अ०

'पैरोल पर' के मुख्य पात्र—

कपूर,

अनिल, रस्तोगी, विजय,

शंकर, ज़मीर, इकराम,

नारायण, लाल, दत्त,

अमिता,

शीला और नीलम.

ब्रजेन्द्र नाथ गौड़

१

स्वागत के लिए सदर दरवाज़े पर खड़े रस्तोगी और उसकी नव-विवाहिता पत्नी, अमिता, ने कपूर को हाथ जोड़कर नमस्ते किया. कपूर ने भी हाथ जोड़ दिए, और क्षण भर के लिए उसकी दृष्टि अमिता की आँखों में झाँक दी.

तब रस्तोगी ने कपूर से कहा—'ये मेरी पत्नी हैं.'

कपूर ने अमिता की मुस्कराती हुई आँखों में एक बार फिर देखा और तब तीनों कमरे के अन्दर पहुँच गये. क़ायदे से सजे हुए शाही सामानों को कपूर ने एक बार विरक्ति के भाव से देखा और कुरसी के हत्थे को पकड़ लिया, जैसे उस आलीशान-इमारत के अनन्त वैभव को मसल कर, क्षण भर में ही नष्ट कर देने की कामना उसके मन में जाग उठी हो.

स्वामी के कुछ कहने से पूर्व ही अमिता ने कपूर की ओर दृष्टि करके कोमल आग्रहपूर्ण स्वर में कहा—'बैठिए.'

कपूर ने गम्भीर दृष्टि अमिता की ओर बढ़ाई और फिर चारों ओर देखने लगा.

अमिता ने दो क्षण बाद फिर कहा—'बैठिये न.'

कपूर ने उसकी ओर पुनः देखा और उसे लगा कि वह उस आकर्षण में डूब गया है. तब मुस्कराते हुए कुरसी पर बैठ गया. साथ ही रस्तोगी भी सामने बैठ गया. अमिता खड़ी रही, कपूर ने प्रश्न सूचक दृष्टि से उसकी ओर देख कर कहा—'और आप ?'

तनिक-सा मुस्कराके वह भी बग़ल में पड़ी कुरसी पर बैठ गई.

रस्तोगी ने मेज़ पर रखी कॉलबैल पर अँगुली रखी. कुछ क्षणों में ही ऑर्डर्ली ने आकर आदरसूचक अभिवादन किया.

रस्तोगी ने उससे कहा—'चाय !'

ऑर्डर्ली चला गया. कपूर ने मेज़ पर पड़ा अख़बार उठा लिया और पन्ने पलटने लगा.

अमिता ने कहा—'आपकी हड़ताल तो खूब चल रही है.'

अख़बार मेज़ पर रखकर उसने भेदभरी दृष्टि से अमिता की मुस्कराती हुई आँखों के मादक भोलेपन को देखा और कहा—'जी हाँ, उम्मीद भी है कि हड़तालों के इतिहास में इस हड़ताल का ख़ास महत्त्व होगा. हमें इतनी सफलता की तो आशा भी नहीं थी. इस बार मज़दूरों ने निश्चय कर लिया है कि भूखे मर जायेंगे, पर अधिकार लेकर मानेंगे.'

रस्तोगी ने कहा—'तो आप लोगों ने निश्चय कर लिया है कि हमें चैन से न बैठने देंगे ?'

कपूर ने उपहास की हँसी हँसते हुए कहा—'और आपने भी तो ग़रीब मज़दूरों को भूखों मारने का निश्चय किया है. आप यह नहीं सोचते कि जिनकी मेहनत से आप लाखों रुपये कमाते हैं, उन्हें आप उस मेहनत के एवज़ में देते ही क्या हैं ?'

रस्तोगी ने कहा—'आप सख़्ती से इस विषय में सोच रहे हैं. ज़रा उदारता से सोचें कि हम जो कुछ करते हैं, उससे ज़्यादा क्या किया जा सकता है ?'

कपूर कुछ कहना ही चाहता था कि ऑर्डर्ली ने चाय का ट्रे लाकर मेज़ पर रख दिया. अमिता ने कुरसी आगे खिसका कर चाय बनाना आरम्भ किया. रस्तोगी ने मिठाई और नमकीन की बड़ी सी डिश कपूर के सामने बढ़ाकर कहा—'खाइये.'

कपूर ने एक समोसा उठाकर कहा—'आप उदारता से सोचने

की बात कहते हैं, तो मैं पूछूँ कि आप लोग क्यों नहीं उदारता से सोचते ? क्या आपका यही समझना उचित है कि जो कुछ आप मज़दूरों को देते हैं, वह ठीक है ? क्या उनकी मेहनत का यह पर्याप्त पारिश्रमिक है ?' और समोसे का एक कोना दाँतों से काट लिया.

रस्तोगी ने कहा—'लेकिन आप लोगों को इतनी जल्दी भी तो न करनी चाहिए. जब हम मज़दूरों को आश्वासन दे चुके हैं, तो उनका वेतन बढ़ाया ही जायगा.'

कपूर ने घृणा से मुँह बना कर कहा—'बढ़ाया जायगा ! आप भी अजीब तरह की बात कहते हैं. आप लोग ग़रीब मज़दूरों को कितने आश्वासन नहीं दे चुके, लेकिन कभी एक भी पूरा किया ? किसी को झूठी आशा में रखना ठीक नहीं है. क्या आप यह नहीं सोचते कि ग़रीब अपने इरादों के पक्के होते हैं और उनके इरादे किसी भी समय आप लोगों के हक़ में अनर्थ का कारण बन सकते हैं.'

अमिता ने भयभीत नेत्रों से कपूर की ओर देखा और मुस्कराकर कहा—'आप उत्तेजित न हों.' फिर चाय का प्याला बढ़ाते हुए कहा—'लीजिए, चाय पीजिए पहले.'

कपूर ने अमिता के आग्रह को स्वीकार कर किंचित मुस्करा, प्याला हाथ में लेते हुए कहा—'उत्तेजित मैं नहीं होता, उत्तेजना तो क्षणिक होती है; उससे हमारा कोई काम नहीं हो सकता. हम तो काम की बात सोचते हैं; वही कहते हैं, वही करते भी हैं.'

अमिता ने हँस कर कहा—'लेकिन आप कुछ चाहते हैं, तो आपको अपनी बात ढंग से कहनी चाहिए.'

अमिता की बात कपूर को बुरी अवश्य लगी, लेकिन उसके हँसने के कारण वह भी हँसकर रह गया.

रस्तोगी ने चाय का प्याला ओठों से लगाकर एक चुस्की ली, तब कहा—'लेकिन आप लोग अपनी शर्तों में कुछ सुधार क्यों नहीं कर देते ?'

कपूर ने कई घूँट चाय पी लेने के बाद कहा—'आप लोगों की दो ख़ास बातें हैं, एक शर्तों की और दूसरी न्याय की. मैं इनके जवाब में यही कहना चाहता हूँ कि आप लोगों के इशारे से पुलिस ने ग़रीब मज़दूरों पर लाठी चार्ज किया और गोली चलाकर क्रूरता का परिचय दिया; जिसे देखते हुए कुछ शर्तें और बढ़ाने का हम लोगों ने निश्चय किया है.'

कपूर की बात सुनकर रस्तोगी-दम्पत्ति ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा. दोनों ही कुछ कहना चाहते थे कि कपूर ने कहा—'अब तो शान्तिपूर्ण सुलह का प्रस्ताव आप ही लोग रखें और हमारी एक-एक शर्त आदर-सहित स्वीकार करें, अन्यथा आशा करना बेकार है.'

रस्तोगी ने कहा—'हम लोगों ने आज आपको इसीलिए कष्ट दिया है कि आप हमारी सहायता करें.'

कपूर ने गम्भीरता से कहा—'हम इसके लिए सदा तैयार हैं.'

अमिता ने दो क्षण चुप रहने के बाद कहा—'लेकिन आपकी शर्तें तो बहुत सख़्त हैं.'

कपूर ने अमिता की ओर देखकर कहा—'आप शर्तों को सख़्त कह सकती हैं, लेकिन मज़दूरों की भलाई के लिये हम लोगों ने बहुत सोच-समझ कर ये शर्तें बनाई हैं.'

रस्तोगी ने कहा—'तब आपका मतलब यह है कि हम लोग मिलों में ताले डाल दें!'

कपूर ने ख़ाली प्याला रखते हुए गम्भीरता से कहा—'आप जो कुछ भी समझें, लेकिन यदि शान्तिपूर्ण सुलह चाहेंगे, तो हर हालत में मज़दूरों के अधिकार उन्हें देने ही पड़ेंगे.'

अमिता ने कपूर के ख़ाली प्याले में फिर चाय भर दी और वह अनजाने ही पीने लगा.

रस्तोगी ने तभी कहा—'तो आप हमारे लिए कुछ नहीं कर सकते?'

कपूर ने दृढ़ता से कहा—'मज़दूरों के सम्बन्ध में कुछ भी तय करना मुझ अकेले के हाथ में तो नहीं है, फिर मज़दूरों ने जब यह तय कर लिया है कि भूखों मर जायेंगे, लेकिन अधिकारों से वंचित रहकर काम न करेंगे; तो कैसे आपको यह विश्वास दिलाऊँ कि आप जो चाहेंगे वह हो जायेगा? और फिर मज़दूर आप लोगों द्वारा किये गये अन्याय ही क्यों भूल जायें? क्या आपने उन निहत्थे लोगों पर लाठी-चार्ज करके और गोली चलवाकर न्याय किया था, जो आप उनसे न्याय की आशा करते हैं? अब तो वे चाहते हैं कि उन्होंने आप लोगों को जिस महान् वैभव का अधिकारी बनाया है, उस वैभव का उपभोग वे स्वयम् करें.'

अमिता ने कहा—'आप तो फिर नाराज़ होने लगे.'

कपूर ने जैसे ग़लती की हो, सो एक बार उसकी ओर देखकर धीरे से सिर झुका लिया.

'हम चाहते हैं कि हमारे और आपके बीच एक स्थायी सुलह हो सके, पर आप अपनी बात पर बहुत दृढ़ हैं, तो हम लोग कहाँ तक दबें?' रस्तोगी ने विवशता से कम्पित स्वर में कहा.

कपूर ने उत्तर दिया—'आप इतना ही सोच लें, तो ठीक हो जाये कि यदि आप अपने को इस तरह दबा हुआ समझते हैं, तो वे मज़दूर आज क्यों न ऊपर उठकर आपको दबाने का प्रयत्न करें, जिन्हें आपने सदा दबाया है?'

अमिता हँसी, फिर कपूर की ओर धीरे से देखा और कहा—'आपको तो मंच पर बोलने की आदत पड़ गई है, ज़रा धीमे से समझाकर बातें करें.'

कपूर ने इस बार कहा—'मैं जो बात कहता हूँ वह आपको जँचती नहीं है, तो क्षमा कीजिये, मैं कुछ कहूँगा ही नहीं.'

अमिता उदास-सी हो गई। रस्तोगी ने कहा—'आप कुछ वैसा

न सोचें। हम लोग आपके कहे अनुसार काम करेंगे, पर इतना ज़रूर है कि हमारा ख़्याल आपको रखना होगा और हमें, कम से कम, मज़दूरों के सामने लज्जित होने से तो बचायेंगे ही.'

कपूर ने घड़ी देखी और उठ खड़ा हुआ. रस्तोगी दम्पत्ति भी खड़े हो गए. कपूर ने उस शानदार कमरे पर एक नज़र डालकर कहा—'यह वैभव जिन्होंने आपको दिया है, वे आज भूखों मर रहे हैं, लेकिन आपको कुछ नहीं.' और वह हँस पड़ा. शायद अमिता उस व्यंग्य को समझ सकी हो.

फिर रस्तोगी की ओर देख कर दृढ़ता से कपूर बोला—'लेकिन आपको उनकी पूरी शर्तें माननी ही होंगी. आप कभी मज़दूरों की बस्ती में जाएँ और अपने इस विलास-भवन से उनकी झोपड़ियों की तुलना करें, तो मालूम हो कि आप किस आदर्श को निभा रहे हैं. आपने कभी सोचा है कि उन ग़रीबों के प्रति आपका जो नैतिक कर्त्तव्य है, उसे कभी पूरा करने का प्रयत्न करना तो दूर की बात है; उस कर्त्तव्य की बात सोचने का साहस आप लोगों ने किया? फिर आप क्यों आशा करते हैं कि वे ग़रीब आपके प्रति, अपने को धोखे में डालकर भी, सदा वफ़ादार बने रहेंगे?'

अमिता खिल-खिलाकर हँस पड़ी. कपूर और रस्तोगी ने प्रश्नात्मक दृष्टि से उसे देखा, तो वह बोली—'मैं समझ गई कि आप अपनी आदत से विवश हैं. आप सदा हम लोगों के विरुद्ध सोचा करते हैं, सो वही बोलते हैं. इसलिये हम आपकी बातों से कभी दुखी नहीं होंगे, आप गालियाँ भी दे सकते हैं.'

कपूर ने लज्जित होकर कहा—'आप मेरी बातें न सुन कर मेरे उच्चारण और वाणी पर विशेष ध्यान देती हैं. ख़ैर, मैं एक बार फिर क्षमा चाहता हूँ.'

रस्तोगी ने पूछा—'तो क्या तय किया भाई?'

'मैं आपकी बात अपने दोस्तों के सामने पेश करूँगा. जो कुछ भी तय होगा, वह आपको बता दिया जायगा.' कपूर ने कहा और धीरे-धीरे दरवाज़े की ओर चलने लगा.

रस्तोगी ने कहा—'तो कब आशा करें ?'

कपूर ने द्वार के बाहर खड़े होकर कहा—'आज-कल हम लोगों की कार्यकारिणी की बैठकें दिन में दो बार होती हैं. मैं शाम को आपकी बात वहाँ पेश कर दूँगा.'

अमिता ने धीरे से पूछा—'फिर कब आयेंगे ?'

कपूर चलते-चलते एकबारगी चौंक पड़ा. फिर उसने कह दिया—'कल.'

अमिता ने कहा—'कार कहाँ भेजूँ ?'

कपूर ने कहा—'कार पर चलने का समय अभी नहीं आया.'

अमिता ने 'नमस्ते' कहा. कपूर ने मुड़कर अमिता की ओर देखा और प्रत्युत्तर में उसने भी 'नमस्ते' कह दिया.

रस्तोगी कपूर के साथ-साथ सदर दरवाज़े तक जाकर वापस आ गया.

२

कमरे में पाँव रखते ही रस्तोगी ने अमिता से कहा—'आदमी कुछ सनकी-सा मालूम होता है.'

अमिता ने आश्चर्य से पति की ओर देखकर कहा—'तभी शायद यहाँ का एक-एक मज़दूर उसके इशारे पर जान देने को तैयार है और तभी उसके हाथ में इतनी शक्ति है कि वह जब चाहे तुम्हारी मिलों को खुलवा दे, जब चाहे उन्हें बन्द करवा दे, या जब चाहे उन्हें खण्डहर के रूप में बदल दे.'

पत्नी की बात का सही उत्तर देते उससे न बना, सो कहा—'मेरा मतलब है, उत्तेजित जल्दी होता है.'

अमिता ने अर्थपूर्ण दृष्टि से स्वामी की ओर देखा और मुस्करा दी.

रस्तोगी धीरे-धीरे कहने लगा—'समझ में नहीं आता, इस तरह कैसे काम चलेगा! महीना भर हो गया, मिलें बन्द पड़ी हैं. घाटे पर घाटा होता जाता है. जहाँ तक हो सका, शक्ति काम में लाई गई, पर उससे भी कुछ न हुआ—जाने क्या होने को है!'

'इस तरह अधीर होने से थोड़े ही काम चलेगा. महीने भर में जो हज़ारों रुपये का घाटा हुआ है, यदि काम चालू रखने पर लाभ का एक अंश भी मज़दूरों को देते तो वे कितने खुश होते और आज यह दिन भी न देखना पड़ता.'

खीझ कर रस्तोगी ने कहा—'तो क्या हम अपना पेट काट कर उन्हें दे दें और खुद जो हज़ारों रुपये लगाए बैठे हैं सो बेकार जायें?'

'दोनों का लाभ हो, दोनों सुखी रहें, सो क्यों नहीं करते.'

'मैं अभी जाता हूँ; एसोसिएशन के सामने कपूर की सभी बातें रख दूँगा और अपनी राय भी दे दूँगा कि जल्द से जल्द समझौता हो जाना चाहिए, चाहे उसका कितना ही मूल्य देना पड़े. और अमिता ! तुम नहीं जानतीं कि समझौता न हुआ तो ग़ज़ब हो जायगा. ये लोग मिलें बरबाद कर देंगे और कुछ आश्चर्य नहीं कि हम लोगों को लूट भी लें, मार भी डालें.

'वे ग़रीब हैं तो इतने नीच नहीं हैं. ऐसा छिछोरापन उनमें नहीं है, यह याद रखना.'

'जो भी हो, इस बार तुम्हारी राय से चल रहा हूँ वर्ना मैं तो कपूर से समझौते की बात करना अपना अपमान समझता हूँ. वह हमारा दुश्मन है. उसने हमारे मज़दूरों को भड़का कर मिलों में ताले डलवा दिये और हम उसका एक मित्र की तरह स्वागत-सत्कार करते हैं, यह मुझसे तो होता नहीं. पर तुम जाने क्या कराओगी.'

अमिता स्वामी की बात सुनकर उदास हो गई; बोली—'तो मुझ पर क्यों गुस्सा उतारते हो ? मैं तो जो पहले कहती थी, वही अब भी कहती हूँ कि शान्तिपूर्ण समझौता हो जाए तो आगे के लिये बात बनी रहेगी.'

'ख़ैर, जो कुछ कह रही हो, कर ही रहा हूँ.' रस्तोगी ने टोपी उठाकर सिर पर रखी और बाहर जाते हुए कहा—'मुझे देर भी हो सकती है. शाम को खाने के लिये प्रतीक्षा न करना.'

अमिता चुपचाप बग़लवाले कमरे में चली गई. पंखा खोल दिया और खाट पर लेट रही.

उसकी शादी हुये दो वर्ष हो गये हैं. एक शब्द में उसे द्वितीय श्रेणी से ऊपर की सुन्दरी कह सकते हैं.'

दो वर्ष के अन्दर वह अपने पति को खूब समझ गई है. पति ने कभी किसी कालेज में शिक्षा नहीं पाई थी, लेकिन उन्हें अनुभव बहुत

अधिक था. पिता की मृत्यु के बाद अपनी तीनों मिलों का काम उन्हीं को देखना पड़ता था. तीनों मिलें उनकी निजी सम्पत्ति थी. सो चाचा तथा अन्य स्वजन उनसे ईर्ष्या करते थे. लेकिन बीस वर्ष की कच्ची आयु में तीन-तीन मिलों का काम पारिवारिक विरोध के होने पर भी उन्होंने ख़ूबी से निबाहा और अपने काम में खूब उन्नति की.

वह पढ़ी-लिखी है, यह बात पति ने सदा सोची और उसकी विद्वत्ता से लाभ भी उठाया कि हर काम में उसकी राय अवश्य ले ली, चाहे फिर किया अपने मन का ही.

पति जिन परिस्थितियों के बीच रह रहे हैं, देखकर उसने उन्हें भावुकता शून्य समझा था, लेकिन अब वह सोचती थी कि वैसा सोचने में उसने भूल की थी. पति का स्वभाव सरल और विचार सीधे हैं. वे दया करना भी जानते हैं. लेकिन दया को 'दया' या 'कृपा' न कहकर 'कर्त्तव्य' कहते हैं. उन्होंने सदा यह प्रयत्न किया था कि उनसे कोई ऐसा काम न हो जाये, जिससे किसी को दुःख हो.

वह कालेज में सदा राजनीति पर गम्भीरता से सोचने वाली छात्राओं में से थी और उसकी सहानुभूति ग़रीब-मज़दूरों के प्रति भी थी. हड़तालियों की तो वह सहायता भी करती थी और कालेज में ही कोई ज़रा-सी बात होती तो विरोध की आवाज़ सबसे पहले वही उठाती. उसे इस बात का श्रेय था कि कालेज में कई बार सफलतापूर्वक हड़तालें चलीं और विद्यार्थी अपने हक़ पा सके.

स्वामी उसके मनोभावों से परिचित हैं, तभी तो अपने पारिवारिक-संस्कारों के विरुद्ध भी आम-जनता के सामने उसे आने देते हैं. वे पत्नी को अपने बेजा अधिकारों की शृंखला में जकड़ कर नहीं रखना चाहते. वे मानते हैं कि नारी को स्वतंत्रता पाने का पूरा अधिकार है.

जिस दिन मज़दूरों ने हड़ताल का ऐलान किया था, उस दिन

अपनी हानि का ख़याल उसे नहीं आया था. वह तो एक प्रकार के आन्तरिक आनन्द का अनुभव कर रही थी.

दो बार स्वामी के सहकारी के साथ वह मज़दूरों की सभा में भी गई थी और दोनों ही बार कपूर को बोलते देख आई थी. उसे आश्चर्य हुआ कि वह स्वामी को प्राणों से अधिक प्यार करती है, तब कपूर की ओर क्यों आकर्षित हुई. वह अपने मन के एक कोने में उठने वाली कसक में कपूर के अभाव का स्पन्दन सुनती है. आज वह विवाहिता है, स्वामी को प्यार करती है, फिर भी कपूर के प्रति उसके मन में प्रेम और आदर के भाव उठ आये हैं. जब उसके जीवन में कोई पुरुष नहीं आया था, तब कालेज में उसके चारों ओर रहने वाले सुन्दर युवक थे, जिनकी ओर वह कभी आकृष्ट नहीं हुई थी, इस बात का उसे गर्व था, लेकिन आज वह अपनी कमज़ोरी से मुक्त नहीं थी. वह अपने प्राणों में झाँक कर देखती है, तो स्वामी के बराबर ही कपूर को पाती है. उसे आश्चर्य है कि उसमें ऐसा परिवर्त्तन क्यों और कैसे हो गया है ? कपूर में ऐसा क्या है, जो वह उसके बिलकुल पास रहना चाहती है ?

जिस दिन लाठी-चार्ज हुआ था, उससे एक दिन पहले उसने कपूर का भाषण सुना था. वह कितने संयत ढंग से, समझा-समझा कर बात कहता है, मज़दूर कैसे शान्त हो कर उसकी बात सुनते, समझते और मानते हैं !

फिर स्वामी ने मज़दूरों की सभा में जाने से मना कर दिया था, और एक दिन मज़दूरों पर गोली चली थी, तब उसके मन में कैसा करुण-हाहाकार गूँज उठा था. उसे लगा था, जैसे एक गोली उसके कलेजे में भी आ लगी हो. वह सोच रही थी कि जो मेहनत करके हमें रुपया देते हैं, उनके प्रति हम यह क्या कर्त्तव्य निभा रहे हैं कि यदि वे अपने हक़ चाहें तो हम उन्हें कुचल दें.

फिर कपूर से मिलने की बात उसने स्वामी के सामने रखी थी ।

वे कितनी कठिनाई से राज़ी हुए थे। पर मज़दूरों के साथ समझौता होने की बात उसके मन में कपूर के दर्शन करने के बनिस्बत कम थी. वह सोचती थी, कपूर सामने बैठा हो और वह उसे देखा करे.

जब वह आया तो उसकी ओर प्रेम से एक बार देखा भी नहीं, पुरुष कितना कठोर होता है. उसकी आँखों में कैसा दृढ़ निश्चय चमक रहा था, उसकी वाणी में अपने इरादे पूरे करने का कैसा अटल विश्वास था!

वह कितना महान् है कि अपने सोने से शरीर को इन मज़दूरों के लिये नाश किए दे रहा है. रात-दिन बस एक ही चिन्ता रहती होगी कि मज़दूर अपने अधिकारों से वंचित न रहें. न कहीं खाने का ठीक होगा, न रहने-सोने का. यह तो महत्ता है, जो वह अपना ध्यान किये बिना ग़रीबों की सहायता करता है.

ग़रीबों की भलाई के इतने काम करता है, शायद तभी लोग उसके बारे में तरह-तरह की ऊलजलूल बातें कहते फिरते हैं. पर लोकमत की चिन्ता उसे नहीं है, जो काम करना है वह करता है. और जिसे बहुत से लोग घृणा से देखते हैं, वही आज हज़ारों शक्तिशाली मज़दूरों का नेता बना हुआ है. उसके एक इशारे पर क्या नहीं हो सकता?

पर वह उसे क्यों इतना चाहती है? जब स्वामी उसे दुश्मन समझते हैं, तो वह क्यों अपना समझे? लेकिन यह भी तो हो सकता है कि स्वामी ग़लती पर हों; ग़लती पर तो हैं ही. यदि एक आदमी ग़रीबों का पक्ष ले, और उससे अमीरों का नुकसान हो, तो वह आदमी अमीरों का शत्रु तो बन ही जायगा. और अमीर तो अपना लाभ देखते हैं! उन्हें यह सोचने का अवसर नहीं है कि गरीब अपने अधिकारों के लिए जो न्याय की लड़ाई लड़ रहे हैं, और एक समझदार आदमी उनका नेतृत्व कर रहा है, तो अमीर उसके सिद्धान्तों को उदारतापूर्वक सोचने की जगह यह सोचना अपना कर्त्तव्य समझेंगे कि उसे नष्ट किस

तरह किया जाये, ताकि वह आन्दोलन दब जाये, जिससे ग़रीबों को शक्ति मिलती है और अमीरों के लाभ में कमी होती है.

फिर अमिता उठी, धीरे-धीरे गुनगुनाती रही और तब सामने रखे पयानो के पास पहुँची. कानपुर के बच्चे-बच्चे की ज़बान पर उन दिनों जो गीत थिरक रहा था, उसी को झूम-झूम कर गाने लगी.

शहीदों की टोली में नाम लिखा लो.
क़फ़न सर पे बाँधो,
चलो आगे - आगे.
क़फ़न सर पे बाँधो,
बढ़ो आगे - आगे.
सुबू के सितारे को शाम दिखा दो,
शहीदों की टोली में नाम लिखा लो.
न अब चुप रहो तुम,
जो करना है कर लो,
जियो ज़िन्दा रहकर—
न चाहो, तो मर लो,
सँभालो, ये किश्ती के डाँड सँभालो,
शहीदों की टोली में नाम लिखा लो.

३

जेब में तीन पैसे, एक सिगरेट और फाउण्टेनपेन के अलावा कुछ नहीं था. दोपहरी आधी बीत चुकी थी और तेज़ लू के थपेड़े खाता हुआ कपूर सड़क के किनारे-किनारे चला जा रहा.

उस दिन जब चालीस हज़ार मज़दूरों की भीड़ के सामने वह उनका कर्त्तव्य समझा रहा था; कह रहा था कि अपने इरादों पर पक्के रहो; भूखों मर जाओ, लेकिन अधिकार लेकर जियो. तब उसने थोड़ी दूर पर खड़ी कार में बैठी हुई जिस नारी की एक झलक देखी थी, वही आज उसे इतने आदर से अपने पास बैठाकर चाय पिलायेगी, यह उस समय उसने नहीं सोचा था.

उसे अनेक युवतियों के सम्पर्क में आने का अवसर मिला है, लेकिन वह उनकी ओर से सदा उदासीन रहा है; कभी उसने यह नहीं सोचा था कि कौन स्त्री कितनी सुन्दर है, वह उससे किस ढंग से बात करती है, क्या कहती है ? लेकिन आज वह अमिता के बारे में बहुत कुछ सोचता जाता है. अमिता में आकर्षण है, पर वह उस ओर क्यों खिंचता है, यह नहीं जान पाया. वह किस तरह बैठी थी, किस तरह हँस-हँस कर बातें कर रही थी, यही वह सोच रहा है.

लेकिन उसे अमिता से मतलब ? उसमें और अमिता में ज़मीन आसमान का अन्तर है. कहाँ वह मज़दूरों का हिमायती, और कहाँ अमिता मज़दूरों के पक्के विरोधी की पत्नी. दोनों में कोई सामञ्जस्य नहीं है !

तो यह बात अमिता भी तो समझती होगी, फिर इतना आग्रह,

इतना मित्रता-पूर्ण व्यवहार क्यों ? शायद कोई चाल हो. पर वह मज़-दूरों की बात को पीछे न रखेगा ! रस्तोगी तो अपने मतलब की बात कर रहा था, पर अमिता ने ऐसा एक शब्द भी नहीं कहा था, जिससे उस पर सन्देह किया जा सके.

यह भी तो हो सकता है कि सिद्धान्तों को अलग रखकर अमिता से दोस्ती निभाई जा सके !

सामने पानवाले की दूकान देखकर वह रुक गया. पानवाले ने हाथ जोड़ दिये, तो उसे आश्चर्य हुआ. फिर जेब से सिगरेट निकाल कर कहा—'ज़रा इसे जलायेंगे.'

पानवाले ने शीघ्रता से दियासलाई देकर कहा—'जी, आजकल हड़ताल के क्या हाल हैं ?'

कपूर ने सिगरेट जलाकर कहा—'मज़दूर भूखों मर रहे हैं, लेकिन हड़ताल तो चल ही रही है.'

'फिर जी, ऐसे कब तक काम चलेगा ?'

'आज दुनिया कितना आगे बढ़ गई है, इसे नासमझ कहे जाने-वाले लोग भी जान गए हैं. मज़दूर तो काफ़ी समझदार हो गये हैं, उन्होंने निश्चय किया है कि एक-एक आदमी भूख-प्यास से तड़प-तड़प कर जान दे देगा, लेकिन अधिकार पाये बिना मिलों के अन्दर क़दम न रखेगा.'

'तो, कोई आशा है क्या ?'

'आशा की बात नहीं उठती, जिस तरह भी हो हक़ प्राप्त करना है. जनता में हड़तालियों के लिए अभी और सहानुभूति की ज़रूरत है.'

फिर तनिक ठहरकर कपूर ने कहा—'हाँ, तुमने हड़ताल कमेटी को कुछ चन्दा दिया ?'

'पन्द्रह दिन हुए एक रुपया दिया था.'

'एक रुपया और देना भाई ! जब तक हड़ताल है, कम से कम

दो रुपया महीना तो देना ही. मैं इसलिए कह रहा हूँ कि अमीरों के मुहल्ले में तुम्हारी दूकान है, तुम दो रुपये मज़दूरों को दे सकते हो.'

पानवाले ने झट से संदूकची खोली और एक रुपया निकाल कर कहा—'तो यह आप ही जमा करा दीजिएगा.'

'नहीं, हमारे दफ़्तर के आदमी रसीद-बुक लेकर आयेंगे, तब उन्हीं को दे देना.'

'जैसी आपकी आज्ञा !, पानवाले ने कहा, कपूर चलने को हुआ, तभी पानवाला बोला—'अरे सा'ब पान तो खा जाइये !'

'पान अभी नहीं खाऊँगा. इच्छा नहीं है.'

कपूर चलने लगा, तो पानवाले ने हाथ जोड़ कर नमस्ते किया.

कपूर सोच रहा था कि हड़ताल चल सकती है. जनता की सहानुभूति हड़तालियों के साथ है; फिर भी रुपये की काफ़ी ज़रूरत है. जनता से समय पर कम मिल पाता है. पिछले सप्ताह बम्बई और अहमदाबाद के मज़दूर यदि सहायता न भेजते, तो बड़ी विकट परिस्थिति का सामना करना पड़ता. वैसे अभी एक सप्ताह के लिए रुपया है. लेकिन एक सप्ताह के बाद क्या होगा ?

सामने एक इक्का खड़ा था, कपूर ने इक्केवाले से पूछा—'बंगाली मुहाल चलोगे ?'

इक्केवाले ने कोड़ा हाथ में उठा लिया, और झट से आगे खिसककर गद्दी को हाथ से साफ़ करते हुए कहा—'आइये.'

कपूर ने कहा—'लेकिन भाई, पैसे सिर्फ़ तीन ही बचे हैं.'

इक्केवाले ने उदास भाव से कपूर की ओर देखा, तब उसकी आँखें चमक उठीं, कहा—'कोई बात नहीं, आप आ जाइये.'

कपूर इक्के पर बैठ गया, फिर पूछा—'रोज़ कितने की मज़दूरी हो जाती है ?'

'हो जाती है सा'ब दो-ढाई रुपये रोज़ की.,

'घोड़े को क्या खिला देते हो?'

'यही कोई एक-डेढ़ रुपया रोज़.'

'तो तुम्हें आधे पैसे बचते हैं?'

'हाँ, पर कभी-कभी तो सरकार, कुछ भी नहीं मिलता.'

'तुमने हड़तालियों को कुछ चन्दा दिया?'

'अभी तक एक रुपया दिया है, आठ आने तो आज ही दिये थे और आठ आने कोई दस-बारह दिन हुए तब दिये थे.'

'इक्का तुम्हारा ही है?'

'जोतते हैं, सा'ब!'

'तो फिर तुम्हें क्या मिल पाता होगा?'

'मालिक भले आदमी हैं, सो घोड़े की खिलाई के सिवा कुछ नहीं लेते. तभी तो सरकार, गुज़र होती है.'

'तब तो भाई, तुमने हड़तालियों की बहुत मदद की।'

'हम उनकी मदद न करें भैया जी, तो फिर हमारे दिन भी कभी ऐसे आयेंगें, जब हमें मदद की ज़रूरत होगी, तब वे ही तो हमारे काम आयेंगे. अब वो बखत नहीं है कि अकेले काम चल जाए, सबको मिल बैठकर रहना पड़ेगा.' और वह मुस्करा दिया.

'ठीक है भाई, यह हड़ताल कामयाब हो गई, तो तुम लोगों को साँस लेने की जगह हो जायेगी. वरना पिसते ही रहोगे.'

'हम तो मालिक, जी-जान एक कर देंगे.'

परेड के मैदान में आकर इक्का एक ओर घूमा. तभी एक खद्दरधारी युवक ने हाथ उठा कर कपूर को आवाज़ दी. कपूर ने उधर देखा, तो इक्के से उतर पड़ा और तीनों पैसे इक्केवाले को देकर कहा—'तुम जाओ, हम यहीं रुकेंगे.'

इक्केवाला एक ओर बढ़ गया. कपूर ने उस युवक से कहा—'यहाँ कैसे खड़े हो दत्त?'

'तुम इक्कों पर जाने कहाँ-कहाँ की सैर करो और हम यहाँ धूप में खड़े-खड़े तुम्हारा काम करें, तो भी तुम रश्क करो.' दत्त ने बिखरे बालों पर एक बार हाथ फेरकर कहा.

'मैं तो रस्तोगी के यहाँ गया था. इस लू में बेहद थक गया हूँ, सो इक्के पर बैठ गया था. बेचारे को तीन ही पैसे दे सका.' कपूर ने दत्त का हाथ पकड़ कर कहा.

कपूर का स्पर्श होते ही दत्त चौंक पड़ा, फिर उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बोला—'तुम्हारा बदन तो तप रहा है. शायद लू लग गई है.'

'बदन कुछ टूट-सा तो रहा है.'

'तो फिर घर चलो.'

'मुझे विजय के यहाँ पहुँचा दो. पैसे न हों तो इक्केवाले को वहीं दे देंगे.'

दत्त ने एक ताँगा किया और कपूर को सहारा देकर बैठाया. ताँगा जब चलने लगा, तो दत्त ने पूछा—'रस्तोगी के यहाँ क्या बात हुई?'

'वे चाहते हैं कि सम्मानपूर्ण समझौता हो जाये?' कपूर ने सूखे ओठों पर जीभ फेरते हुये कहा.

'लेकिन उन्हें हमारी शर्तें स्वीकार होंगी?'

'शर्तों में कुछ सुधार चाहते हैं.'

'इसके मानी यह हैं कि हम लोग फिर दब जायें?'

'नहीं, वे चाहते हैं कि उनका भी ख़याल किया जाये!'

'तो मज़दूरों की जीत है?'

'हाँ.'

ताँगा मोड़ घूम चुका था.

४

जिस समय दत्त का सहारा लेकर कपूर विजय के कमरे में दाख़िल हुआ, उस समय उसका शरीर आग की तरह गर्म था. चार बज चुके थे और कार्यकारिणी के सभी सदस्य वहाँ उपस्थित थे. विजय ने खड़े होकर कपूर को सहारा दिया और मसनद के सामने उसे बैठा कर ख़ुद भी वहीं बैठ गया. दत्त सामने बैठा था.

सभी लोग कपूर की प्रतीक्षा में थे, क्योंकि उसकी अनुपस्थिति में कार्य आरम्भ नहीं किया जा सकता था. लेकिन उसे इस अवस्था में आया देख सभी को आश्चर्य हुआ और चिन्ता भी हुई. वाजपेयी उसके पास खिसक आया और गर्म हाथ को छूकर बोला—'इन्हें बुख़ार आ गया है.'

विजय ने सहानुभूति से कपूर की ओर देखा, कहा—'क्या हुआ ?'

कपूर ने हाथों को सीधा करके आँखें खोलीं, कहा—'बदन टूट रहा है विजय !'

विजय ने दत्त की ओर देख कर कहा—'भाई, किसी डाक्टर को बुला लाओ जल्दी से !'

कपूर ने हाथ से निर्देश करके कहा—'नहीं, डाक्टर को न लाना, मैं ठीक हो जाऊँगा.'

दत्त न उठा, तो विजय बोला—'तुम जाओ भाई !'

दत्त चला गया, तो हरीश बोला—'कुछ सोडा वग़ैरह पिओगे ?'

'कच्चे आम का पना या पेड़े का शर्बत बनवा दो.' लोचन बोला.

विजय अन्दर गया और सेवक को कुछ निर्देश करके पुनः बाहर आकर बैठ गया.

वाजपेयी ने कपूर के माथे पर हाथ रख कर कहा—'तुम रस्तोगी के बँगले पर गये थे ?'

'हाँ.' कपूर धीरे से बोला.

'कोई नई बात ?' वाजपेयी ने कहा.

कपूर के कुछ कहने से पहले ही लोचन ने कहा—'इस समय चुप रहो, यार ! उसकी हालत तो देखो.'

कपूर ने कहा—'वे बातें अभी बताने की हैं. मेरी तबीअत का ख़याल न करो. उन बातों पर कल की हड़ताल का चलना मुनहसिर है.'

सब लोगों का ध्यान कपूर की ओर आकर्षित हुआ, तो वह ज़रा पाँव फैला कर, सीधा लेटते हुए बोला—'वे लोग हमारी सभी शर्तें मानने को तैयार हैं, लेकिन कहते हैं कि कुछ सुधार हो जायें तो अच्छा है.'

वाजपेयी बोला—'लेकिन शर्तों में कमी नहीं हो सकती ! जब इतने दिन हमारे मज़दूर भाई भूखे रहे हैं, तो और सही. और जो फिर भी सुलह न हुई तो पूँजीपतियों की अहसान फ़रामोशी को कोसते हुये मर भी जायेंगे. उन्हें मौत से डर होता तो हम लोगों के कहने से आग में न कूदते; और जो कूद पड़े हैं, तो उन्हें इस बात का कोई ग़म भी नहीं है कि हम उनको अधिकार न दिला पायँगे और वे तड़प-तड़प कर मर जायेंगे.'

विजय ने वाजपेयी की बात का जवाब दिया—'अधीर क्यों होते हो ? हम अपने अधिकार ही तो चाहते हैं और उन्हें प्राप्त करने में थोड़ा झुकना पड़े, तो हर्ज़ ही क्या होगा !'

वाजपेयी ने कहा—'लेकिन जिस बात पर हम इतने दिन से डटे हुए हैं, उसे वापस नहीं ले सकते.'

विपिन चक्रवर्ती ने कहा—'अब तो हम पूरी शर्तें मनवा कर ही दम लेंगे.'

विजय ने कहा—'इसके यह अर्थ हुये कि शान्तिपूर्ण सुलह न की जाये ?'

वाजपेयी ने कहा—'सुलह शान्तिपूर्ण तो हो, लेकिन असम्मानपूर्ण भी न हो. जीत का सेहरा मज़दूरों के माथे पर न बँधा, तो सुलह न होगी.'

लोचन ने वाजपेयी से कहा—'यह विरोध ठीक नहीं है.'

वाजपेयी किंचित तेज़ स्वर में बोला—'तो मिल-मालिकों के आगे झुकना भी ठीक नहीं है.'

विजय कुछ कहने को हुआ कि एक गिलास में पेड़े का शर्बत लेकर नौकर आ गया. विजय ने गिलास लेकर कपूर के ओठों से लगा दिया. शर्बत पीकर कपूर ने मुँह पोंछा और लेटे-लेटे ही कहा—'तुम लोग तो ग़लत समझ रहे हो भाई ! वे तो तुम्हारी सभी शर्तें मानने को तैयार हैं, लेकिन यह चाहते हैं कि मज़दूर दया करके यदि शर्तों में कुछ सुधार कर दें, तो ठीक है.'

वाजपेयी ने कहा—'लेकिन हमारी ऐसी कोई भी शर्त नहीं है, जो ठीक की जा सके. हमने बहुत सोच-समझ कर काम किया है. हम लोग अब पीछे कैसे हट सकते हैं ?'

कपूर ने कहा—'चाहे तुम्हारा कहना ठीक ही हो; पर किसी शर्त में थोड़ा-बहुत परिवर्तन किया जा सके तो अच्छा हो. इससे उन लोगों से शर्तें स्वीकार कराने में आसानी होगी.'

वाजपेयी के कुछ कहने से पूर्व ही विजय ने कहा—'और भाई, अब तो समझौते की ज़रूरत आ ही गई है. इस तरह या तो मज़दूर मरेंगे, या फिर कोई भयानक से भयानक घटना होगी.'

वाजपेयी ने मुँह लटका कर कहा—'तो इसके यह मानी हुए कि हम अपने क़ौल के पक्के नहीं हैं.'

विजय ने कहा—'ऐसा न सोचो मेरे भाई. जब हम उनसे सभी शर्तें स्वीकार करा सकते हैं, तब अपनी ओर से दया करके कुछ सुधार कर दें, तो यह हमारी नैतिक विजय होगी. मुझे तो मज़दूरों की हालत पर रहम आता है ! रोज़ मौतें होती हैं, मज़दूर गिरफ़्तार होते हैं और हर वक़्त भारी से भारी ख़तरे का डर रहता है.'

चक्रवर्ती ने कहा—'यह तो ठीक है विजय बाबू ! अब तो सुलह कर ही लेनी चाहिए.'

वाजपेयी ने धीमे से कहा—'तो जैसा उचित समझो करो.'

कपूर बोला—'नाराज़ मत हो भाई ! हम परिस्थितिवश ऐसा कर रहे हैं, लेकिन फिर भी ऐसा काम न करेंगे जिससे मज़दूरों को रत्ती भर भी असुविधा हो, या उन्हें पूरे हक़ न मिलें.'

विजय ने कहा—'तो लोचन भाई, तुम एक पत्र उनके ऍसोसिएशन को, कपूर और रस्तोगी की बातचीत का हवाला दे कर लिखो कि वे किन शर्तों में क्या सुधार चाहते हैं ? यह भी लिख देना कि यदि वे संशोधन उचित हुए तो सुधार किये जा सकते हैं.'

कपूर बोला—'और भाई, यह ख़त अभी भिजवा देना और लिख देना कि हो सके तो जवाब अभी दे दें.'

विजय ने कहा—'तो फिर ख़त रस्तोगी के घर पर ही ले जाओ. ऍसोसिएशन के दफ़्तर में भेजने से जवाब में देर भी हो सकती है.'

'हाँ, यही ठीक रहेगा.' कपूर ने कहा.

जब लोचन बग़लवाले छोटे कमरे में चला गया, तब डाक्टर के साथ दत्त ने कमरे में प्रवेश किया. कपूर ने उनकी ओर देखा और तकिए के सहारे बैठ गया.

डाक्टर ने कपूर की परीक्षा की और नुस्ख़ा लिख कर कहा—'चिन्ता की कोई बात नहीं है. यह दवा मैं दे दूँगा, चार-छः ख़ुराक में ठीक हो जायेंगे.'

डाक्टर के साथ ही विजय और दत्त भी कमरे से बाहर चले गये.

विजय ने डाक्टर की ओर पाँच रुपये का एक नोट बढ़ाते हुए कहा—'दवा के दाम वहीं मिल जायेंगे.'

डाक्टर ने नोट लेकर धन्यवाद दिया. विजय ने दो रुपये और डाक्टर का लिखा हुआ नुस्ख़ा दत्त को देकर कहा—'ताँगेवाले को और दवा के लिये ये रुपये हैं, लेकिन आना जल्दी.'

फिर डाक्टर से हाथ मिलाकर वह अन्दर चला आया.

कपूर ने विजय के आते ही कहा—'पैसे अधिक न होने के कारण मुझे लू लग गई और होश तुम्हें अब आया. फ़ीस में इतने रुपये दे दिये, पर पहले मेरा ख़याल नहीं किया गया.'

मुस्करा कर विजय ने कहा—'तो पहले कहा क्यों नहीं था.' लेकिन अपनी बात पर विजय आप ही लज्जित हुआ. वह कपूर की आदत से परिचित है.

लोचन ने टाइप किया हुआ पत्र लाकर कपूर को दिया, उसने दस्तख़त कर दिये. फिर बोला—'किसे भेजूँ ?'

शंकर ने कहा—'लाओ, मैं अभी साईकिल पर चला जाऊँ.'

विजय ने कहा—'कहना कि जवाब अभी दे दें, तो अच्छा हो.'

शंकर पत्र लेकर बाहर चला गया.

५

जिस समय शंकर रस्तोगी के बँगले के सामने पहुँचा, उस समय बँगले के अन्दर की घड़ी से छः बजने की आवाज़ आ रही थी. खिड़कियाँ खुली हुई थीं और उन पर टँगे हुए गहरे हरे रंग के रेशमी परदों से छनकर आनेवाली रोशनी बाहर छिटक रही थी.

सदर दरवाज़े पर हाथ में बन्दूक लिये नैपाली दरवान खड़ा था. शंकर के पूछने पर उसने कहा—'सेठ साहब घर पर नहीं हैं.'

शंकर ने सोचा कि इस समय ऍसोसिएशन का दफ़्तर बन्द हो गया होगा और पत्र ज़रूरी है, इसलिए वह चिन्ता में पड़ गया. फिर उसे ख़याल आया कि श्रीमती रस्तोगी भी इन मामलों में काफ़ी दिलचस्पी ले रही हैं, वे रस्तोगी के रुख़ से परिचित भी होंगी, शायद उनसे कुछ सहायता मिल सके, सो उसने पूछा—'मालकिन तो होंगी?'

दरवान ने गम्भीर स्वर में कहा—'लेकिन उनसे आपको क्या काम है?'

शंकर ने नम्रता से कहा—'एक ज़रूरी ख़त है भाई, उसका जवाब अभी मिल जाना चाहिए, क्योंकि कल की हड़ताल का चलना या न चलना इसी ख़त के जवाब पर निर्भर करता है.'

दरवान शंकर की बात से, उसके व्यक्तित्व से और खद्दर के कपड़ों से प्रभावित हुआ, सो धीमे से बोला—'लेकिन मालकिन इस बारे में क्या करेंगी? आप ख़त दे जायें, साहब आयेंगे तो उन्हें दे दिया जायेगा.'

शंकर ने कहा—'यह ख़त बहुत ज़रूरी है. मालकिन इसका

जवाब नहीं दे सकतीं, तो कुछ राय ज़रूर दे सकती हैं और शायद तब तक साहब भी आ जायें.'

दरवान ने पोर्टिको में बैठे हुए चपरासी को बुलाकर शंकर का पत्र उसे दे दिया. शंकर ने चपरासी से कहा—'भाई, अपनी मालकिन से कहना कि हड़ताल-कमेटी का एक आदमी इसके उत्तर के लिये बाहर खड़ा है.'

चपरासी ने बीड़ी फेंक दी और ख़त लेकर अन्दर चला गया, तो दरवान ने शंकर से पूछा—'बाबू साहब, ये हड़ताल क्यों चला रहे हो ?'

'मज़दूर अपने हक़ चाहते हैं, भाई ! उनसे मेहनत बहुत ली जाती है, पर तनख़्वाह कम मिलती है, सो वे चाहते हैं कि उनके साथ न्याय किया जाय ! और सेठ लोग कहते हैं कि नहीं, तनख़्वाह नहीं बढ़ायेंगे, दस घण्टे काम लेंगे, छुट्टियाँ भी वही इनी-गिनी मिलेंगी. वे समझते हैं कि उनमें जान नहीं है. उन्हें भी मशीन समझ लिया है.'

'तो मालिक लोग मान नहीं रहे हैं ?'

'अब मान जायेंगे, ऐसा लगता है ; नहीं तो जो महीनों मिलें बन्द पड़ी रहेंगी, तो नुकसान न होगा ?'

'हमारे मालिक तो मान जायँगे साहब ! वे तो बहुत गौ आदमी हैं. अभी हमारे ही दो रुपये बढ़ाये हैं.'

'वे मान जायेंगे तो काम हो जायेगा.'

कुछ देर बाद चपरासी ने आकर शंकर से कहा—'आपको अन्दर बुलाया है.'

शंकर अपनी इस सफलता पर मन ही मन प्रसन्न हुआ, फिर साईकिल दरवान को सौंपकर चपरासी के आगे-आगे हो लिया.

शंकर ने ड्राइंग-रूम में पहुँचकर जो शानदार सामान और सजावट देखी, उसे देखकर वह स्तब्ध रह गया. उसने सोचा, जब तीन मिलों के मालिक की यह शान है, तो राजा लोगों की बात ही

और होगी। लेकिन जिन ग़रीबों की हड्डी के ऊपर इस वैभव की दीवारें खड़ी हैं उनकी इन अमीरों को कोई चिन्ता नहीं है.

चपरासी के बाहर जाने के बाद सामने के द्वार का परदा हटाकर एक युवती ने कमरे में पदार्पण किया. उसकी वेश-भूषा और सुन्दरता देखकर शंकर समझ गया कि वही युवती मिसेज़ रस्तोगी हैं. उसने खड़े होकर अमिता को अभिवादन किया.

अमिता ने कहा—'बैठिए.'

शंकर के बैठते ही वह भी बैठ गई. फिर शंकर का लाया हुआ, हड़ताल कमेटी का, पत्र पढ़कर कहा—'तो कपूर साहब ने क्या कहा था आप लोगों की मीटिंग में ?'

'अभी तो सब बातें ठीक-ठीक कह नहीं पाये हैं, लेकिन इतना कहा है कि सुलह हो सकती है.'

'सब बातें ठीक-ठीक क्यों नहीं कह पाये ?' अमिता ने मुस्कराने का प्रयत्न करते हुये कहा.

'बात यह है कि यहाँ से लौटते समय दोपहर को उन्हें तेज़ लू लग गई है और इस समय........'

शंकर की बात समाप्त होने से पहले ही चकित होकर अमिता बोली—'लू लग गई है ?'

शंकर ने संयत स्वर में कहा—'जी, और इस समय वे बुख़ार में तप रहे हैं.'

अमिता ने अपने मनोभाव छिपाने का प्रयत्न नहीं किया, कहा—'मैंने उनसे कहा था कि कार पर चले जायँ, पर माने ही नहीं. मुझे यह सुन कर बहुत दुख हुआ है.'

कुछ क्षण बाद ही उसने पूछा—'इस समय वे कहाँ हैं ?'

शंकर ने भावशून्य नेत्रों से अमिता की ओर देखकर कहा—'बंगाली मोहाल में, विजय बाबू के यहाँ.'

ज़रा रुक कर अमिता ने कहा—'तो आप लोगों ने क्या तय किया ?'

शंकर ने गम्भीरता से कहा—'यही कि मज़दूरों की शर्तें स्वीकार होते ही हड़ताल उठा ली जाये.'

'शर्तों में सुधार करने के लिए आप लोग तैयार हैं ?'

'आप किन शर्तों में सुधार की गुंजायश समझती हैं ?'

'जहाँ तक मैं जानती हूँ, हम लोग आपकी दो शर्तों में रद्दोबदल चाहते हैं, एक वेतन की और दूसरी समय की.'

'लेकिन सेठ साहब से जवाब अभी लेना था, ताकि उस पर विचार किया जा सके और कल के बारे में निश्चय हो सके.'

'वे तो इस समय कापड़ियाजी के यहाँ गये हुये हैं, क्योंकि वहाँ ऐसोसिएशन की बैठक हो रही हैं. फिर भी आप इन दो बातों के सम्बन्ध में, अपने यहाँ तय कर सकते हैं, क्योंकि विरोध की यही दो ख़ास शर्तें हैं."

'सेठ साहब कब तक आयेंगे ?'

'कुछ ठीक नहीं कहा जा सकता.'

शङ्कर ने उठते हुये कहा—'तो मैं वहीं जाऊँगा, क्योंकि समय बरबाद करना ठीक नहीं है. इस वक़्त एक-एक मिनट हज़ारों मज़दूरों के जीवन-मरण के प्रश्न को सुलझाने के लिये क़ीमती है.'

अमिता ने कुरसी से उठकर कहा—'कुछ चाय शरबत पीते जाइये.'

'नहीं, इस समय कष्ट न कीज़िये.' शंकर ने चलते हुये कहा.

अमिता ने उसे रोक कर पूछा—'कपूर की हालत कुछ ज़यादा ख़राब तो नहीं है ?'

शंकर ने कहा—'देखिये, रात को क्या हाल रहता है. अभी तो बदन जकड़ा-सा जा रहा था.'

'आप एक मिनट और रुक जायें, मैं उनके लिये एक पत्र देती हूँ ।' कह कर अमिता अन्दर चली गई.'

शंकर पाँच-छः मिनट तक उस बड़े कमरे में खड़ा रहा, तब अमिता ने एक छोटा-सा, नीले रंग का लिफ़ाफ़ा लाकर उसे दिया, कहा—"उनसे कहियेगा कि जब तक स्वस्थ न हो जायें, ज़्यादा दौड़-धूप न करें. और हड़ताल की चिन्ता से परेशान होना भी व्यर्थ है, क्योंकि उसके शीघ्र समाप्त होने की आशा है.'

'नमस्ते,' कहकर शंकर कमरे के बाहर आया, तभी मोटर का गम्भीर हॉर्न उसे सुनाई पड़ा.

अमिता ने द्वार में से झाँक कर शंकर से कहा—'आप अन्दर आ जाइये. वे आ गये हैं. बातें करके जाइयेगा.'

शंकर अन्दर आ गया. अमिता बोली—'वह पत्र किसी और को न दे दीजिएगा, और कपूर बाबू की ठीक देखभाल हो, ऐसा प्रबन्ध रखियेगा.'

शंकर और अमिता दोनों ही मेज़ के इधर-उधर पड़ी कई कुरसियों में से आमने-सामने की कुरसियों पर बैठ गये.

ज्योंही रस्तोगी ने कमरे में प्रवेश किया, शंकर उठ खड़ा हुआ. शंकर के अभिवादन का उत्तर देते हुये रस्तोगी पास आया, तभी अमिता ने कहा—'ये हड़ताल-कमेटी की ओर से एक ख़त लेकर आये हैं.' और अमिता ने पत्र उनकी ओर बढ़ा दिया.

रस्तोगी ने शीघ्रता से उसे पढ़ा, फिर शंकर से कहा—'आपको ख़ुशी होनी चाहिये कि हमने यह तय कर लिया है कि हड़ताल फ़ौरन समाप्त हो जाये. अभी हमारा आदमी आपके यहाँ इस सम्बन्ध का पत्र लेकर गया है.'

अमिता इस समाचार से प्रसन्न हुई. शंकर ने मुस्कराते हुये पूछा—'तो आपने हम लोगों की सब शर्तें स्वीकार कर ली हैं?'

'इस सम्बन्ध की तमाम बातें हमने आप लोगों पर छोड़ दी हैं. यदि आप चाहें तो कुछ सुधार कर दें, अन्यथा जो कहेंगे वही होगा.'

'मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ कि आप इस समस्या को सुलझाने में सफल हुए.'

'जो भी हो, लेकिन मुझे व्यक्तिगत रूप से अपना यह प्रस्ताव पास कराने में ऐसोसिएशन पर ज़ोर डालना पड़ा है. मैं चाहता था कि शान्तिपूर्ण सुलह हो जाय क्योंकि इस युग में किसी को अधिकारों से वंचित नहीं रखा जा सकता.'

'आप वास्तव में बधाई के पात्र हैं.'

रस्तोगी अमिता की ओर देखकर मुस्करा दिया !

'तो मुझे आज्ञा दीजिए, यह सुखद् सम्वाद शीघ्र ही अपने साथियों को सुनाने के लिए मैं बेचैन हो रहा हूँ.'

'लेकिन अब तक वे लोग यह जान चुके होंगे ; इसलिए आप कुछ नाश्ता करके जाइये.'

'इस समय नहीं, फिर कभी कष्ट दूँगा. मैं बेहद ख़ुश हूँ कि आख़िर आपने मज़दूरों पर दया की.'

'दया न कह कर यह कहें कि उन्हें, उनके अधिकारों से वंचित नहीं रहने दिया.'

हाथ जोड़कर शंकर ने कहा—'अच्छा, तो मैं चलता हूँ ; नमस्ते !' और रस्तोगी दम्पति के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही वह द्वार के बाहर हो गया.

६

सीढ़ी चढ़ते-चढ़ते रस्तोगी ने टोपी उतार कर अमिता को दी और शेरवानी के बटन खोलते हुए कहा—'मुझे बड़ी कोशिश करनी पड़ी अमिता, सभी लोग कह रहे थे कि मज़दूरों की शर्तें नहीं मानी जा सकतीं.'

शोखी से मुस्कराके अमिता बोली—'तो हड़ताल चलने क्यों नहीं दी ?'

ऊपर पहुँच कर रस्तोगी ने कहा—'इसके तीन कारण हैं. एक तुम्हारा कहना, दूसरा नुक़सान और तीसरी बात यह है कि मुझसे मज़दूरों का रोना, उनकी तकलीफ़ें अब नहीं देखी-सुनी जातीं. वे हक़ चाहते हैं. और उन्हें हक़ हासिल करना उचित भी तो है. हम यदि उनके हक़ उन्हें न देते, तो ठीक नहीं था.'

अमिता हँसकर बोली—'मुझे आपकी तीसरी बात पसन्द आई.'

रस्तोगी ने भी हँसकर कहा—'और मुझे पहली.'

अमिता ने पूछा—'क्यों ?'

रस्तोगी ने क्षण भर पत्नी की ओर देखा, फिर ज़ोर से हँस पड़ा, अमिता ने भी जी खोलकर उस हँसी में योग दिया.

शेरवानी एक ओर रखकर रस्तोगी ने कहा—'भूख लग रही है.'

अमिता ने शोखी से उनकी ओर देखकर कहा—'और मुझे भी तो लगी है.'

'तो यहीं खायेंगे.' कहकर रस्तोगी पास पड़ी कुरसी पर बैठ गए.

× × ×

रास्ते भर शंकर सोचता रहा कि अमिता ने कपूर के लिये जो पत्र दिया है, उसमें क्या लिखा होगा? कभी सोचता कि खोलकर पढ़ ले, फिर सोचता कि पढ़ना न चाहिए. यही सोचता-विचारता जिस समय वह विजय के मकान में दाखिल हुआ, उस समय वहाँ रोशनी तो थी, लेकिन सन्नाटा छाया हुआ था. जैसे सारा मकान सूना पड़ा हो.

कमरे में जाकर देखा कि अकेला कपूर लेटा हुआ है और नौकर तत्काल ही दवा पिलाकर अन्दर गया है. कपूर बीमार होते हुए भी प्रसन्न था.

शंकर ने पास बैठकर कहा—'तुम्हारी सफलता पर रश्क होता है कपूर!'

कपूर ने किंचित् मुस्करा कर कहा—'रश्क करना तो अच्छी चीज़ है, इससे आगे बढ़ने की इच्छा होती है.'

'और सब लोग कहाँ हैं?' शंकर ने पूछा.

कपूर ने कहा—'मज़दूरों की बस्तियों में गये हैं. उन्हीं के लिये तो यह सब हुआ है, इसलिये उन्हीं को सबसे पहले इस सफलता के समाचार से अवगत होना चाहिए.'

फिर शंकर ने अमिता का पत्र देते हुए कहा—'यह पत्र रस्तोगी की पत्नी ने दिया है.'

लिफ़ाफ़ा खोलकर कपूर ने पत्र पढ़ा और हँस पड़ा, फिर कहा—"उन्होंने लिखा है शंकर, कि मैं अपने स्वास्थ्य का पूरा ख़याल रखूँ. हड़ताल शीघ्र समाप्त होगी और कभी किसी भी तरह की आवश्यकता हो, तो निस्संकोच उन्हें याद करूँ. मेरा ख़याल है शंकर, कि उन्होंने आख़िरी वक़्त मज़ाक किया है.'

शंकर ने कहा—'मज़ाक नहीं यार, बहुत गम्भीरतापूर्वक लिखा है, और तुम्हारी बीमारी के समाचार से तो दुखी भी हुई थीं.'

'तो मुसीबत के किसी वक़्त मैं उन्हें याद कर लूँगा.' कपूर ने पत्र जेब में रखते हुए मुस्कराकर कहा.

'बुरा न मानो तो एक बात कहूँ कपूर !' शंकर ने कहा.

'कहो.' कपूर ने शंकर की ओर देखते हुए कहा.

शंकर संयत ढंग से बोला—'बात यह है कि बेचारे मज़दूरों ने इतने दिन भूख-प्यास से तड़प-तड़प कर हड़ताल को सफल बनाया है. ऐसे अवसर पर जब कि समझौता हो गया है, कम से कम उनके बच्चों को मिठाई तो खिलवा दो.'

कपूर कुछ क्षण बाद बोला—'बात सोलह आने ठीक है शंकर, लेकिन इतना रुपया नहीं है कि मज़दूरों को एक हफ़्ते के लिये खाने का प्रबन्ध करने के बाद मिठाई खिलाई जाये.'

'श्रीमती रस्तोगी को लिख दो न.'

'ये छोटी-छोटी बातें उनसे नहीं कह सकता.'

'मैं समझता हूँ कि ऐसा करने में उन्हें कोई एतराज़ न होगा. यह तो इस समझौते पर एक मुहर होगी.'

कुछ देर बाद शंकर ने पूछा—'चुप क्यों रह गए ?'

'अच्छा लिखूँगा. कल इतवार है, कल ही ठीक रहेगा. हम लोग और सभी मिल-मालिक भी उपस्थित हों तो और अच्छा रहेगा.'

'एक तरह से यह काम आवश्यक है. तुम कल सुबह पत्र लिख देना, मैं चला जाऊँगा.'

हँसते हुए कपूर बोला—'अच्छा, तो जनाब को भी वहाँ जाने का चस्का लग गया !'

'तुम्हारी चीज़ पर बुरी नज़र नहीं डालूँगा, यह याद रहे. अच्छा, मज़ाक छोड़ो, यह कहो कि किसी शर्त में संशोधन किया ?'

'हाँ, वेतन पन्द्रह प्रतिशत की जगह दस प्रतिशत बढ़ा दें और

काम दस घंटे की जगह आठ घण्टे कर दें. लेकिन बरख़्वास्त किये गये सभी मज़दूर हर हालत में लेने होंगे.'

'एक तरह से यह ठीक है.'

'सोचने की बात है कि वे इतना मान गये, तो हम भी कुछ झुक जायें.'

तब आठ बज चुके थे.

७

हड़ताल समाप्त हुए कई मास बीत चुके हैं. इस बीच कोई ख़ास बात नहीं हुई, जिससे मज़दूरों की हानि होती और कपूर को रस्तोगी दम्पति के सामने विरोधी की हैसियत से आना पड़ता.. फिर भी कपूर और रस्तोगी की घनिष्टता को देखकर मज़दूर-कमेटी के सदस्यों को इस बात का सन्देह हुआ कि सम्भवतः कपूर और रस्तोगी की घनिष्टता में कोई गहरा रहस्य है. उन लोगों ने समझा कि किसी लालच में आकर कपूर उनके साथ मिल गया है और अपने लक्ष्य से गिरा जा रहा है. लेकिन उनके इस सन्देह की पुष्टि इसलिये नहीं हो सकी कि मज़दूरों के सम्बन्ध में मिल-ओनर्स-ऍसोसियेशन ने कोई ऐसा क़दम नहीं उठाया, जिससे उन्हें किसी प्रकार की हानि होती. फिर भी अनेक तथ्यहीन-संदेहों के आधार पर मज़दूर-सभा के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की दो पार्टियाँ हो गईं.

विजय उन व्यक्तियों में से है, जो कपूर को सबसे अधिक अच्छी तरह पहिचान सकते हैं. उसने कपूर को बहुत पास से देखा और समझा है, उसके साथ जुटकर काम किया है. उसकी मस्ती में विजय ने जिस अपनेपन को देखा-समझा था, वह उसे बहुत आकर्षक प्रतीत हुआ. उसकी कार्यशैली, विद्वत्ता और उसका प्रभावशाली-व्यक्तित्व विजय के लिये आदर्श की चीज़ें हैं. उसने कपूर को जिस सचाई के साथ अपने सामने उपस्थित होते देखा, वह सचाई सदा उसके मन में कपूर के प्रतिबिम्ब की तरह तैरती रहती है.

कपूर ने विजय से अपने और अमिता के सम्बन्ध की बात भी

कही है. विजय ने यह जानकर आश्चर्य नहीं किया कि कपूर को अमिता से श्रद्धा-भक्ति, ममता मोह से भी कहीं अधिक प्रेम, सहानुभूति और अपनापन मिला है. वह अमिता को चाहता है और अमिता सौ जान से उसके प्रेम का प्रतिदान देने को तैयार रहती है. उसने उस समय कपूर की करुणा को बड़ी वेदना से देखा था. वह जानता है कि कपूर जिस परिवार का व्यक्ति है, उस परिवार के कपूर-जैसे सुशिक्षित लड़के के लिए अमिता जैसी अनेक युवतियाँ आसानी से प्राप्त हो सकती हैं. लेकिन कपूर ने अपना जीवन सार्वजनिक कार्यों के लिए लगा कर, विशाल सम्पत्ति को लात मार कर, जो त्याग किया है, उसके प्रति विजय के मन में बड़ी श्रद्धा है. वह देखता है, कपूर जैसा त्याग वह कभी न कर सकेगा. उसके पास धन है, जिसे छोड़कर वह खाली हाथ मैदान में आने से हिचकता है. सब कुछ होते हुए भी वह रुपये-पैसे का मोह नहीं छोड़ सकता, यही एक ऐसी कमज़ोरी विजय में है, जिसका स्मरण आने पर उसे ग्लानि होती है ; लेकिन जब उसका मन हाहाकार कर उठता है, तब वह सोचता है कि जिस धन का उसे मोह है, वह धन जिस कार्य के लिए व्यय हो रहा है, उस कार्य की सफलता ही सब से बड़ा त्याग है, जो उस धन के बिना नहीं किया जा सकता.

पिछले कुछ महीनों में विजय और कपूर की मुलाकातों की संख्या इतनी कम हो गई है कि एक-दूसरे की मित्रता में असन्तोष पैदा हो सकता है ; लेकिन विजय ऐसा है, जो कपूर के प्रति जीवन के नाज़ुक क्षणों में भी अविश्वास नहीं कर सकता, चाहे कपूर उसके साथ वास्तव में विश्वासघात ही क्यों न करे. कभी-कभी तो कपूर उसके पास महीने-महीने भर नहीं आता, रुपये की आवश्यकताएँ भी ज़ाहिर नहीं करता; लेकिन विजय जानता है कि काम के समय अथवा व्यक्तिगत आवश्यकता होने पर उसे जब भी कपूर की ज़रूरत होगी, वह आ जायेगा और

जान देने को तैयार होकर आयेगा. विजय का इतना बड़ा आत्म-विश्वास कपूर के प्रति क्यों है, इसका कारण आज तक कोई समझ नहीं सका. यहाँ तक कि विजय स्वयं भी नहीं समझा.

लगातार विरोध करने के बावजूद भी विजय परास्त-सा हो गया और संस्था के अधिकांश सदस्य कपूर के खिलाफ़ होकर शंकर के पक्ष में आ गये. इस तरह मज़दूर-आन्दोलन दो भागों में बँट गया, जिनमें से एक का सर्वेसर्वा था शंकर और दूसरे का विजय. विजय को आश्चर्य हुआ कि शंकर ने कपूर के विरुद्ध इतना प्रचार क्यों किया. जिस शंकर को वह भोला-भाला नवयुवक समझता था, वह इतना बड़ा कपटी होगा, यह उसने पहले न सोचा था. चाहे पार्टी के सब सदस्यों की हार्दिक-सहानुभूति और भक्ति कपूर के प्रति ही हो, लेकिन शंकर ने इस ढंग से उन्हें भड़काया था कि उनकी शुद्ध-भावनाओं के ऊपर ही शंकर के शब्द तैरते थे, जिनमें कपूर के व्यक्तित्व पर ही नहीं, उसके कार्यों के प्रति भी शर्मनाक-लांछन थे.

विजय या कपूर, पार्टी-मैम्बर्स के सामने, शंकर का रहस्य इसलिये नहीं खोलते थे कि शंकर जैसा कार्यकर्त्ता मज़दूरों के हाथ से निकल जायगा, जो मज़दूर-आन्दोलन के अहित का कारण बन सकता था. कपूर की ही तरह विजय भी इस बात से अनभिज्ञ न था कि अमिता से प्रेम की भिक्षा चाहने वाला शंकर किस बुरी तरह अमिता द्वारा फट-कारा गया था और किस ईर्ष्या के कारण वह कपूर का खुले-आम विरोध करने पर उतारू हो गया था.

कपूर और विजय जानते हैं कि असलियत खुलते ही शंकर लज्जा और संकोच के कारण बीच से हट जायगा और उसके हट जाने का अर्थ है मज़दूरों की जाग्रति का अन्त ! इसीलिए पार्टी-मेम्बर्स के हर प्रकार के आघात कपूर और विजय ने शान्त होकर सहन कर लिये.

८

उस दिन दोपहर को अकस्मात् कपूर ने यह समाचार सुना कि शंकर मज़दूरों की एक सभा में उसके विरुद्ध एक प्रस्ताव पास कराने जा रहा है. कपूर कभी पद-प्राप्ति के लिए संघर्ष में पड़ना उचित नहीं समझता. वह काम करना जानता है और काम करने में दिन-रात खाना-पीना, सब कुछ, यहाँ तक कि अपने आपको भी भूल जाता है. उसमें कार्य करने की लगन है और केवल इसी विशेषण के कारण मज़दूर और युवक-समाज उसे आदर की दृष्टि से देखता है.

शंकर का ख़याल होगा कि अमिता ने उसका अपमान कपूर के ही कारण किया है, इसलिये कपूर के कार्यों पर परदा डालकर वह सामने आ रहा है कि कपूर नष्ट हो जाये और वह अपने अपमान का बदला चुका सके !

कपूर को आश्चर्य और दुख इस बात का हुआ कि शंकर जैसा कार्यकर्त्ता उससे ईर्ष्या कर रहा है, केवल एक नारी के बीच में आ जाने के कारण ! शुद्ध-हृदय से जुट कर काम करने वाला शङ्कर केवल इस बिना पर कि अमिता उसे प्यार नहीं करती, कपूर के प्रति घोर नीचता का व्यवहार करेगा, यह कपूर ने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था. लेकिन पदों के लिए कभी प्रयत्न न करने वाला कपूर आज, शङ्कर की इस नीचता से, खीझ उठा. उसने सोचा कि जिस स्थान पर खड़े होकर उसने मज़दूरों के हक़ हासिल करने में जी-जान से कोशिश की, उस पर एक अन्य व्यक्ति केवल ईर्ष्यावश अपना अधिकार जमाले, यह कभी न्यायोचित नहीं हो सकता. जनता जिसे चुने वही जनता का

प्रतिनिधि हैं. प्रचार के बल पर अनधिकार चेष्टा करने से जो पद प्राप्त हों, उन पर रहकर जनता के लाभ का कार्य करना सम्भव नहीं. इस तरह के व्यक्ति तो सदा इसी विचार में लगे रहेंगे कि किसी तरह भविष्य में भी वे उसी पद पर आसीन रह सकें. काम करने के नाम वे कुछ न करेंगे.

आज उसे लग रहा है कि उसके जीवन की तपस्या नष्ट हुई जा रही है. और शङ्कर की इच्छा है कि उस तपस्या के साथ ही कपूर भी नष्ट हो जाए. लेकिन आज कपूर पहली बार यह अनुभव कर रहा है कि वह जहाँ है, वहाँ से एक क़दम भी पीछे हटना नहीं चाहता. वह जिस सेवा-भाव को लेकर कार्य-क्षेत्र में आया है, उसको वह छोड़ना नहीं चाहता, चाहे अब भले ही कोई उसे पद-लोलुपता का शिकार समझे.

उस समय तीन बज रहे थे और मज़दूरों की सभा में उसे पाँच बजे अवश्य पहुँच जाना है. आज वह अपनी क़िस्मत की परीक्षा करेगा; वह देखेगा कि उसके व्यक्तित्व में कितनी शक्ति है और जो कार्य आज तक उसने किये हैं, उनके प्रति मज़दूरों में कितनी श्रद्धा है!

उसने सिगरेट जलाया और कमरे का ताला बन्द करके सड़क पर आ गया.

पहले उसने विजय के पास जाने की बात सोची, लेकिन फिर अमिता के यहाँ जाने का निश्चय कर उधर ही बढ़ा. इस समय वह अपने विचारों को पकड़ने में असमर्थ था, क्योंकि विचार इतनी शीघ्रता से आ रहे थे कि वह उत्तेजित हो उठा था. वह सोच रहा था कि उसके प्रभाव से रस्तोगी महाशय आज राजनीति के मैदान में खुले आम उतर पड़े हैं और कांग्रेस को पूरा सहयोग दे रहे हैं. मज़दूरों के प्रति उनमें इतनी गहरी सहानुभूति जाग उठी है कि उनकी एॅसोसिएशन उन पर विश्वास तक नहीं करती. लेकिन इतना काम होने पर भी शङ्कर

आदि उससे द्वेष मानने लगे हैं और उसे नष्ट करने पर आमादा हैं. लेकिन वह अपने निश्चय पर दृढ़ है और ऐसे अनेक प्रहारों को सहने की शक्ति वह अपने में पा रहा है. वह आज उस चट्टान की तरह खड़ा है, जिससे टकरा कर लहरें नष्ट हो जाती हैं, लेकिन चट्टान का तनिक भी अहित नहीं होता. वह अपने जीवन में जिस आग को लेकर आगे बढ़ा है, वह आग कभी बुझ नहीं सकती. जो उसे बुझाने का प्रयत्न करेंगे वे स्वयम् उसमें आकर जल जायेंगे.

और शंकर ने आज अपना सर उठाया है उसके विरोधी की हैसियत से, तो कपूर नहीं चाहता कि उसके चलाए हुए काम में उसके बाद ऐसे स्वार्थियों का प्रभुत्व स्थापित हो सके. उसके मन में आज शंकर की कारगुज़ारियों से प्रतिहिंसा के भाव फूट रहे हैं. वह शंकर की कार्य-शक्ति को रोकने के लिये बेचैन हो रहा है. वह शंकर और उसके साथियों को कुचल देना चाहता है, क्योंकि उसके सामने अन्य कोई लक्ष्य नहीं रह गया है. वह कहना चाहता है कि जो काम करे, उसको ही उस काम का श्रेय मिलना चाहिए, अन्य कोई भी उसका अधिकारी नहीं है.

आज तक उसने शंकर के प्रति उदासीन रहकर केवल उसके उचित कार्यों को ही सामने रखा था ; लेकिन अब जबकि शंकर इतना आगे बढ़ रहा है, तब वह उसके अनुचित कार्यों की व्याख्या करने बैठा है और उसे आगाह कर देना चाहता है कि उसके इरादे नष्ट कर दिये जायेंगे. उसके हृदय में शंकर के प्रति इतनी अधिक घृणा भर गई है कि शुभ, अशुभ का ध्यान उसे क़तई नहीं रहा है. वह केवल इतना ही चाहता है कि शंकर को किसी तरह परास्त करके पार्टी को और मज़दूरों को असलियत समझा दे, अन्यथा आगे चल कर शंकर का कार्य मज़दूरों के अहित का कारण बन सकता है; और कपूर नहीं चाहता कि जिस कार्य में उसने अपना जीवन लगा दिया है,

वह कार्य कुछ अवसरवादियों के कारण ग़लत-राह पर मुड़ कर भविष्य के लिये अनिष्टकारी साबित हो.

फिर उसे अपने प्रति बड़ा अविश्वास होने लगा, उसने सोचा कि गत अनेक दिनों से वह मज़दूरों के आगे से हट गया है और उसके कार्य का तारतम्य एक प्रकार से टूट गया है. हालाँकि कोई ऐसा अवसर नहीं आया, जब मज़दूरों को उसकी आवश्यकता पड़ी हो. लेकिन उसकी ग़ैरहाज़िरी से मज़दूरों के बीच शंकर ने इतना लाभ तो अवश्य ही उठाया कि उनके संसर्ग में आकर उसके प्रति दूषित-प्रचार करके मज़दूरों के मन से उसे गिरा दिया. लेकिन वह इन सब का दोष अमिता को देता है. वह सोचता है कि यदि अमिता उसके जीवन में न आई होती, तो उसका कार्य आज इतना अधिक बढ़ जाता कि उसे दम मारने की फ़ुरसत न मिलती और मज़दूर-आन्दोलन आज अपनी इन्क़िलाबी सीमा को पार कर चुका होता.

६

जिस समय कपूर रस्तोगी के बँगले से यह मालूम करके वापस लौटा कि अमिता मज़दूरों की मीटिंग में गई है और रस्तोगी मिल के काम से दिल्ली गये हुए हैं, उस समय चार बज चुके थे. कपूर चुपचाप फ़ुटपाथ पर धीरे धीरे चला जा रहा था.

कभी-कभी उसके मन में आता कि सभा में जाकर क्या करेगा! यदि शंकर ही मज़दूरों को 'लीड' कर सकता है, करना चाहता है, तो करे. उसे इन झगड़ों से क्या लाभ? अगर मज़दूर-समाज को अब उसकी सेवाओं की दरकार नहीं है, तो वह जान-बूझ कर इस पचड़े में क्यों पड़े? और अगर शंकर के कामों में उसकी मौजूदगी से कोई बाधा उपस्थित होती है, तो वह शहर छोड़ दे, कहीं और चला जाये. न हो तो घर ही वापस लौट जाये और पिता से कह-सुन कर कोई व्यापार ही कर ले. किसी तरह ज़िन्दगी तो बितानी ही है. जब वह समर्थ माता-पिता की सन्तान है, तो यों मारे-मारे फिरना भला नहीं लगता—और सो भी तब, जब कि बेकार ही वह एक ज़बरदस्त संघर्ष में डाल दिया जाये और उस पर नाजायज़ इलज़ाम लगाये जायें. फिर वह सोचता कि ऐसे कामों में यह तो होता ही है, संघर्ष के बिना उन्नति नहीं है. किसी भलाई के काम में हर क़दम पर शत्रुओं से मुक़ाबला करना ही पड़ता है. फिर वह अपनी ज़िम्मेदारियों से कैसे मुँह मोड़ ले.

दूसरी कठिन समस्या उसके सामने यह है कि जब शंकर उसके खिलाफ़ कुछ कहेगा और वह अपनी सफ़ाई देगा, तब लोग समझेंगे कि वह तानाशाही चाहता है. लेकिन सफ़ाई देना तो उसका कर्त्तव्य

है, अन्यथा उसका कार्यक्षेत्र सैकड़ों ग़लत-फ़हमियों से भर जायेगा और फिर वह आगे न बढ़ सकेगा. उसका जीवन उसी क्षण समाप्त हो जायेगा. फिर भी यह तो हर हालत में आवश्यक था कि वह अपनी राह साफ़ करे. किसी तरह भी हो, वह उस सँकरी राह से बाहर निकलेगा, जिसमें वह ज़बरदस्ती डाल दिया गया है.

जब कपूर परेड के मैदान में पहुँचा, उसने देखा कि हज़ारों मज़दूर वहाँ जमा हैं और मंच पर खड़ा हुआ शंकर उन्हें समझा-समझा कर संयत भाषा में कपूर के विरुद्ध बहका रहा है. कपूर की ओर किसी का ध्यान न था, वह चुपचाप एक किनारे पर खड़ा था.

शंकर की आवाज़ चारों ओर गूँज रही थी, वह कह रहा था—'ऐसी हालत में भाइयों, तुम्हारा फ़र्ज़ है कि तुम अपना ऐसा नेता चुनो, जो तुम्हारी भलाइयों की ओर ध्यान दे. तुम्हारे हक़ों की ख़ातिर तुम्हारे बनाये हुए क़ानूनों को न तोड़े. जिस तरह कि कपूर साहब ने मिल-मालिकों से मिलकर अपनी जेबें भरीं और तुम्हारे लिये, जो कुछ उन्हें करना चाहिए था, वह न किया.'

एक बार मज़दूरों की विशाल-भीड़ के बीच हलकी चहल-पहल और शोर हुआ. तब एक आवाज़ सुनाई पड़ी—'हम लोग आपको अपना नेता बनाते हैं.'

फिर ज़ोरों से हुल्लड़ मच गया और चारों ओर से आवाज़ें आईं—'हाँ, आपही हमारे नेता हैं.'

जब थोड़ी शान्ति हुई, तब शंकर ने कहा—'मैं इसके लिये आप लोगों को धन्यवाद देता हूँ कि आपने मेरे काम देखकर मुझे अपनी सेवाओं का भार सौंपा है. एक बार मैं फिर आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप अपने बारे में और मेरे बारे में पूरी तरह सोच-समझकर निर्णय कीजिये कि आया मैं आपकी सेवा करने में कामयाब हो सकूँगा

था नहीं. वैसे मैं आप लोगों को यह यक़ीन दिलाता हूँ कि मेरा जीवन आप लोगों की सेवा के लिये अर्पित है.'

चारों ओर से आवाज़ आई--'आप हमारे नेता हैं. आपको हम अपना नेता चुनते हैं.' फिर ज़ोर का हुल्लड़ मचा और--'कामरेड शंकर, ज़िन्दाबाद!' के नारे परेड के मैदान में गूँजने लगे.

कपूर यह सब देख-सुन रहा था. उसने एक बार सोचा कि वह तुरन्त वहाँ से लौट जाये और आत्मघात कर ले, लेकिन उसकी उत्तेजना एकबारगी मुड़ गई और वह भागता हुआ मंच पर जा पहुँचा. मज़दूरों की विशाल भीड़ उसे शान्त भाव से देखती रही. बात की बात में उस मैदान में सन्नाटा छा गया. पहले जब कभी कपूर मज़दूरों की सभा में बोलने के लिये आता था, तो उसके जय-जयकार से आकाश गूँज उठता था, लेकिन आज किसी ने न उसका पक्ष लिया, न विरोध किया. आज लोगों ने न उसके प्रति आदर के भाव व्यक्त किए और न घृणा के. आज तो सब लोग चुपचाप शान्त-चित्त बैठे हुये थे, मानो कुछ अनहोनी होने को है, जो आज होने के बाद फिर कभी न होगी.

माइक्रोफ़ोन हाथ में लेकर उत्तेजित कपूर ने कहा--'भाइयों, मुझे अफ़सोस है कि........'

कपूर आगे कुछ कहने को ही था कि चुप हो गया, भीड़ की ओर पलभर ग़ौर से देखता रहा. फिर उसने एक छोर पर खड़ी अमिता की कार देखी और उसकी आँखें उस कार में बैठी हुई नारी की आँखों से जा टकराई. पता नहीं, उसने उन आँखों की तरलता देख पाई या नहीं.

अपने को सँभाल कर कपूर ने फिर कहा--'मेरे प्यारे भाइयों, आप लोगों ने अपने नये नेता को चुना है, यह जानकर मैं बहुत खुश हूँ. मुझे उम्मीद है कामरेड शंकर आप लोगों की भलाई के लिए कुछ उठा न रक्खेंगे. मैंने उन्हें बहुत नज़दीक से देखा है और मैं जानता हूँ कि आप लोगों के बीच में उनसा ज़िन्दा-दिल आदमी दूसरा कोई

नहीं है. जिस तरह आप लोग मुझे हर प्रकार का सहयोग देते रहे हैं; उसी तरह उन्हें भी आप लोगों का पूरा सहयोग मिलेगा, इसकी मुझे पूरी आशा है.'

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच जब कपूर मंच से उतरा और बिना किसी ओर देखे हुये शीघ्रता से एक ओर बढ़ा, तब कार में बैठी हुई अमिता की आँखों ने देखा कि कपूर ने अपनी उदास आँखों से बहते हुये आँसू शीघ्रता से पोंछ लिये हैं.

भीड़ एक बार ज़ोर से चीख़ उठी—'कॉमरेड कपूर की जय हो! वे ही हमारे नेता हैं.'

लोचन ने तब माइक्रोफ़ोन पर अपनी प्रभावशाली वाणी में कहा—'भाइयों, जब कॉमरेड कपूर ने कॉमरेड शंकर को अपना काम सौंप दिया है, तब हम उन्हें फ़िलहाल इसके लिये बाध्य नहीं कर सकते कि इस काम को वे सँभालें. बात यह है कि वे खुद भी काम नहीं कर सकते, इसीलिये उन्होंने जान-बूझ कर कॉमरेड शंकर को अपनी जगह नामज़द किया है.'

कपूर मैदान से काफ़ी दूर निकल गया था कि उसने देखा, पीछे से विजय और सौ डेढ़-सौ मज़दूर उसकी ओर चले आ रहे हैं. वह बेहद परेशान था, इसलिये उसने तुरन्त अपना रास्ता छोड़ दिया और मोड़ से घूमकर उस ओर चला, जिधर अमिता की कार खड़ी थी. उसने देखा कि कार पास आ गई है और अमिता खिड़की से सर निकाल कर कह रही है—'आइये.'

कपूर शीघ्र ही कार में बैठ गया. तब उसे सुनाई दिया. माईक्रोफ़ोन की आवाज़ लाऊड-स्पीकर में गूँज रही थी—'अब हम आप लोगों को अपना कार्यक्रम बता दें.'

कार चलने को ही थी कि कपूर ने ड्राइवर से कहा—'ज़रा ठहरो.'

एञ्जिन की आवाज़ रुक गई. लाऊड-स्पीकर में आवाज़ गूँजने

लगा—'आप लोगों को अपने पूरे हक़ हासिल करने के लिये फिर से हड़ताल करनी होगी. अभी जो कुछ आपको दिया गया है, वह सिर्फ़ धोखा है. अब आपको पूरे हक़ हासिल करने के लिये अपना ज़ोरदार क़दम उठाना पड़ेगा !'

कपूर ने ड्राइवर से कहा—'बढ़ाओ.'

कार आगे बढ़ी तो कपूर ने बग़ल में बैठी हुई अमिता से कहा—'यह मज़दूरों की घोर पराजय का ऐलान है.'

१०

चाय पीते-पीते अमिता ने कपूर से कहा—'उन्हें बाध्य किया गया था कि वे ऍसोसिएशन से इस्तीफ़ा दे दें.'

कपूर ने कहा—'क्यों ?'

'इसलिए कि,' अमिता बोली, 'वर्किंग-कमेटी के सदस्यों को यह शक था कि वे आप लोगों से मिल गये हैं और उन्हें इस बात की क़तई परवाह नहीं रही है कि कौन-सा काम मिल-ओनर्स के लिये लाभकर होगा और कौन-सा हानिकर. मैं तो कहती हूँ कि जैसा व्यवहार आज आपके साथ किया गया है, वैसा ही उनके साथ भी किया गया होगा.'

'हो सकता है.'

'उनके विरोधियों की संख्या भी कम नहीं है. वे अभी तक जिस साहस से काम करते आए हैं, कोई दूसरा होता तो कभी का अलग कर दिया गया होता.'

'लेकिन अमिता, मैं देखता हूँ कि मिल-ओनर्स-ऍसोसिएशन ने जिस तरह एक 'सीनियर वर्कर' को खो दिया है, उसी तरह शान्ति से काम करने वाले कपूर को भी मज़दूरों ने अपने साथ से अलग कर दिया है. और अब निश्चय ही मज़दूरों और मिल-मालिकों का संघर्ष पुनः भयंकर रूप से शुरू हो जायेगा.'

'और वह भी ऐसा, जिसे कोई शान्त न कर सकेगा.' अमिता ने उत्तेजित हो कर कहा.

कपूर ने प्याले की बाक़ी चाय पीकर कहा—'बिलकुल सही है. तुम देखोगी कि कानपुर के मिल-मालिक और मज़दूर अब ऐसे अँधेरे

रास्ते से गुज़रेंगे, जिस पर रोशनी न हो सकेगी. आज जो ऐलान मज़दूरों के नये सिरमौर कर चुके हैं, वह इस भावी-विद्रोह की चिनगारी है. इसी तरह मिल-मालिकों ने जिस तरह मिस्टर रस्तोगी से त्यागपत्र दिलवाया, उससे ज्ञात होता है कि मिल-मालिकों की ओर से पहले ही दमन की चेतावनी दे दी गई है. यह बड़ा अच्छा हुआ कि मज़दूरों ने अपनी सेवाओं से मुझे मुक्त कर दिया और मिल ओनर्स एसोसिएशन ने मिस्टर रस्तोगी के हक़ छीन लिये.'

'अब देखना यह है कि होता क्या है ?' अमिता ने कहा, 'मुझे तो शक है कि मज़दूर दाने-दाने के लिए तरसेंगे और मिलों में ताले पड़ जायेंगे.'

मुस्करा कर कपूर बोला—'और मैं भविष्यवाणी किये देता हूँ कि एक ही सप्ताह के अन्दर बहुत बड़ी तब्दीलियाँ मिल-एरिया में हो जायेंगी और मुझे तो विश्वास है कि सैकड़ों मज़दूर नये आन्दोलन में पड़कर गोलियों के शिकार होंगे.'

अमिता ने धीरे से अँगड़ाई लेकर कहा—'जो होना है वह तो होगा ही. अब तो दोनों ओर एक भी ऐसा आदमी नहीं, जो इस हंगामे को दबा सके.'

कपूर ने मुस्करा कर कहा—'यह भी देखना ही होगा. ख़ैर, अब मैं चलूँ.'

अमिता ने कहा—'आज यहीं रह जाओ. वे भी तो नहीं हैं. मैं रात को अकेली कैसे रहूँगी ?'

कपूर ज़ोर से हँस पड़ा, बोला—'वाह, यह कैसे हो सकता है ?'

अमिता धीरे से बोली—'हो कैसे नहीं सकता ? मैंने कभी तुमसे कुछ कहा है क्या ? आज कह रही हूँ, सो तुम तिरस्कार किए जा रहे हो.'

'अगर रह भी जाऊँ, तो लाभ ही क्या ?'

'लाभ न सही, पर मुझे तुमसे बहुत से दूसरे विषयों पर बातें करनी हैं.'

'अगर यह बात है, तो लो मैं दो-चार घंटे बैठ सकता हूँ. शुरू करो बातें.'

'इस तरह की बातें नहीं हैं, जो यों जल्दी-जल्दी बक दी जायें. और अभी तो रोशनी भी जल रही है.'

कपूर कुछ रुका, फिर बोला—'तो लाइट बुझा दो.'

अमिता ने पलकें गिरा कर कहा—'नहीं जी, मुझे इस तरह बातें नहीं करनी मैं उस समय बातें करूँगी जब मेरी और तुम्हारी आँखों में नींद भरी होगी, और प्राणों पर स्वप्नों का उन्माद छाया हुआ होगा.'

कपूर ठहाकर हँस पड़ा; कहा—'तो तुम कविता भी करती हो.'

अमिता ने कहा—'जीवन की यथार्थता कविता तो है ही.'

'ख़ैर,' कपूर ने कहा, 'आज ये भी सही. देख लूँ कि काँपते हुये प्राणों को नारी का क्या सहारा मिल सकेगा.'

'तो तुम दार्शनिक भी हो.' ज़ोर से हँसने से पहले, मादक नेत्रों से कपूर की आँखों में देखकर अमिता बोली.

'अगर तुम कवियित्री हो सकती हो, तो मेरा दार्शनिक होना क्या आश्चर्य की बात है?' कपूर ने धीरे से कहा.

'नहीं, नहीं, यह तो स्वाभाविक है.' अमिता ने कहा.

कपूर ने कहा—'इसके अर्थ हुए, न तुम कवियित्री और न मैं दार्शनिक.'

हँसते हुए अमिता ने घण्टी पर अँगुली रक्खी, आर्डरली हाज़िर हुआ तो बोली—'शोफ़र से कहो कि गाड़ी पोर्टिको में लाये.'

सिर झुका कर वह चला गया.

कपूर ने अमिता की ओर देखकर कहा—'अब कहाँ जाओगी?'

'ज़रा सिनेमा चलेंगे.'

मुस्कराकर कपूर ने कहा—'अच्छा !'

× × ×

सिनेमा से लौटकर जब कपूर और अमिता ने एक साथ कमरे में प्रवेश किया, तब चारों ओर देखकर कपूर ने कहा—'पिक्चर में एक बात समझ से बाहर की थी.'

पलंग पर बैठकर अमिता ने पूछा—'क्या बात ?'

कपूर ने कहा—'नारी का आत्मसमर्पण. मैंने तो कभी सुना नहीं कि नारी पुरुष पर इतनी आसक्त हो सकती है कि स्वेच्छा से पुरुष के हाथों में अपने को सौंप दे.'

अमिता का चेहरा लाल हो गया; धीरे से बोली—'लेकिन यह अस्वाभाविक नहीं है, क्योंकि कोई-कोई पुरुष ऐसे होते हैं जो नारी के प्राणों का स्पन्दन सुन-समझ नहीं पाते. और ऐसे एक व्यक्ति को तो मैं भी जानती हूँ जो पत्थर से भी सख्त दिल रखता है.'

'वह कौन ?' आश्चर्य से अमिता की ओर देखकर कपूर ने कहा.

अमिता बोली—'मैं अगर कहूँ कि वह तुम्हीं हो, तो क्या जवाब दोगे ?'

ज़ोर से कपूर हँसा, फिर बोला—'झूठ है, असल में तुम मुझे समझ ही नहीं सकीं.,

अमिता चुप रही.

कुछ देर योंही बीती, कपूर ने सामनेवाले शानदार पलंग की ओर इशारा करके कहा—'इस पर कौन सोता है, मिस्टर रस्तोगी ?'

'हाँ.'

कपूर ने उस पलंग की ओर इशारा करके पूछा, जिस पर अमिता बैठी थी, कि और इस पर वह स्वयम् ?

'हाँ.'

'और मेरे सोने का प्रबन्ध किस कमरे में है? रात को जाड़ा पड़ता है, कहीं बाहर न लिटा देना.'

'जाड़े में गरमी की ज़रूरत होती है कपूर!' अमिता ने मुस्कराकर कहा—'और जब तक आदमी अकेला सोता है, गरमी नहीं आती. इसलिये तुम आज यहीं सोओगे.'

आश्चर्य से अमिता की ओर कपूर ने देखा, फिर ज़ोर से हँस पड़ा, बोला कुछ भी नहीं.

अमिता ने रोशनी बुझाकर कहा—'तुम नारी के आत्म-समर्पण की बात जानना चाहते हो?'

कपूर ने कहा—'नहीं.' फिर कहा—'हाँ, कुछ सोचता तो हूँ.'

[पैरोल पर

११

सुबह कपूर जागा, तो साढ़े आठ बजे थे. अमिता सामने पड़ी कुरसी पर बैठी किताब पढ़ रही थी.

कपूर पलंग पर उठ कर बैठ गया. अमिता ने चुप-चाप सिगरेट और माचिस उसकी ओर बढ़ा दी. दोनों में से कोई किसी की ओर नहीं देख रहा था. पर अमिता की झुकी पलकों के अन्दर चमकती हुई आँखों में, हलकी मुस्कराहट थी.

जब कपूर की सिगरेट समाप्त हो गई तो अमिता ने किताब की ही ओर देखते हुए कहा—'अब उठिए भी.'

कपूर ने उसकी ओर ऐसे देखा, जैसे कुछ हुआ ही नहीं और उठ कर खड़ा हो गया. फिर अमिता भी कुरसी से उठी और आगे-आगे जाकर बाथरूम वग़ैरह दिखा आई.

साढ़े नौ बजे दोनों चाय पीने बैठे. चाय पीते-पीते जैसे अमिता ने लज्जा की सीमा को पार कर लिया. जब वह मुस्कराकर कपूर की ओर देखने लगी तो कपूर ने कहा—'नारी के आत्म-समर्पण की बात मैंने जान ली अमिता, और अगर ख़ुशकिस्मती से कभी मैं लेखक बन सका, तो उसका वर्णन मुझसे सुन्दर कोई न कर सकेगा, यह मैं जानता हूँ. अतृप्त-मानव आज जवानी के बीच में खड़ा होने पर अनुभवी नारी द्वारा तृप्त हुआ है; यह मेरे लिए सन्तोष और सौभाग्य की बात ज़रूर है, लेकिन कुछ विशेष बात नहीं.'

अमिता मुस्कराई, लेकिन उसने कहा—'आज के अख़बार में बड़ी भयानक ख़बरें छपी हैं.'

'क्या ?' कपूर ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा.

'मज़दूरों के नए अधिकारी ऐलान कर रहे हैं कि मिल-मालिक उनकी बनाई हुई शर्तें अड़तालीस घण्टे में नहीं मानेंगे तो अविराम-हड़ताल शुरू होगी.'

'अख़बार देखूँ.'

अमिता ने ड्रॉअर से अख़बार निकालकर कपूर की ओर बढ़ा दिया. उसमें बहुत तरह की बातें प्रकाशित हुई थीं. जिस कपूर ने मज़दूरों की भलाई के लिए अपना जीवन लगा दिया, उसी कपूर को, उसी के सहकारी शंकर ने अपनी बेहूदा-चालबाज़ियों द्वारा इस तरह दूर हटा दिया है कि वह मज़दूरों का कोई न रहा. मज़दूरों के हृदय अब कपूर को कोई स्थान नहीं देना चाहते. इसी तरह, मिल-ओनर्स-ऍसोसिएशन ने, अमिता के स्वामी, रस्तोगी को भी उसकी ग़ैर हाज़िरी में अलग कर दिया. सम्पादकीय टिप्पणी में कहा गया था कि मज़दूरों ने कपूर को और मिल-मालिकों ने रस्तोगी को अपने बीच से अलग करके शान्ति को झकझोर डाला है. दोनों पार्टियाँ उग्रवादी हो गई हैं. मज़दूरों के नए सिरमौर मज़दूरों को पीसने के लिए जानबूझ कर मिल-मालिकों को निमंत्रित कर रहे हैं.

कपूर ने पूरा अख़बार नहीं पढ़ा, फिर उससे चाय भी नहीं पी गई. अमिता ने बहुत कहा, बहुत कोशिश की कि कपूर की परेशानी दूर हो, वह ठीक से बात करे; पर कपूर ने कुछ न कहा, कुछ न सुना. उसे इस बात का दुख न था कि वह मज़दूरों के बीच से हटा दिया गया है, वरन् वह देख रहा था कि जिन मज़दूरों के लिए उसे पूँजीपति मिल-मालिकों के दरवाज़ों पर जाना पड़ा, अमिता की मित्रता स्वीकार करनी पड़ी, अपने सिद्धान्तों को कुचलना पड़ा, अपने स्वास्थ्य की परवाह न की ; वही मज़दूर, जिनकी कपूर ने जी-जान एक करके सेवा की, अब गोलियों का शिकार होंगे. कपूर का दिल और दिमाग़

झनझनाने लगा. वह जानता है कि, अब उसके किए कुछ भी न होगा.

कपूर ने कहा—'रस्तोगी को तार दे दो अमिता ! उन्हें हर हालत में दिल्ली से फ़ौरन यहाँ आना होगा.'

अमिता बोली—'तार तो मैं दिए देती हूँ और वे आ भी फ़ौरन जायेंगे, लेकिन तुम अपने आपको तो सँभालो. जब मज़दूरों को तुम्हारी परवाह नहीं रही, तो तुम उनकी परवाह करके क्यों परेशान होते हो ?'

कपूर ने उत्तेजित होकर कहा—'तुम ग़लत सोचती हो अमिता ! मज़दूरों को मेरी परवाह है, लेकिन उनके नए हिमायती नहीं चाहते कि वे मेरी परवाह करें.'

अमिता चुपचाप बैठी रही, तो कपूर ने धीरे से कहा—'लेकिन मुसीबत यह है कि अब जो मैं मज़दूरों के बीच में जाता हूँ, तो शंकर वग़ैरह नए सिरे से यह साबित करने की कोशिश करेंगे कि मिल-मालिकों ने मेरी जेबें भरी हैं और मैं गुनाहगार हूँ.'

दो क्षण चुप रहकर कपूर ने फिर कहा—'मैं विजय के पास जा रहा हूँ, तुम गाड़ी के लिए ड्राइवर से कह दो ज़रा.' और वह कुरसी छोड़कर खड़ा हो गया.

'मैं भी चलूँ ?'

'नहीं. मैं वहाँ पहुँचते ही गाड़ी वापस कर दूँगा.' कहकर कपूर ने चप्पलों में पैर डालते हुए कुरता पहना, टोपी हाथ में ली और कमरे के द्वार पर जाते-जाते, रुककर, अमिता से कहा—'एक दिन तुमने मुझे लिखा था कि ज़रूरत के वक़्त मैं तुमसे हर तरह की सहायता पा सकता हूँ.'

''सहायता' शब्द कहकर तुम मुझे लज्जित न करो.'

'ख़ैर, मुझे कुछ रुपए चाहिए हैं.' कपूर ने कहा और कमरे में आकर फिर अपनी कुरसी पर बैठ गया.

अमिता बग़लवाले कमरे में गई और नोटों की कई गड्डियाँ ले आई.

शायद तीन हज़ार के नोट थे. कपूर ने गड्डियाँ उठाकर देखीं और कहा—'बस ?'

अमिता ने निर्विकार-भाव से चॅकबुक उठा ली और दस्तख़त करके कहा—'बैंक में मेरे नाम जो रुपया है, वह सब आप इस चैक से ले सकते हैं.'

कपूर ने अमिता की ओर देखकर कहा—'कितना रुपया है ?'

अमिता ने लज्जित होकर दूसरी ओर दृष्टि फेरते हुए कहा—'एक लाख, बासठ हज़ार.'

कपूर ज़ोर से हँस पड़ा. फिर चॅक लेकर फाड़ दिया और कहा—'अभी रुपया कम है. इतने से मेरा काम न चलेगा.'

अमिता आश्चर्य से देखती रही. कपूर ने नोटों की एक गड्डी उठा ली. ऊपर एक नोट पर 'पाँच सौ' लिखा था. दस रुपए वाले नोट थे.

कपूर जाने लगा तो अमिता ने कहा—'कब आओगे ?'

'कभी आऊँगा ही, क्योंकि मैं आदमी होने पर भी तुम्हारी सहानुभूति के विना जीवित नहीं रह सकता अमिता !' और कपूर ने अमिता की ओर ऐसे देखा जैसे बच्चा असहायावस्था में माँ की ओर देखने लगता है. अमिता नीचे उसे पहुँचाने गई, तो कपूर ने कार में बैठते हुए कहा—'रस्तोगी को तार अभी भेज देना.'

'अच्छा.'

'और देखो, मेरे लिए घबराना मत. मैं कोई ऐसा काम न करूँगा जो.........'

अमिता की आँखों में पानी देखा तो कपूर ने उसकी ओर से आँखें फेर लीं और ड्राइवर से कहा—'बढ़ाओ.'

अमिता वहीं, बहुत देर तक, खड़ी रही.

१२

'इनसे मिलो कपूर!' युवती की ओर इशारा करके विजय ने कहा—'इनका नाम शीला सरकार है. ये बंगाल में क्रान्तिकारी आन्दोलन का संगठन कर रही हैं.'

कपूर ने शीला से हाथ मिलाया और एक बार उसकी आँखों की ओर देखकर जाना कि उसमें दृढ़ता की कमी नहीं है.

विजय ने पैन्ट और क़मीज़ पहने हुए उस नौजवान की ओर देखा, जिसके बाल बिखरे हुए थे और जो पेशावरी चप्पल पहने हुए था—'यही हैं मिस्टर कपूर!'

उस युवक ने कपूर की ओर हाथ बढ़ाया. कपूर ने उससे भी हाथ मिलाया. कपूर को वह हाथ पत्थर की तरह सख़्त और फ़ौलाद की तरह मज़बूत मालूम हुआ.

विजय ने कपूर से कहा—'ये मिस्टर ज़मीर हैं. पंजाब में क्रान्तिकारियों का संगठन कर रहे हैं.'

कपूर ने एक बार शीला की ओर देखा, फिर ज़मीर की ओर देखते हुए कहा—'आप लोगों से मिलकर ख़ुशी हुई. यहाँ मेरे कुछ साथियों ने मेरा विरोध करना आरम्भ किया है. अच्छा हुआ जो आप लोगों से परिचय हो गया, अब नए सिरे से काम करने का मौका मिलेगा; फिर कहा—'आप लोग बैठिए!'

सब लोग उस बड़ी मेज़ के चारों ओर पड़ी कुरसियों पर बैठ गए, जिस पर फूलों का एक गुलदस्ता रखा था और सिगरेट का एक डिब्बा. विजय, कपूर और ज़मीर ने सिगरेटें उठाईं.

कपूर ने शीला से कहा—'हम लोग स्मोक कर सकते हैं ?'

शीला ने कहा—'मुझे कोई एतराज़ नहीं है.

कपूर ने सोचा कि बंगालिन होते हुए भी हिन्दुस्तानी का उच्चारण शीला शुद्ध कर सकती है. फिर उसने ज़मीर से कहा—'आप के बारे में दत्त से अक्सर बातें हुई हैं. दत्त से मिले आप ?'

ज़मीर ने कहा—'हाँ, उससे रात मिला था, और रुपए का इन्तज़ाम करके उसे उरई भेज दिया है.'

'उरई क्यों ?'

'सुना था, शेखर की माँ को रुपयों की ज़रूरत है !'

'अच्छा किया आपने. मैंने तो शेख़र की माँ को देखा नहीं है, पर देखने की इच्छा है.'

'वे तो बिल्कुल गाय की तरह भोली हैं. उन्होंने अपने नौजवान बेटे को मुल्क पर कुरबान हो जाने दिया और चेहरे पर एक लकीर न पड़ी. उनके दिल में बहुत ऊँचे ज़ज़बात हैं. हम लोगों को भी वे वैसी ही तालीम देती हैं.' ज़मीर ने कपूर से कहा, फिर शीला की ओर देखकर कहा—'आप मिली हैं उनसे ?'

'जी नहीं, मुझे यह सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ. कपूर साहब जाएँगे तो मैं भी साथ ही चली जाऊँगी !'

कुछ देर बाद कपूर ने कहा—'आप लोग अचानक आ कैसे गए ?'

ज़मीर ने कहा—'यहाँ का मज़दूर आन्दोलन ज़ोर पकड़ रहा था. हम लोगों को इसकी ख़बर मिली थी. लखनऊ में हमारे कुछ साथी हैं. अभी तक यू. पी. में हम लोगों का काम कुछ नहीं हो सका. हम चाहते हैं, यहाँ फ़ील्ड बने. आप जैसे ज़िन्दादिल साथी मज़दूरों के लिए काम करके अपनी ताक़त ज़ाया कर रहे हैं; हम चाहते हैं कि अभी मज़दूरों को छोड़िए, कुछ चुनिन्दा साथियों की एक टीम बनाइये. आप जानते हैं कि हमारा मुल्क ग़ुलाम है. मज़दूरों को मज़दूरी ज़्यादा दिलाने के

लिए हड़तालें कराने से ही, गुलामी दूर नहीं होगी. हमें अपने मुल्क के बच्चे-बच्चे के लिए काम करना है. मैदान खुला पड़ा है. उस मैदान में सुनने वाले और समझने वाले लोग—उन्हें कुछ समझा सकें, उनसे कुछ कह सकें—ऐसे लोगों का इन्तजार कर रहे हैं.'

शीला ने कहा—'हमारा प्रान्त इस ओर शीघ्रता से आगे बढ़ रहा है मिस्टर कपूर! हम लोग गुप्त-रूप से संगठन कर रहे हैं. वहाँ हमारी पार्टी में तीन सौ से ज़्यादा ऐसे सदस्य हैं जो प्राणों को हथेली पर लेकर काम करने को तैयार हैं. देश अहिंसा से स्वतंत्र न होगा.

कपूर ने टोका—'आप कैसे कहती हैं कि अहिंसा से देश स्वतंत्र न होगा?'

शीला ने कहा—'इस वक्त मैं बहस न करूँगी—संसार का इतिहास मेरी बात के पक्ष में है. हम लोगों की इच्छा है कि हम देश भर में ज़ोरदार संगठन करके क्रांति का ऐलान करें. सन् सत्तावन जैसी ग़लती हम इसबार नहीं देखना चाहते. हमारी ओर शस्त्रों का निर्माण गुप्त रूप से हो रहा है. यू. पी. देश का सेन्टर है; यहाँ के लोग हमारी सफलता में हिस्सा बटाएँ, तो बहुत कुछ हो सकता है.'

कपूर अपनी जगह से उठा, उसने कहा—'मैं आप लोगों की राय से सहमत नहीं हूँ. हमारा देश फ्रान्स या रूस नहीं, भारतवर्ष है. मैं आप लोगों से क्षमा चाहता हूँ—मैं ऐसे किसी काम में शरीक नहीं हो सकता, जो हिंसा का प्रचार करे.'

और वह अभिवादन रूप में हाथ उठाकर कमरे से बाहर हो गया. विजय, शीला और ज़मीर उसे देखते ही रह गए. विजय ने कहा—'पक्का गान्धीवादी है.'

× × ×

उसी दिन कपूर अमिता के पास गया. उसने विजय के यहाँ हुई बातें उसे बताईं, तो, पता नहीं क्यों, वह कुछ अधिक प्रसन्न न हुई.

और उसी दिन कपूर कानपुर से बनारस चला गया. जाते समय उसने अमिता से कहा—'मैं लीडर बनना नहीं चाहता. मैं मामूली सिपाही था. मज़दूरों को मेरी ज़रूरत नहीं रही. मैं जा रहा हूँ. फिर ज़रूरत पड़ेगी तो आ जाऊँगा. लेकिन एक बात मैं जानता हूँ कि जब तक देश ग़ुलाम है और मैं जीवित हूँ, देश को मेरी ज़रूरत रहेगी और मैं उसे पूरा करूँगा.'

अमिता की आँखों में तब भी आँसू आ गए थे.

१३

रिक्शेवाले को पैसे देकर बिदा करने के बाद, कपूर ने अपने थोड़े से सामान को तरतीब से रखना शुरू किया. मकान के नीचे का हिस्सा सीमेण्ट का गोदाम है, जिसका दरवाज़ा पिछवाड़े की ओर है. ऊपर के हिस्से में दो कमरे हैं, सामने की छत पर रसोई घर वग़ैरह, एक ही लाइन में बने हुए हैं. उस ओर नीम का पेड़ है, जिसके कारण शाम को, जब सूरज पश्चिम की ओर झुकने लगता है, छत पर छाया हो जाती है. कपूर के लिए इतनी जगह पर्याप्त है. भोजन का प्रबन्ध किसी होटल में कर आया है. नया मकान है, किराया भी अधिक नहीं, सात रुपये है. वैसे उसे उस समय तक पैसे की पर्वाह नहीं जब तक अमिता से लाये हुए पाँच सौ रुपये चलते हैं.

उसने बक्स खोला और एक तस्वीर निकाल कर मेज़ पर रख दी. फिर छत पर पड़ा हुआ ईंट का टुकड़ा उठा लाया और कील को हाथ में लेकर, इधर-उधर, दीवार की ओर देखने लगा कि किधर तस्वीर लगाई जाय? फिर उसने सोचा कि खाट इधर बिछेगी, इसलिए सामने तस्वीर लगाये, जो सुबह उठते ही निगाह पड़ सके.

जहाँ उसने कील ठोकने के लिये जगह चुनी, वहाँ पैसे के बराबर एक गोल छेद था. कील और ईंट को वहीं रख कर, वह दीवार के पास पहुँचा और छेद से आँख भिड़ा कर उस ओर देखने लगा—सामने टिनशेड पर उसकी दृष्टि पड़ी; चूल्हा बना हुआ था, एक छोटी-सी चौकी पर मँजे हुए बरतन करीने से सजे रखे थे. दीवार से लगी एक सिल रखी हुई थी, उससे सटा हुआ छोटा-सा तोढ़ा रखा

था, जिस पर घिसी हुई हल्दी की एक गोली रखी थी. खम्भे के पास ही एक गमला था, जिसमें ताज़े फूलों की माला पहिने हुए तुलसी-वृक्ष खड़ा था. और आगे गीली-सी हरी धोती टँगी दिखाई पड़ी और फिर कोशिश करने पर भी कुछ न दीखा. छेद की सीमा अधिक न थी, लेकिन कपूर खड़ा रहा, शायद और कुछ दीख जाये. कुछ देर बाद जब उसने वहाँ से आँख हटाई, तो देखा कि दीवार इकहरी ईंट की बनी हुई है.

फिर उसने कील वहाँ न ठोकी और आप गम्भीर होकर कुरसी पर बैठ गया.

कमरे में चारों ओर, बेतरतीब पड़ा हुआ सामान देखकर, वह कुछ देर बाद कुरसी से उठा और एक बार फिर उस छेद में देखकर सब चीज़ों को ठीक-ठिकाने रखने लगा.

सामान रखने के बाद, कुरसी और किताब लेकर वह खुली छत पर जा बैठा. नीम की पत्तियों से छन-छन कर हवा आ रही थी. कपूर गुनगुनाने लगा—

'हमारा सन्देसा लेकर, उड़ो पंछी, पंखों को खोल ;
उधर अमराई में कोयल, सुनाती मधुमय मीठे बोल।
उठे कजरारे-बादल आज, उड़ो पंछी, पंखों को खोल ॥'

थोड़ी देर तक रिसाइट करने के बाद उसने किताब खोली और पढ़ने लगा. लेकिन थोड़ी ही देर बाद पढ़ने से उसका मन उचट गया और वह कपड़े पहन, कमरे का दरवाज़ा बन्द करके नीचे उतरा, ज़ीने के द्वार पर ताला लगाकर नारायण के घर की ओर चल दिया. इस समय उसे कानपुर, वहाँ के मज़दूर और अमिता याद आ रहे थे.

नारायण अच्छा-ख़ासा, खाने-पहननेवाला युवक है—स्वर्गीय पिता के रुपये पर गुलछर्रें उड़ाता है. उसमें और कपूर में अन्तर है, लेकिन कपूर इसकी पर्वाह नहीं करता. कपूर और नारायण में पहले ही

सिनेमा जाने की बात तय हो गई थी, किसी तरह कपूर को समय काटना था.

रास्ते में कपूर ने नारायण से पूछा—'ये मेरे पड़ोस में किस ढङ्ग के आदमी रहते हैं ?'

बनारस में कपूर का परिचय केवल नारायण से ही है. उसीने यह मकान उसे बतलाया ज़रूरत का सामान भी भेज दिया है. कपूर की इच्छा है कि जिस तरह वह मज़दूरों से नाता तोड़कर आया है उसी तरह अमिता और क्रान्तिकारी-पार्टी के सदस्य भी उसे न पा सकें क्योंकि वह कुछ दिन शान्ति-पूर्वक, अकेला रहना चाहता है. उसकी बात सुनकर नारायण ने आश्चर्य से पूछा—'क्या बात हुई ?'

मुस्कराके कपूर ने कहा—'बात तो कुछ नहीं हुई, यों ही पूछा; अपने पड़ोसियों के बारे में तो जानना ही चाहिए.'

'सब काम-धन्धेवाले भले-मानुस हैं. और फिर तुम्हें क्या, कोई लफंगा, उठाईगीरा होगा, तो तुम्हारा क्या बिगाड़ लेगा—न तुम्हारे बीबी है और न तुम्हारे पास रुपया है.'

'इतना ही जानने से तो काम नहीं चल सकता.'

'देखो, तुम्हारे मकान के सामने चुङ्गी का हैडक्लर्क है, पीछे वाले मकान में एक नौजवान टिकट चॅकर रहता है. दाहिनी ओर के मकान में भी कोई सरकारी नौकर ही रहते हैं. और बाईं ओर तो मकान मालिक का ही घर है, जिसके सीमेण्ट का गोदाम तुम्हारे मकान के नीचे है. वह बहुत रईस आदमी है.'

'और ?''

'और''''और सामने सड़क के मोड़ पर बम्बा है, उसके सामने किसी मास्टर का घर है, मोड़ पर कोई पण्डित महाशय रहते हैं और आगे चलकर''''.'

कपूर ने नारायण की ओर घूमकर देखा, तो वह चुप हो गया.

सिनेमा में बैठे-बैठे भी कपूर ने बार-बार सोचा कि उसके कमरे की दीवार में एक छेद है, उस पार कोई रहता है, रसोई घर में कैसे चमकते हुए बरतन रखे थे. हरे रंग की एक ज़नानी धोती सूख रही थी. वह मकान उसके पिछवाड़े पड़ता है, रेलवे का टिकिट-चॅकर रहता है उसमें,''''और अमिता ? वह शायद उसकी याद कर रही होगी.

उसने नारायण से पूछा—'क्यों जी, हमारे सामने, तुमने जो चुङ्गी का क्लर्क बताया है, उसकी उमर क्या है ?'

'बूढ़ा है यार ?'

'और मोड़वाले मास्टर की ?'

'उसे भी बूढ़ा ही समझो ?'

'और वह जो टिकट-चैकर है, उसकी ?'

'वह तो छोकरा है !'

'कौन-कौन हैं उसके यहाँ ?'

'मैं कोई शहर भर की मर्दुमशुमारी करता-फिरता हूँ ?'

'मैंने सोचा, मेरी ही तरह अकेला हो तो परिचय कर लूँ.'

'अकेला तो नहीं है.'

तभी घण्टी बज गई और हॉल में चमकते हुए बिजली के लट्टू बुझ गये.

नारायण ने कहा—'लो खेल शुरू हो गया.'

कपूर चुपचाप बैठा रहा.

खेल समाप्त होने पर कपूर बराबर चाहता रहा कि उस टिकट-चॅकर के परिवार की बात पूछे, पर संकोचवश न पूछ पाया. अन्त में, बड़ी देर बाद पूछा—'मुझसे पहले इस मकान में कौन रहता था ?'

'तुम्हारी ही तरह एक ख़ूब तन्दुरुस्त आदमी रहता था. उसके कुछ साथी उसे 'ग्रीक-सोल्जर' कहा करते थे. एक दिन परिचय हो गया था, पर दोस्ती क़तई नहीं थी. मुझसे कहता था—'स्वास्थ्य सुधारो !

तन्दुरुस्ती बनाओ !' मुझे समझाने चला, बदमाश कहीं का. उससे मिलने के लिए अजीब-अजीब तरह के लोग आते थे.

'क्या करता था ?'

'क्या जानें, चला गया. अच्छा हुआ.'

'अकेला था ?'

'हाँ !'

'नाम क्या था उसका ?'

'शायद अनिलकुमार.'

कपूर धीरे से चौंका, पूछा—'कहाँ से आया था ?'

'शायद मैनपुरी से.'

कपूर चौंका नहीं, एक अजीब तरह की साँस लेकर उसने कहा—'तुम उससे इतने नाराज़ क्यों हो ?'

'नाराज़ क्या ! मुझे समझाता था, जूनियर समझता था. अगर मैं इतने सालों तक फ़ेल न होता, तो अब तक कब का आई० सी० एस० हो चुकता.'

'और यह टिकट चॅकर ! यह कैसा आदमी है ?'

'कभी बात नहीं हुई. पर देखने में तो भला लगता है. लेकिन इसकी बीबी बहुत सुन्दर है, कभी मौक़ा पड़े तो देखना.'

'अच्छा !' कपूर के दिमाग़ से सब रोमेन्टिक बातें उड़ गईं बस अनिल, अनिल, केवल एक अनिल रह गया !

'हाँ, और उसकी एक साली भी है, वह भी अपनी बहन की ही तरह ख़ूबसूरत है. अभी कुँआरी है.'

कपूर ने कहा—'आज का खेल तो कुछ जँचा नहीं.'

'तभी तो कहता हूँ, इंगलिश-पिक्चर्स देखा करो.'

कपूर चुप रहा.

१४

'ग्रीक सोल्जर' के नाम से एनार्किस्ट-पार्टी के सदस्यों में प्रख्यात अनिलकुमार का नाम कपूर के लिए अपरिचित नहीं है. उसके बारे में कपूर ने बहुत बार, बहुत सी बातें सुनी हैं. उसके मन में कई बार चाहना हुई कि वह उस महापुरुष के दर्शन कर सके, जिसने हुकूमत की ईंट से ईंट बजा देने की प्रतिज्ञा कर रखी है. जो अनेक षड्यन्त्रों के जन्मदाता, संयोजक और संचालक के रूप में फ़रार है. जिसके नाम इनामी-वारन्ट हैं और जिसकी खोज के लिए पुलिस मारी-मारी फिरा करती है.

जब कानपुर में, मज़दूर आन्दोलन के सिलसिले में, कपूर बुरी तरह व्यस्त था तब उसने सुना था कि अनिल आ रहा है. वह अनिल के दर्शन करने के लिए, उस मानवमूर्ति के दर्शन करने के लिए जो अपने प्राणों को उछालता हुआ फिर रहा है, बड़ा बेचैन हुआ. लेकिन उसका परिचय किसी ऐसे व्यक्ति से न था, जो क्रान्तिकारी-पार्टी से सम्बन्धित होता, और कपूर मन मसोस कर रह गया था.

आज वही कपूर, उस कमरे में मौजूद है जिसमें एक ऐसा देशोद्धारक महापुरुष रह गया है, जिसके पीछे बन्दूकें और पिस्तौलें लिए पुलिस चक्कर काट रही है.

कपूर ने मन ही मन उस कमरे को, उस कमरे की दीवारों को और उन दीवारों के बीच में कुछ दिन तक विकल-विश्राम करने वाले व्यक्ति की स्मृति को प्रणाम करने के भाव से मस्तक झुका दिया.

कानपुर में शीला सरकार और ज़मीर से वह जो बातें कहकर आया

था, उनके लिए उसे लज्जा और ग्लानि हो रही है. वह अपने किये पर पछता रहा है. क्या जाने, उन लोगों के साथ रहकर कभी देश की आज़ादी प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करने वाले अनिल से मुलाकात हो जाये और वह उस पूजनीय-व्यक्ति के चरणों में अपना मस्तक रखकर, अपने जी की सबसे बड़ी साध पूरी कर ले.

मेज़ पर मोमबत्ती जल रही है और कपूर, कमच्छा के इस मकान के ऊपर वाले, कमरे का दरवाज़ा बन्द किये ज़मीन पर बिछे बिस्तर पर पड़ा-पड़ा सोच रहा है. उसके मन में उत्तेजना नहीं है, पर पाश्चात्ताप ज़रूर है. आँखों में आँसू आ तो सकते हैं, पर उसका हृदय उन्हें बहाना नहीं चाहता, क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं. आँसू आने से, रो लेने से, मन हलका हो जायेगा, सो भी ठीक नहीं, क्योंकि ऐसा होने से उस चाहना में शिथिलता आ जायेगी, जो अनिल से मिल सकने के लिये उसमें है.

लेकिन वह अभी कानपुर नहीं जा सकेगा. घोर अपमान के बीच से वह निकल भागा है, तीव्र कशमकश की सीमा को लाँघ कर वह अमिता तक को छोड़ आया है; ऐसी हालत में, जबकि रस्तोगी दिल्ली में पड़ा हुआ है, उसके चचा को घर से कोई वास्ता ही नहीं है और राजनीतिक हलचलें तिलमिला रही हैं, पता नहीं किस क्षण क्या हो जाये. फिर भी हर समय और हर स्थिति में भावुकता के बीच उलझ जाना उचित नहीं है.

लेकिन अनिल ? अनिल से मिलने के लिए रास्ता ढूँढना ज़रूरी है, यदि उससे भेंट न कर सका तो आगे क़दम किस ओर उठेंगे, यह उसे नहीं मालूम. फिर भी, अनिल से मिलने के लिए जिस रास्ते पर उसे चलना होगा, वह रास्ता शीला सरकार और ज़मीर के अलावा उसे और कौन बता सकेगा ! इसके लिए भी उसे हर हालत में कानपुर ही जाना होगा. और कानपुर वह जा नहीं सकता.

तब वह अपनी साध को थोड़े दिनों तक हृदय में ही दबाये रखेगा शीला और ज़मीर का पता विजय को ज़रूर मालूम होगा. जब वह मन की व्यथा, मन के ताप, मन की अशान्ति से मुक्त हो जायेगा, तब कानपुर जायेगा ही और तब विजय से पूछ कर वह कलकत्ते या लाहौर जायेगा—कहीं न कहीं उसे अनिल का पता लग ही जायेगा.

लेकिन इस मकान में, जिसमें अनिल कुछ दिनों तक रह चुका है, वह न रह सकेगा. यहाँ रहने से उसके मन को शान्ति नहीं मिल सकेगी.

और रात के अन्तिम पहर में, सोने से पहले, उसने सोच लिया कि दूसरे दिन वह मिर्ज़ापुर चला जायेगा.

प्रातःकाल जब कपूर मिर्ज़ापुर जाने के लिए तैयार हो रहा था, उसने यह आवश्यक न समझा कि नारायण को सूचित करे.

सूट केस लेकर वह ज्यों ही कमरे से बाहर निकलने को हुआ कि दरवाज़े से ऊपर की दीवार पर पैन्सिल से लिखी चार पंक्तियों पर उसकी दृष्टि पड़ गई :—

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी.'

'क्रान्ति चिरजीवी हो.'

'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है.'

'भावुकता जीवन की सहचरी है.'

नीचेवाली पंक्ति ज़रा क़िनारे की ओर लिखी थी. उसे पढ़कर कपूर धीरे से मुस्करा दिया.

बहुत देर तक वह खड़ा रहा. फिर धीरे-धीरे कमरे से निकल गया. मिर्ज़ापुर जानेवाली गाड़ी उसे मिल गई थी.

१५

मिर्ज़ापुर से वापस होने पर कपूर आज फिर बनारस स्टेशन पर खड़ा है. वह घोर परेशानी का अनुभव कर रहा है. कुली सूटकेस और होल्ड-ऑल लिए खड़ा है और कपूर बार-बार टिकिट हाथ में लेकर देखने लगता है. प्लेटफ़ॉर्म मुसाफ़िरों से भरा पड़ा है, लेकिन उसका ध्यान किसी ओर भी नहीं है. कभी-कभी, रह-रह कर, क़ाफ़ी देर तक के लिए, अमिता की स्मृति उसके मस्तिष्क से आ टकराती है. अमिता ही जैसे उसके लिए संसार में अपनी है. वह सोचने लगता कि क्या माँ के अलावा भी कोई किसी को इतना प्यार, इतनी ममता और स्नेह दे सकता है, जितना सब उसे अमिता से प्राप्त हुआ है.

कपूर ने लखनऊ का टिकिट ले लिया है, हालाँकि उसे दिल्ली जाना है. डायरॅक्ट ट्रेन इसलिए नहीं पकड़ी कि रास्ते में कानपुर पड़ेगा और उसका भावुक-मन कानपुर में विना अमिता से मिले आगे बढ़ना गवारा न कर सकेगा. और कपूर चाहता है कि वह सख़्त बने, अमिता पर निर्भर रहकर भी वह उस पर अपने मन की क़मज़ोरी ज़ाहिर न करे.

उसे मज़दूर आन्दोलन से अब भी दिलचस्पी है, लेकिन वह उस दिलचस्पी को अपनी भावनाओं पर हॉबी होने देना स्वीकार नहीं करता. वह पसन्द नहीं करता कि उसे उन मज़दूरों के हालातों से वाकफ़ियत हो, जिनका वह लीडर रह चुका है और आज जिन्हें शंकर लीड करता है ! वह यह भी नहीं चाहता कि मज़दूर उसे पुकारें. चाहे वे कितनी ही बड़ी मुसीबत में पड़ें, वह उनके बीच से उसी तरह अलग

कर दिया गया है, जिस तरह दूसरों के कहने-भड़काने से पुत्र पिता द्वारा नालायक़ करार दिया जाकर तिरस्कृत होता है. और वह उसी तरह यह सुनना पसन्द न करेगा कि मज़दूर मुसीबत में हैं, इसलिए वह उनके बीच में जाये, जिस तरह स्वाभिमानी अथवा हठी-पुत्र पिता की आज्ञा का पालन करना तो दूर रहा, उसकी प्रार्थना सुनना भी नामंजूर कर देता है.

कपूर जीवन को उछालकर चलना पसन्द करता है. एडवेन्चर नहीं तो ज़िन्दगी नहीं, संघर्ष नहीं तो मनुष्य होना व्यर्थ, आग में कूदना नहीं तो शक्ति बेकार; लेकिन वह उस एडवेन्चर को बेकार समझता है, जो कृत्रिम हो ; वह संघर्ष बेकार है, जिसमें ख्याति बदनामी के रूप में मिले अथवा अपमान के बाद भी मान न हो ; उस आग में कूदना भी वह अनुचित समझता है, जो अस्थायी हो यानी आग बुझ जाये याउस में कूदने वाला मर जाये. झुलसने में उसे संतोष है ! इसीलिए कपूर को यह पसन्द नहीं है कि वह अमिता को यह समझने का मौक़ा दे कि वह उसके लिए बेचैन है, क्योंकि वह जानता है कि चाहे जितनी स्नेहमयी नारी हो पर वह शरद् बाबू के कल्पना लोक जैसी विश्वास-पात्री न होगी, क्योंकि उसे वहम है कि वह नारी पर विश्वास नहीं करता. अमिता पर उसे विश्वास है, यह उसकी कमज़ोरी है जिसे वह आपही-आप स्वीकार भी कर लेता है लेकिन वह चाहता है, कोशिश करता है कि अमिता उसकी आँखों का वह भाव न देख सके. मज़दूरों के बीच उसका अपमान हुआ है, इसलिए वह उनकी परवाह नहीं करेगा. दत्त और विजय उसके दोस्त हैं. दोस्ती के सामने कृत्रिमता, सिद्धान्त और भावुकता नहीं चल सकती. इसलिए वे उसके अपने हैं, उनसे बिछुड़ने का दुख ही क्या. उस पर झूठा अथवा सच्चा, हर प्रकार का, दोषारोपण किया जा सकता है, लेकिन वह इसके लिए वाध्य नहीं है कि किसी बात की कैफ़ियत क़िसी को दे.

कपूर को पता नहीं कि कब वह ट्रेन में बैठा और कब ट्रेन चली. कोई छोटा स्टेशन था, जिसका नाम जानने की कपूर ने कोशिश नहीं की, ट्रेन जब धीरे-धीरे चलने लगी तो लपक कर, दो खद्दरधारी युवक डिब्बे में आ गये और कपूर के सामनेवाले बर्थ पर अधिकार जमा लिया. बैठने के साथ ही वे बातें करने लगे.

एक ने कहा—'हज़ार मरे होंगे, तब सौ लिखे हैं.'

'इसमें क्या शक. लेकिन उफ़, सोचने पर दिल काँप उठता है. कैसा खौफ़नाक सीन होगा उस वक्त. बेचारे बेज़बान जानवरों की तरह भून डाले गये.'

'ऊपर से सफ़ाई यह कि पुलिस पर ईंटें फेंकी थीं.'

'सब ग़लत है. ऐसे में तो किसी ज़िन्दादिल नौजवान को बम····.'

'उससे भी तो पुलिस के भारतीय व्यक्ति ही मारे जाते.'

'बहस से क्या फ़ायदा. वह वक्त तो गया !'

'अब तो सब काम बदस्तूर होने लगेंगे. कानपुर दुनिया में इस बात के लिए मशहूर था कि हिन्दुस्तान में वहाँ जैसे सन्तोषी और जान हथेली पर रखकर चलने वाले मज़दूर कहीं नहीं हैं. लेकिन अब वह बात बस, कहने भर को रह जायेगी.'

कपूर उनकी बातें सुन रहा है. कानपुर का नाम सुनकर एक बार चौंका. लेकिन उन युवकों की ओर इसलिये न देखा कि कहीं वे लोग बातें करना बन्द न कर दें.

दूसरे युवक ने कहा—'गिरफ़्तारियाँ शुरू हो गई हैं. सरकार ख़ासकर नौजवानों के खिलाफ़ बड़ा तगड़ा स्टॅप ले रही है. मेरे ख़याल से शंकर, विजय, दत्त, वाजपेयी—ये सब लोग जेल में होंगे.'

'शंकर तो इसी लायक था. मैं कहता हूँ अगर कपूर होता तो कभी कानपुर के मज़दूरों पर ये आफ़त न आती. पिछली बार की शान्त-हड़ताल उसी की वजह से इतने दिन सफलता से चली और उसी की

वजह से मज़दूरों की शानदार जीत हुई. और वह जीत मज़दूरों के इतिहास में अपना खास स्थान रखेगी.'

'लेकिन ये कपूर कहाँ चला गया ?'

'पता नहीं. मैंने तो उसे कभी देखा नहीं, लेकिन मिस सरकार कानपुर में उससे मिली थीं, बड़ी तारीफ़ करती थीं. उसने हमारी स्कीम को नामंज़ूर कर दिया था. सिद्धान्तों का वह बहुत पक्का है.'

कपूर सब सुन रहा है. सब समझ रहा है. पर निर्विकार है; या निर्विकार बनना चाहता है. जैसे उसे किसी से कोई मतलब नहीं, वह अकेला है.

वह उन युवकों की बात-चीत सुनकर यह भी जान गया कि वे कलकत्ते की क्रान्तिकारी पार्टी से सम्बन्धित हैं.

'मेरा ख़याल है, कपूर भी गिरफ़्तार कर लिया गया होगा.'

'हाँ, पुलिस उसे छोड़ेगी नहीं, क्योंकि वह कपूर की शक्ति को पहचानती है. कप्तान से उसका परिचय नहीं है, पर वे कपूर पर बहुत भरोसा करते हैं.'

फिर भी कपूर के चेहरे पर ऐसा कोई भाव नहीं आया, जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता कि उसके अन्दर कोई उथल-पुथल हो रही है, पर मन में वह कुछ अशान्ति महसूस कर रहा है. वह वैसे ही बैठा है, जैसे न उसने कानपुर का नाम सुना है, न कपूर का ही; मज़दूर किसे कहते हैं, यह भी नहीं जानता. लेकिन 'कप्तान' शब्द सुनकर उसे बड़ी उत्सुकता हो रही है. और साथ ही अनिल उसके विचारों में आ रहा है.

'कपूर के नाम भी वारन्ट है.'

'अब तक बचा भी न होगा. वह तो बहुत मस्त है. खुले आम घूमता होगा. वारन्ट की बात मालूम होने पर भी अन्डर-ग्राउन्ड जाना पसन्द नहीं करेगा.'

और कपूर वैसे ही चुपचाप ठुड्डी पर हाथ टेके खिड़की से बाहर देख रहा है. सोच रहा होगा, वारन्ट है तो क्या हुआ !

कोई स्टेशन था. एक युवक वहीं उतर गया, चलते-चलते उसने दूसरे से कहा—'एस० के लिए रुपये फ़ौरन भिजवाना.'

गाड़ी चली. कपूर मुस्कराया कि खद्दर पहनकर देश की भलाई करने वाले ये क्रान्तिकारी-नौजवान सैकिन्ड क्लास में सफ़र करते हैं. और वह ख़ुद ? उसकी क्या, वह तो एक पूँजीपति के रुपये बहा रहा है.

युवक अकेला रह गया. लेकिन जिस तरह कपूर अपने आप में ही डूबा हुआ था, उसी तरह उसे भी इस बात की चिन्ता न थी कि जो अपरिचित उसके साथ सफ़र कर रहा है वह कौन है ?

गाड़ी जा रही थी. कपूर ने नहीं देखा कि वह खद्दरधारी युवक इस समय तक कपड़े बदल चुका है और अब नया-नया आया हुआ आई० सी० एस० मालूम हो रहा है. अटैची बन्द करके यथास्थान रखने के बाद उसने सिगरेट जलाई, रिस्टवाच देखी और फिर इत्मीनान से होकर सिगरेट के कश लेने लगा.

गाड़ी फ़ैज़ाबाद-स्टेशन पर रुकी. युवक अटैची लेकर उतरने को हुआ कि एक युवती डिब्बे के सामने आई और हाथ का इशारा करके कुछ पीछे हट गई.

युवक उतर पड़ा. प्लेटफ़ॉर्म पर भीड़ कम थी. रात का अन्तिम-पहर था.

युवक ज्योंही युवती के पास पहुँचा कि वह बोली—'मैं इस गाड़ी से सफ़र नहीं करूँगी. लखनऊ में ख़तरा है. पुलिस को पता लग गया है कि कपूर इसी गाड़ी से सफ़र कर रहा है. वह तुम्हारे डिब्बे में ही है. किसी तरह उसे यहीं उतार लो, वरना ग़ज़ब हो जायगा.'

युवक ने आश्चर्य से कहा—'वही कपूर है ?'

'हाँ, वक़्त बेहद कम है, उसे बचाओ कॉमरेड लाल !'

लाल अटैची रखकर ज्योंही चलने को हुआ कि युवती ने कहा—'उसे यह न मालूम हो कि मैं यहाँ हूँ. वह हम लोगों से नफ़रत करता है. उससे कहो कि विजय उसकी राह देख रहा है.'

धीरे से लाल ने पूछा—'विजय यहीं है ? गिरफ्तार नहीं हुआ ?'

'अन्डर ग्राउन्ड है. तुम जल्दी करो.'

लाल कपूर के डिब्बे की ओर बढ़ा कि गार्ड ने ह्विसिल बजाकर हरी रोशनी दिखा दी.

लाल ने डिब्बे का दरवाज़ा खोला और अन्दर जाकर कपूर से कहा—'मिस्टर कपूर, जल्दी कीजिए. आपको यहीं उतरना है.' और उसने कपूर का होल्ड-ऑल और सूटकेस उठा लिया.

'विजय आपके इन्तज़ार में है.'

कपूर जैसे नींद से जागा—'ऐं.'

और एँजिन ने सीटी दे दी.

'जल्दी उतरिए ! विजय ने आपको बुलाया है. उनसे मिले विना लखनऊ मत जाइये.'

ट्रेन रेंगने लगी और लाल ने कपूर का होल्ड-ऑल खिड़की से बाहर प्लेटफ़ार्म पर फेंक कर कहा—'चलिए, ट्रेन चल पड़ी.'

और कपूर झट से उतर पड़ा. उसके पीछे, उसका सूटकेस लिए, लाल भी कूद पड़ा.

ट्रेन ने स्टेशन छोड़ दिया. आख़िरी डिब्बे के पीछे लाल रोशनियाँ चमक रही थीं और ट्रेन दूर होती जा रही थी.

१६

फ़ैज़ाबाद कपूर कभी नहीं आया; उसे नहीं मालूम कि कार कहाँ जा रही है ?

लाल कार को ड्राइव कर रहा है और पीछे की सीट पर कपूर शीला सरकार के बग़ल में बैठा है.

उसने फिर टोका—'लेकिन शीला, तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि पुलिस ट्रेन में मेरा पीछा कर रही थी और लखनऊ स्टेशन पर मेरे लिए हथकड़ियाँ लिए खड़ी होगी.'

शीला ने मुस्कराके कहा—'सरकार तो सी० आई० डी० के कॉन्स्टेब्लों को तीस-चालीस रुपए महीने पर नौकर रखती है मिस्टर कपूर, लेकिन हम लोगों के गुप्तचर क्या पाते हैं, आपको मालूम है ?'

'क्या ?'

'वे देश के लिए गोलियों का शिकार होकर जीवन भर का वेतन एक साथ पा जाते हैं.'

कपूर ने एक गहरी साँस ली. शीला ने मुस्कराके उसकी ओर देखा.

मोड़ आया तो लाल ने पूछा—'किधर चलेंगे ?'

शीला ने कहा—'सीधे चलो. लखनऊ में अमिता देवी और विजय से मिलने के बाद आगे का कार्य-क्रम निश्चित किया जायेगा.'

कपूर ने कहा—'तो क्या अमिता लखनऊ में है ?'

'हाँ.'

'और विजय भी वहीं है ?'

'हाँ !'

'लेकिन लाल ने तो कहा था कि विजय यहीं फ़ैज़ाबाद में है.'

'फ़ैज़ाबाद तो मिस्टर कपूर, बहुत पीछे छूट गया है. बिजय के नाम वारन्ट है. वह कल लखनऊ पहुँचा होगा. अमिता तीन दिन से लखनऊ में ही हैं.'

'लखनऊ में क्या कर रही है ?'

'ये तो मैं नहीं जानती, लेकिन मुझसे उन्होंने कहलाया था कि मैं लखनऊ जाकर शीघ्र ही उनसे मिलूँ. इधर मेरे पास यह समाचार आया कि आप मिर्ज़ापुर से बनारस होते हुए लखनऊ जा रहे हैं और पुलिस आप के पीछे है. इस समाचार के बाद ही, लखनऊ से फ़ोन मिला कि वहाँ पुलिस, स्टेशन पर, तुम्हारी राह देख रही है.'

'अमिता से तुम्हारा परिचय कैसे हुआ ?'

'आपकी तलाश में विजय के साथ उनके घर गई थी—यह तबकी बात है जब पिछली बार मैं, विजय के यहाँ ज़मीर के साथ आप से मिली थी.'

'मुझे याद है.'

'मैंने अमिता देवी को बहुत पसन्द किया है. वे हमें हर तरह का सहयोग देने को तैयार हैं. मिस्टर रस्तोगी ने पाँच हज़ार रुपए हमें दिए हैं. लेकिन वे हम लोगों की पार्टी को केवल आर्थिक-सहायता देने को ही तैयार हैं. काँग्रेस के प्लेटफ़ॉर्म पर खड़े होकर वे बोलना पसन्द करते हैं, पर हमारी प्राईवेट-मीटिंगस् में भी नहीं आते.'

'क्या रस्तोगी ने काँग्रेस के प्लेटफ़ार्म से स्पीच दी थी ?'

'जी, यह उस दिन की बात है जब कानपूर के मज़दूर-लीडर्स गिरफ़्तार किए गए थे और मज़दूरों पर गोलियाँ चलाई गई थीं और उन लोगों की सहानुभूति में काँग्रेस ने तिलक-हॉल में मीटिंग की थी.'

'आप तो बंगालिन हैं लेकिन हमारे प्रान्त के बारे में क़ाफ़ी से अधिक दिलचस्पी और जानकारी रखती है ?'

'यू० पी० हमारी आशाएँ पूरी कर सकता है, बंगाल में केवल इतनी शक्ति है कि वह यू० पी० को हाथ पकड़ कर अपने साथ लाये. मैं तो कहती हूँ कि यू० पी० की सहायता और सहयोग के बिना देश की कोई भी क्रान्ति आगे नहीं बढ़ सकती. हमें यू० पी० में काम करना है, इसी लिए यहाँ की जानकारी रखना सब से अधिक ज़रूरी है.'

कपूर ने कुछ भी न कहा.

कार चलती रही. शीला ने कहा—'लाल! भई, तेज़ चलो.' और कार की स्पीड तेज़ हो गई. सुबह हो रहा था.'

शीला ने कपूर से कहा—'शीघ्र ही हमारे लिए अच्छे मौक़े आने वाले हैं. हम लोग आज़ाद हो सकते हैं.'

तीखे और सख़्त स्वर में कपूर ने कहा—'कैसी बातें करती हो शीला! विदेशी फिर भी विदेशी है. हमें तो अपनी शक्ति और अपने साहस से ही आज़ाद होना है. क्या तुम यह समझती हो कि कोई विदेशी आकर अपने आदमियों और युद्ध सामग्रियों को इसलिए बर्बाद करेगा कि वह ब्रिटेन के पंजे से छुड़ाकर हमें आज़ाद करा दे?'

शीला को उसकी बात का उत्तर न सूझा, तो कहा—'आपसे बहस करना मुझे रुचता नहीं.'

'सचाई के आगे बहस टिक ही नहीं सकती.'

'बात-चीत का टॉपिक बदलिये कपूर साहब!' शीला ने मुस्कराकर किंचित झेंपते हुए कहा. लेकिन कपूर चुपचाप बैठा रहा.

सुबह की सफ़ेदी आसमान पर फैल रही थी.

लाल ने कहा—'कुछ भी हो मिस्टर कपूर, हिन्दुस्तान की ओर से, आज़ादी हासिल करने के लिए अबकी बार जो क़दम उठाया जायगा, वह अहिंसावादी न होगा.'

'लेकिन जब तक बापू जीवित हैं, इस देश की किसी भी संस्था को यह हिम्मत न करनी चाहिए कि वह उनका विरोध करके

हिंसावादी-सिद्धान्त अमल में लाकर सफलता की आशा करे.'

'बापू ? दो हड्डियों का आदमी देश को अपनी मुट्ठी में किये हुए है और आप जैसे नौजवान ख़ामोश होकर उसके पीछे चलने में गौरव समझते हैं. यह नपुंसकता सूचक भावना जब तक दूर न होगी तब तक आगे बढ़ने का ख़याल, ख़याल से भी, हलका रहेगा.' लाल ने कहा.

कपूर मुस्कराकर बोला—'बापू ख़ुद जब गालियाँ सुनने का साहस करते हैं, नाराज़ नहीं होते, तो हम लोग ही उनकी बुराई सुनके क्यों नाराज़ हों ! आप उन्हें गालियाँ देकर ख़ुश होते हैं तो हों, पर इससे उनका क्या बिगड़ेगा. आप अगर केवल अपने आपको आदमी समझ कर ही सोचें तो जानेंगे कि आप का रवैया उचित नहीं है.'

लाल ने कहा—'बापू के डिक्टेटरशिप के हम विरोधी हैं.'

कपूर चुप रहा. शीला ने कपूर की ओर देखा और कहा—'आप बनारस में कहाँ ठहरे थे ?'

'एक दोस्त के यहाँ, जो न गान्धीवादी है, न क्रान्तिवादी और न प्रचारवादी. इसलिए उसका परिचय आपके लिए बेकार साबित होगा.'

'कितने दिन रहे उसके यहाँ ?'

'दो दिन.'

'बस ? और मिर्ज़ापुर में ?'

'एक महीने.'

'और इतने ही दिनों में आप अपने जीवन के लक्ष्य को, अपने सिद्धान्त को भूल गये ? जिन ख़बरों से आपको दिलचस्पी होनी चाहिए थी, उन ख़बरों से अपरिचित बने रहे ?'

'मिस शीला, मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है, मेरे सिद्धान्त क्या हैं; यह आप से अधिक अच्छी तरह मैं समझता हूँ. और ख़बरों से दिलचस्पी इसलिए नहीं रही कि दिलचस्पी लेना नहीं चाहता था, इसीलिए इतने दिन तक अख़बारों को भी नहीं देखा.'

'आज के युग में एक ज़िम्मेवार आदमी अख़बार न देखे, यह भी ताज्जुब की बात है.'

'ख़ैर!' कपूर ने कहा और आकाश की ओर देखने लगा. दूर शहर की ऊँची अट्टालिकाएँ दिखाई दे रही थीं.

लाल ने कहा—'लीजिए दस मिनट में आप श्रीमती अमिता देवी और विजय के पास पहुँच जायेंगे.'

कपूर ने कुछ न कहा.

शीला ने धीरे से कपूर के कन्धे पर हाथ रख दिया. कपूर वैसा ही बैठा रहा. मोटर चलती रही.

१७

अमिता ने कहा—'ख़ास आदमियों की बात छोड़िये; जो भी व्यक्ति किसानों, मज़दूरों अथवा अन्य श्रमिक वर्ग या नौजवानों का हिमायती होगा, उनसे सहानुभूति रखता होगा, पुलिस द्वारा ख़तरनाक करार दिया जायेगा और गिरफ़्तार कर लिया जायेगा.'

लाल ने कहा—'बेशक !'

शीला बोली—'मैं तो कहती हूँ कि संगठन करने का इससे अच्छा मौक़ा दूसरा नहीं आ सकता. नौजवान लीडर हमारे बीच से अलग कर दिये गये हैं, इसकी हमें परवाह नहीं है. हम नये लोगों को सामने लायेंगे.'

ज़मीर बोला—'वे भी बचेंगे नहीं. दरअसल इस वक़्त हमें अन्डर-ग्राउन्ड-वर्क करने की ज़रूरत है.'

विजय बोला—'लेकिन कपूर जब तक हमारा साथ नहीं देगा; काम चल ही नहीं सकता. उसकी हिम्मत क़ाबिले-तारीफ़ है.'

शीला ने कहा—'और कपूर हमारे सिद्धान्तों को कुछ मानते ही नहीं.'

अमिता ने कहा—'मानते नहीं हैं, लेकिन मान सकते हैं, क्योंकि वे आप लोगों के कामों से प्रभावित हैं.'

शीला ने मुस्कराकर अमिता की ओर देखा, कहा—'तुम कहोगी तो मानेंगे.'

'मैं कहूँगी.'

उसी समय कपूर काली-सर्ज का सूट पहनकर बग़ल वाले कमरे से

निकला. उसे इस वेश में देखकर कौन पहचान सकता है. यह वही लोग जानते होंगे, जो उसके बीच में रहते हैं. क्योंकि समझदारी के दिनों में बहुत ही कम बार उसने सूट पहना है.

अमिता काउच पर अकेली बैठी थी. उसी के बग़ल में आकर वह बैठ गया और ज़मीर से कहा—'तुम लोग मेरे खिलाफ़ खूब प्रचार कर रहे हो. मैं पूछता हूँ कि अगर मैं तुम लोगों के इशारे पर चलने लगूँ, यानी क्रान्तिकारियों की इस पार्टी का काम करने लगूँ, जिसे तुम लोगों ने बनाया है, तब भी तुम्हारा क्या भला होगा—क्योंकि मैं जानता हूँ कि ख़ूबसूरत होने पर भी मैं औरत तो नहीं हूँ.'

अन्तिम वाक्य सुनकर सब लोग हँस पड़े. अमिता और शीला ने क़हक़हे तो न लगाये पर झेंप से भीरी हँसी उनके ओठों को बन्द न रख सकी.

कुछ क्षणों के बाद अमिता ने कहा—'जब तुम इन लोगों की बातें न मानते हुए भी इनके साथ काम करने को तैयार हो, तो इन्हें यह मौक़ा दो कि यह तुम्हें ग्रहण करें और जैसा चाहें बना लें अपने आप को इनके ऊपर छोड़ दो न.'

'यही तो मुझ में कमज़ोरी है अमिता, कि मैं अपने आप को जिसके हाथों में छोड़ देता हूँ, उसी का होकर रह जाता हूँ—माफ़ करना, मैं ज़रा लाइट-मूड़ को एन्ज्वाय कर रहा हूँ—जैसे मैंने तुम्हारे हाथों में अपने आप को छोड़ दिया तो तुम्हारा ही होकर रह गया. यह बात यहाँ बैठे हुए लोगों के अलावा आसनसोल में बैठे हुए मिस्टर रस्तोगी भी जानते हैं.'

अमिता मुस्कराई और बाक़ी के उपस्थित लोग हँसे.

शीला ने कहा—'आपसी बातें छोड़िए मिस्टर कपूर! आज इस ख़ुशी में कि आपने हमें सहयोग देना स्वीकार कर लिया है........'

बात काटकर कपूर ने कहा—'आपने कैसे जाना कि मैंने आप

लोगों की क्रान्तिकारी-पार्टी को सहयोग देना स्वीकार कर लिया है और मैं पिस्तौल चलाने को तैयार हो गया हूँ ?'

'इसका ज़िम्मा श्रीमती अमिता देवी ने ले लिया है.'

'ये तो मुझे बर्बाद करने पर तुली हैं.'

अमिता ने धीरे से कपूर की ओर देखा.

शीला ने कहा—'लेकिन हमारे कप्तान तो आप को बर्बाद करने पर नहीं तुले हैं.'

कपूर ने उत्सुकता से कहा—'मैंने इतनी बार पूछा शीला कि मुझे बतादो कि वे कौन हैं. क्या अनिलकुमार नहीं हैं वे ? क्या आप लोग उन्हें 'ग्रीक सोल्जर' नहीं कहते ?'

'हम लोग जब आपस में ही एक दूसरे की बातें नहीं जानते तो कप्तान के बारे में ही कैसे जानेंगे ?'

लाल ने कपूर से कहा—''पथ के दावेदार' नहीं पढ़ा आपने ?'

'पढ़ा क्यों नहीं !'

'हमारे कप्तान को आप सव्यसाची तो न मानें, पर वे भी कम नहीं हैं. पुलिस को ऐसे-ऐसे घिस्से दिए हैं कि क्या कहें. पर हमारे यहाँ भी एक दूसरे की बातें जानने का अधिकार किसी को नहीं है.'

'वह उपन्यास की बात है, और तब समय भी तो दूसरा था.' कपूर ने कहा.

शीला बोली—'हाँ जनाब, तब लोग जगाये जा रहे थे, आज वे जाग कर खड़े हो गये हैं.'

कपूर अन्यमनस्कता से मौन रहा.

शीला ने मुस्कराके कहा—'आप लोगों को मालूम होना चाहिए कि इस समय आठ बज चुके हैं. हम लोगों को फ़ौरन चलना चाहिए. अमिता देवी की कार हमारे और हमारा पेट होटल के खाने के इन्तज़ार में है.'

कपूर ने कहा—'लेकिन मिस शीला सरकार, आप शायद यह भूल रही हैं कि मेरे, विजय के और लाल के नाम वारन्ट है और हम लोग प्रान्त की राजधानी में हैं.'

शीला ने हँसकर कहा—'आप लोग, मेरा मतलब है जिनके नाम वारन्ट है, वे अपने चेहरे शीशे में देखकर बताएँ कि क्या वे पहचाने जा सकते हैं?'

कपूर मुस्कराया, धीरे से 'ओह' करके हँस पड़ा.'

सब लोग हँसते हुए अपनी-अपनी जगह से उठ खड़े हुए.

चलते-चलते शीला ने कहा—'और अगर पुलिस हमारे पीछे पिस्तौल लेकर चल रही है तो पुलिस के पीछे हमारे साथी चल रहे होंगे.' ये तो फिर उसने भौंहें मटकाकर, हँसते हुए कहा—'वे डाल-डाल हम पात-पात, समझे?'

और सब लोग कमरे से बाहर निकल गये.

१८

भोजन के साथ हलकी शराब भी है, क्योंकि इन छः व्यक्तियों में, न तो कोई आदी है और न कोई शौक़ीन ! महज़ चखने के लिए पी लेना बुरा इनमें से कोई नहीं समझता. पीने से 'ग़म ग़लत' होता है, इस सिद्धान्त को भी ये लोग नहीं मानते.

लाल, ज़मीर, विजय और शीला आज कितने दिनों बाद 'चख' रहे हैं, यह कपूर को नहीं मालूम, पर यह उसे मालूम है कि उसने और अमिता ने कब अन्तिम बार 'चखी' थी. वह रात उसे जीवन भर ताज़ी-ताज़ी याद बनी रहेगी जब उसने नारी के समर्पण की भावना को जाना-समझा था.

कपूर के दाहिने-बाज़ू अमिता बैठी है, दूसरी साइड में विजय और लाल हैं. बाएँ बाज़ू शीला है और सामने ज़मीर बैठा है. बग़लवाले केबिन में कोई मतवाला अपनी प्रेयसी से बेहूदे अल्फ़ाज़ों में मज़ाक कर रहा है और वह भी उसी तरह उसे उत्तर दे रही है. उन अपरिचितों की बातों का रस, इस केबिन में बैठे हुए छः व्यक्ति ले रहे हैं.

अपरिचित-मतवाले की आवाज़ सुनाई पड़ी. वह अपनी प्रेयसी से कह रहा था—'तुम तो पक चलीं. मैंने तो वो-वो चीज़ें देखी हैं, जो तीस-तीस बरस की उमर होने पर भी एकदम कच्ची मालूम होती हैं.'

औरत की लड़खड़ाती हुई आवाज़ सुनाई पड़ी—'तुम नशे में बक रहे हो ? कल तो तुम मुझे दुनिया की सब से ज़्यादा खुबसूरत औरत बता रहे थे ?'

मर्द लहज़े के साथ बोला—'सो तो मैं आज भी कह सकता हूँ.'

और वह चुप हो गया, जबकि उसने इन लोगों के ज़ोर से हँसने

की आवाज़ सुनी. विजय ने कहा भी—'किराए की छोकरी है शायद.'

शीला ने दाहिने पैर का सैन्डिल उतार दिया और घोंटू तक धोती उठाकर पैर कपूर के पैर की ओर बढ़ाया. फिर कपूर के पैन्ट को, पैर से ऊपर खिसका उसकी पिंडरी से अपनी पिंडरी मिलाकर धीरे से रगड़ दी और फिर अपना पैर खींच लिया. कपूर ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा और चम्मच से शोरबा लिया. शीला ने फिर वैसे ही पिंडरियों का मिलाप कराया और दोनों की पिंडरियाँ क़ाफ़ी देर तक आलिंगन किए रहीं. कपूर ने एतराज़ नहीं किया, यानी शीला का निमंत्रण उसने स्वीकार कर लिया. वह खिलखिलाकर हँस पड़ा. शीला ने भी धीरे से उस हँसी में योग दिया. उसकी मादक हँसी में विजयोल्लास था, किन्तु साथ ही अतृप्ति थी.

आख़िरी छः पैग तैयार थे.

ज़मीर ने कहा—'हाँ, भाई, ख़त्म करो अब !'

सब ने पेग उठाकर मिलाए और शीला के स्वर के साथ ही साथ कहा—'क्रान्ति चिरजीवी हो !'

और शराब गलों से नीचे उतर गई.

ज़मीर ने वेटर को आवाज़ दी और जब वह आया तो बिल लाने को कहा.

वेटर चला गया तब कपूर ने शीला से कहा—'तुम्हें धन्यवाद.' फिर ज़मीर की ओर देखकर कहा—'इन्होंने तो शराब पिलाकर दीवाना बना दिया, अब गुनाह करने की तबीयत है ज़मीर !'

सब हँसे और ज़मीर ने कहा—'तो इन्हीं से कहो.'

कपूर ने शीला की ओर देखा तो उसने, नीचे अँधेरे में, कपूर का हाथ पकड़ कर दबा दिया.

अमिता हलके नशे में ज़रूर थी, पर उसे कपूर और शीला का यह व्यवहार कुछ भी बुरा न लगा.

वेटर ने बिल पेश किया. शीला ने पर्स में से नोट निकाल कर उसे दे दिए और वह सलाम करके चला गया.

शीला उठी तो सब लोग उठ खड़े हुए. शीला की आँखें अजन्ता-आर्ट का नमूना थीं और उसके पैर धीरे-धीरे लड़खड़ा रहे थे.

शीला ने 'बार' के गेट पर मस्ताने ढंग से झूमते हुए कपूर के कन्धे का सहारा लिया और लाल से पूछा—'ड्राइव कर लोगे पार्टनर ?'

'ऑफ़-कोर्स !' लाल ने कहा.

× × ×

हॉल में हालाँकि छः पलङ्ग बिछे थे, लेकिन ज़मीर और विजय ज़मीन पर बिछे फ़र्श पर ही पड़ रहे. लाल ने हाथ मुँह धोया और बाकायदा पलङ्ग पर लेटा. कपूर का हाथ पकड़ कर शीला ने उसे कोने वाले पलङ्ग पर लिटा दिया, जहाँ बग़लवाले कमरे का दरवाज़ा था. अमिता अभी ईज़ी-चेयर पर ही बैठी थी. शीला ने उससे कहा—'और तुम अमिता ?'

'मैं ठीक हूँ.'

'अरे, तो फिर इतनी चारपाइयाँ क्यों बिछवाई थीं ?'

'तो तुम लेटो.'

'और तुम ?'

'अभी मैं कपूर से कुछ बातें करूँगी.'

'बातें कल करना. अभी आराम करो.'

'नहीं शीला ! मेरी आँखें तो जल रही हैं, बदन टूट सा रहा है. अकेले जी नहीं बहलेगा.'

'तो मुझसे जी बहलाओ !' और वह अमिता को हाथ पकड़ कर बाहर सहन में ले आई.'

'उहुँक, ज़रा कपूर से ही बातें करूँगी.'

'कपूर से क्या बातें करनी हैं ? बताओ न.'

'हरेक बात तुम्हें कैसे बता दूँ ?'

'अरे, मैं भी तो औरत हूँ—'

'तो क्या हुआ !' पता नहीं यह तीन शब्द अमिता ने किस अदा से रैलिंग का सहारा लेते हुए कहे थे कि शीला ने मुस्कराके उत्तर दिया—'लेकिन तुम तो गर्भवती हो.'

अमिता दो क्षण चुप रही कि पीछे से कपूर ने आकर दोनों को एक-एक बाँह में आ दबाया और बीच में सिर लाकर दोनों की ओर हँसते हुए देखा.

पहले तो दोनों चौंकीं, फिर अमिता ने उसका हाथ छुड़ाते हुए कहा—'बड़े ढीठ हो तुम ! कोई देखेगा तो क्या सोचेगा. बदनामी का तुम्हें डर नहीं है ?'

'अरे, नाराज़ हो गईं ?'

अमिता ने कुछ न कहा. शीला वैसे ही कपूर से चिपटी रही.

बारह का घन्टा बजा और तुरन्त कपूर का हाथ दबाते हुए शीला उसके पास से हटकर अमिता के पास पहुँची और कहा—'चलो सो जाएँ कल सुबह ही तो चलना है.'

तीनों कमरे में चले गए और लाइट बुझाकर अपने-अपने पलंग पर पड़ रहे.

× × ×

समय एक बजकर पैंतालीस मिनट था और तेज़ सरदी पड़ रही थी.

हॉल से दो कमरे छोड़कर, तीसरे में, ज़मीन पर फ़र्श बिछा था और फ़र्श पर शीला और कपूर लेटे थे.

'तुम भी क्या-क्या नए शब्द ईजाद करते हो कपूर ! जीवन के वास्तविक आनन्द को गुनाह कहते हो ?'

'मन की लहर है शीला, चाहे कुछ कह दिया.'

'अमिता गर्भवती है, तुम जानते हो ?'

'जानता हूँ, मुझसे कहा था उसने. लेकिन मैं क्या करूँ ?'

'तुम्हारा ही बच्चा उसके पेट में है.'

'मुझे यक़ीन नहीं है.'

'लेकिन उसने मुझसे कहा है.'

'होगा.' कपूर ने करवट ले ली.

शीला दाँत मीचकर धीरे से हँस पड़ी. पर कमरे में घोर-अन्धकार था, सो कपूर को नहीं मालूम हुआ कि वह हँसी है.

'लेकिन तुम्हें अमिता की बाबत यह सब कैसे मालूम हुआ ? इतनी घनिष्ठता है तुम लोगों में ?'

'हाँ जनाब !'

'अच्छा, अब बातें बन्द करो—चुपचाप सो रहो. सुबह ही हरदोई चलना है.'

'नींद तो आती नहीं.'

'चुप रहो जी, नहीं तो मैं चला जाऊँगा.'

'अच्छा नहीं.' और शीला ने भी दूसरी ओर करवट बदल ली,

१६

सब लोग कपड़े बदलकर सोने के लिए तैयार थे कि अमिता ने कहा—'मैं अब तुम लोगों के साथ कहाँ चलूँगी भला ?'

शीला ने शोखी भरी निगाहों से उसे देखकर कहा—'तुम्हें जाना भी न चाहिए. तुम्हें तो सात-आठ महीने के लिए सब कामों से फ़ुर्सत पाने के लिए अच्छा-खासा बहाना मिल गया है !'

अमिता लाज-भरी-मुस्कराहट को कुछ क्षणों में ही जज़्ब करके बोली—'ख़ैर, लेकिन मेरी इच्छा थी कि कपूर को अपनी नज़र से अलग न होने दूँ.'

शीला ने धीरे से कहा—'वे तो पहले ही से तीरे-नज़र के शिकार हैं !' पर कपूर शीला की बात सुन न सका शायद. और अमिता बोलती गई—'क्योंकि ये अपनी हिफ़ाज़त आप नहीं कर सकते. जी चाहेगा, जहाँ घूमेंगे ; जी चाहेगा, जिसके साथ मित्रता कर लेंगे और अविश्वास तो किसी का भी नहीं कर सकते. उधर पुलिस इनके पीछे हाथ धोकर पड़ गई है—ऐसे में कहीं ये गिरफ़्तार कर लिए गए तो क्या होगा ?' और वह हाथ का सहारा लेकर लेट गई. बाक़ी लोग भी अधलेटे बैठ गए और शीला अमिता का सिर गोद में लेकर बैठ गई. उसके चेहरे का रोब, चंचलता, और हँसी इस समय ग़ायब हो गए थे—आँखों में दया और करुणा के भाव आ गए थे.

ज़मीर ने कहा—'इन्हें मैं पंजाब, काश्मीर या पेशावर में हिफ़ाज़त से रख सकता हूँ, लेकिन रास्ते में हम लोग पुलिस की आँखें बचाकर निकल जाएँगे, इसका यक़ीन मुझे तो नहीं है.'

शीला ने कहा—'मैं बंगाल के किसी भी गाँव में इन्हें अपने पास रख सकती हूँ, बशर्ते कि मुग़लसराय तक आप लोग पहुँचा दें.

रात का अँधेरा गहरा हो रहा था और हरदोई स्टेशन से ग्यारह मील दूर सड़क के पासवाली अमराई में ये लोग विश्राम कर रहे थे.

शीला ने कहा—'मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं इस काम में पीछे रहूँगी, बल्कि मैं चाहती हूँ कि मुग़लसराय तक कम-से-कम ज़मीर, तुम ज़रूर ही हमारे साथ चलो. वैसे लाल को तो चलना ही है, पर विजय को इसलिए जाना उचित नहीं है कि इनके नाम भी वारन्ट है ; इस-लिए कपूर और विजय, पुलिस के दो शिकार, उनकी आँखों से हम लोगों के बीच में रहने से बच सकें, यह ज़रा कठिन है.'

इसी बीच कपूर ने सिगरेट का टिन खोला और सबको सिगरेटें पेश करके बात-चीत की गम्भीरता नष्ट कर दी. फुट भर लम्बी मोमबत्ती आधी से अधिक पिघल चुकी थी, उसी से सबने सिगरेटें जलाईं और कपूर ने उसे फूँक मार कर गुल करते हुए कहा—'अब इस रोशनी की कोई ख़ास ज़रूरत नहीं है.'

ज़मीर ने टॉर्च की रोशनी से बाग़ के चारों ओर देखकर लाल से पूछा—'कार का ताला तो बन्द है ?' और बटन दबाकर टॉर्च बुझा दिया.

लाल ने कहा—'बखूबी.'

कपूर ने सिगरेट का गहरा कश लिया और शीला के मुँह पर धुआँ छोड़कर कहा—'तुम लोग जो मुझे विजय से अलग कर रहे हो, इसका क्या कारण है ?'

विजय ने कहा—'कारण यही है कि यह अनुचित नहीं है, बल्कि हम दोनों के लिए लाभदायक है.'

कपूर ने उत्तेजित होकर कहा—'ये तुम कह रहे हो विजय ?'

'तो हुआ क्या ?'

'हुआ यही कि मैं और विजय साथ-साथ रहेंगे. कोशिश करेंगे कि

पुलिस की आँखें हमें न देख पाएँ, क्योंकि तुम लोगों की इच्छा है कि हम बाहर रहें. लेकिन अगर भाग्य में लिखा होगा, तो गिरफ़्तार हो जाएँगे, सो हो जाएँ.'

शीला बोली—'फिर भाग्य की बात कपूर ! अरे, भाग्य क्या कर लेगा इसमें ?'

'बहस की बात छोड़ो.' अमिता ने कहा.

'ख़ैर. अब मैं कहूँ कि मुझे नींद आ रही है तो ?' कहते-कहते कपूर अमिता के घोंटओं पर सिर रख कर लेट गया. अमिता ज़रा नीचे को खिसकी और कपूर के सिर को जाँघों पर रख, बालों पर हाथ फेरने लगी.

कपूर ने सिगरेट, आख़िरी कश लेकर, फेंक दी तो अमिता ने डिब्बे से दूसरी सिगरेट निकालकर उसके मुँह में लगा कर जला दी.

शीला ने अमिता से कहा—'तुम भी पिया करो.'

'ये ज़रूरी नहीं है कि ये पीते हैं तो मैं भी पीऊँ.'

शीला को जैसे कोई बात याद आई, लाल से कहा—'एस० को रुपए भिजवाए ?'

'हाँ, आज सुबह लखनऊ में, उसकी ओर से आनेवाले आदमी को दे दिए थे. उसने कहा है कि पिस्तौलें रुपया हाथ में आने पर ही कारीगर बनाएगा.'

'लेकिन रज्जन कहता था कि पिस्तौलें बनी रखी हैं और रुपये मिलते ही हमारे हाथ में आ जाएँगी.'

'तो भी मिल ही जाएँगी.'

'एस० कौन है ?' ज़मीर ने पूछा.

'ग्वालियर-पार्टी का लीडर सतीश.' शीला ने कहा.

कपूर बोला—'बंगाल की ये बुलबुल यू० पी० के ही नहीं, पास की स्टेट्स के जवानों पर भी क़ब्ज़ा किए बैठी है !' कपूर की बात सबने सुन ली और सभी हँस दिए.

अँधेरा गहरा था. सरदी पड़ने लगी थी. गरम सूट पहने हुए कपूर के ऊपर विजय ने दो कम्बल डाल दिए थे.

अमिता ने कपूर के पास मुँह ले जाकर धीरे से कहा—'तुम पर भी तो क़ब्ज़ा कर लिया है.'

लापरवाही से कपूर बोला—'ऊँह.'

किसी को नहीं मालूम हुआ कि कपूर और अमिता के बीच इतनी बात हुई. शीला को मालूम हुआ कि अमिता ने कपूर से कुछ कहा है. और अमिता फिर शीला की गोद में सिर रखकर लेट रही.

अँधेरे में, ऊपर आम के पेड़ की घनी छाया थी और अमराइयों के उस पार झींगुर की झनकार गूँज रही थी.

कपूर ने सिगरेट का कश खींचते हुए, उसीकी रोशनी में घड़ी देख-कर कहा—'ग्यारह बज रहे हैं.'

ज़मीर बोला—'तो तय क्या किया ? यों बेकार वक़्त ज़ाया करने से क्या फ़ायदा ?'

कपूर ने कहा—'तय यही रहा कि तुम सुबह लाहौर चले जाओ और शीला लाल के साथ आगरा जाएँगी. अमिता कानपुर तक इनके साथ रहेंगी. मैं और विजय फ़िलहाल बनारस जाएँगे.

शीला ने कहा—'अकेले ?'

'तो क्या हुआ ?'

'ख़तरा रहेगा.'

'छोड़ो इन बातों को.'

विजय ने कहा—'तो तय रहा ?'

'हाँ भाई !'

और विजय एक कम्बल और गद्दा उठाकर दूसरी ओरवाले आम के नीचे पहुँच गया.

ज़मीर और लाल भी उठ खड़े हुए. ज़मीर ने कहा—'हम लोग कार में सो रहे हैं.'

कपूर ने कहा—'और मुझ अकेले को दो-दो जवान औरतों के बीच में छोड़े जा रहे हो ?'

ज़मीर हँसकर बोला—'कोशिश करो—'हिम्मते मर्दां, मददे ख़ुदा.''

शीला ने पूछा—'पिस्तौल है ज़मीर ?'

'है, पर उसकी ज़रूरत न पड़ेगी.'

और वे दोनों चले गए.

कपूर बीच में लेटा रहा ! दो चिकने बदनवाली, कमसिन, गोरी और ख़ूबसूरत औरतों के बीच में ; जिनके स्तन गोल थे, मरी-मुरग़ियों की तरह लटके होना तो दूर की बात है, अभी उनका ढलाव भी शुरू नहीं हुआ था. जिनकी गदराई हुई जाँघें चुस्त और कमर पतली-लोचदार थी. और जो चाहती थीं कि कपूर अतृप्त न रहे !

कपूर ने शीला की बॉडी पर निहायत मुलायमियत से हाथ रखते हुए पूछा—'तुम्हारी पिस्तौल कहाँ है ?'

शीला ने कपूर की हरकत का विरोध नहीं किया, वहीं उसके हाथ को दबाकर कहा—'पर्स में है, क्यों ?'

'मैंने समझा चोली में छिपाकर रखली है.' बहुत धीरे से उसने कहा.

शीला के भाव अँधेरे में कौन देखता ! अमिता ने ज़रूर कपूर की ओर करवट बदलकर कहा—'तुम आजकल बड़े नटखट हो रहे हो. एक मिनट भी चैन नहीं पड़ता.'

'सब तुम लोगों की सोहबत का असर है.'

'जब पहली बार मुझसे मिले थे तब तो ऐसे नहीं थे ?'

'वह रात क्या भूल गई ?'

अमिता चुप रही, तो कपूर ने फिर कहा—'बस तभी से जी चाहता

कि अरमानों को खुलकर खेलने दूँ. देखूँ कि कब तक प्यास नहीं बुझती हाँ, तुम लोग 'उधार पट्टाविल' की तरह सलामत रहो ?'

शीला ने धीरे से कहा—'वह रात तो कपूर, इन्हें कभी न भूलेगी और सात मास बाद तो उसका चमत्कार सबके सामने आ उपस्थित होगा.' और वह खिलखिलाकर हँस पड़ी.

अमिता ने कहा—'तो तुम्हें क्यों रश्क होता है ?'

'मुझे तो रश्क नहीं होता. पर आजकल तुम असमर्थ ज़रूर हो.'

ज़मीर ने कार की खिड़की से सर निकाल कर कहा—'अरे कपूर, आज तो हमें नशा नहीं है जो यह खेल-कूद बेशर्म होकर किये जा रहे हो.'

कपूर ने उसे जवाब दिया—'अच्छा भाई, अब चुप हैं.' फिर शीला से कहा—'मिस्टर रस्तोगी के नाम पर तो दया करो.'

शीला ने अपना पैर कपूर के पैरों पर रख दिया.

और अकस्मात कपूर का हाथ शीला की चिकनी नंगी जाँघ पर जा पड़ा, जिस पर बहुत ही हल्के-हल्के रोयें थे.

× × ×

जब ज़मीर स्टेशन पर कार से उतरा तो अमिता ने उसे पाँच सौ रुपये का बियरर-चॅक देकर कहा—'और ज़रूरत के वक़्त मुझे लिख देना.'

ज़मीर ने चॅक जेब में रक्खा और सूटकेस उठाकर कहा—'जी, मैं लिख दूँगा.' फिर लाल और शीला से कहा—'तुम लोग इधर का काम ख़त्म करके लाहौर आना. वहाँ कुछ लोगों का, थोड़े दिनों के लिये होना ज़रूरी है. और हो सके तो एक बार मिस्टर रस्तोगी से भी मिल लेना. कानपुर अभी न आयें तो आसनसोल जाना. तुम्हें तो फ़िलहाल कोई ख़तरा है नहीं.'

शीला ने कहा—'हाँ, मैं उनसे मिलूँगी.'

'मेरा उनसे आदाब अर्ज़ कर देना। और इस बात की कोशिश करना कि वे कांग्रेस को छोड़कर हमारे साथ आ जायें.'

अमिता मुस्कराई. शीला ने कहा—'नामुमकिन मालूम होता है, पर मैं कोशिश करूँगी.'

फिर ज़मीर ने विजय से कहा—'और तुम भैया, कपूर की देख-भाल रखना. वह हमारा, आज़ाद वतन के सिपाहियों का, सिरमौर है.'

सिगरेट का ढेर सारा धुआ मुँह से निकालकर कपूर ने कहा—'मेरी फ़िकर मत करो.'

और सब लोगों को अभिवादन करके ज़मीर स्टेशन की ओर लपक गया. ट्रेन आ रही थी.

दो युवतियों और तीन युवकों को लिये हुए कार सरसराती हुई एक ओर चली गई और ज़मीर देर तक उड़ती हुई धूल देखता रहा.

२०

नारायण ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा—'इतनी जल्दी तुम आओगे, इसका मुझे कुछ भी अनुमान न था. और ताज्जुब की बात तो यह है कि मुझसे बिना कहे-सुने चले कैसे गए थे ?'

'असली बात यह है कि मैं और विजय दोनों ही इस वक़्त फ़रारी के दिन गुज़ार रहे हैं. पुलिस हमारे पीछे पड़ी है और हम लोग जेल नहीं जाना चाहते. लखनऊ और कानपुर में तो हमारी खोज तेज़ी से हो ही रही है, पर मेरा ख़याल है कि यहाँ की पुलिस भी ख़ामोश नहीं बैठी होगी, फिर भी तुम पर विश्वास करके मैं चला आया हूँ. अब हम लोगों की रक्षा का भार तुम्हारे ऊपर है.'

हँसकर नारायण बोला—'तो इसकी चिन्ता क्यों करते हो ? मैं तो उस बाप का बेटा हूँ भैया, जिसके यहाँ क्रान्तिकारी महीनों छिपे रहते थे. तुमने पहले क्यों न बताया कि तुम क्या हो, जो मैं तुम्हारे पैर छू लेता.'

कपूर हँस पड़ा, कहा—'बस, यह दून की बातें छोड़ो. तुम भाभी से भी कह देना, ताकि उन्हें कोई दिक़्क़त न हो. वे तो वैसे भी क़ाफ़ी समझदार हैं.'

'तुम दोनों ऊपर के हिस्से में एक-दो कमरे ले लो और मज़े में रहो. ऊपर बाथरूम वग़ैरह सब है. और पुलिस के डर से परेशान न होना.' तनिक मुस्कराकर फिर कहा—'इन्सपैक्टर अपना दोस्त है.'

'चलो अच्छा है !'

× × ×

सुबह साढ़े आठ का समय था. विजय आधा घंटा पहले ही, हिन्दू विश्वविद्यालय में, किसी साथी से मिलने चला गया था. कोई त्यौहार था स्त्रियों का, सो नारायण की पत्नी नीलम आज खूब बन ठनकर तैयार थी. उसके कमरे में मिठाइयों और फलों आदि से भरा, बड़ा-सा, थाल रखा था और वह इस प्रतीक्षा में थी कि कपूर गुशलखाने से स्नान करके निकले तो उसे नाश्ता कराने के बाद नारायण को मज़दूर बुलाने के लिये भेज दे. घर का नौकर सात दिन से टाइफ़ॉइड-बुख़ार में पड़ा था.

नारायण नीचे ड्रॉइंगरूम में बैठा कोई अख़बार पढ़ रहा था कि उसका दोस्त इन्स्पैक्टर हाथ में हथकड़ी झुलाता, मुस्कराता हुआ चार कान्स्टेब्लों के साथ, कमरे में आया.

नारायण ने आश्चर्य से उसे देखा और कुरसी से उठ खड़ा हुआ, बोला—'क्यों, क्या बात है ये ?'

मुस्कराकर इन्स्पैक्टर ने कहा—'तुम्हारे लिये नहीं है. तुम क्यों घबराते हो ?'

'तब इस मज़ाक के क्या मानें हैं ?'

'मज़ाक नहीं है. दरअस्ल बात ये है कि इस वक़्त तुम्हारी कोठी के चारों ओर पुलिस पड़ी है और मैं ये हथकड़ियाँ उन दोनों क्रान्तिकारी नौजवानों के हाथों में पहनाने आया हूँ, जिन्हें कपूर और विजय कहते हैं और जो आज कल तुम्हारे मेहमान हैं.'

नारायण के चेहरे पर शिकन नहीं पड़ी, कहा—'फिर वही मज़ाक़ ? तुम जानते हो कि मैंने वार-फ़न्ड में एक हज़ार रुपया दिया है. मैं अपने घर में क्रान्तिकारियों को ठहरा सकता हूँ ? मैं तो पहली बार कपूर और विजय के नाम सुन रहा हूँ.'

'तो तुम भी मुझे तङ्ग करोगे ? अरे, सीधे-सीधे बता दो नारायण, कि वे लोग किस कमरे में हैं, वर्ना घर की तलाशी लेनी पड़ेगी.'

नारायण का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था, पर वह हिम्मत नहीं हार रहा था, न उसके चेहरे पर घबराहट के ही चिह्न थे. उसने कहा—'तलाशी लेनी हो तो ले लो, पर मैं सच कहता हूँ कि यहाँ कोई नहीं है.'

'कैसे मान लूँ? ऑफ़िस में कानपूर से ज़रूरी ख़बर आई है. विजय का तो फ़ोटो भी है मेरे पास.' और इन्स्पैक्टर ने विजय का फ़ोटो नारायण को दिखाया. नारायण चिन्तित था कि कहीं ऐसे में विजय आ गया तो गज़ब हो जायेगा. लेकिन वह जानता है कि कोठी के बाहर पुलिस है और पुलिस को क्रान्तिकारी उन्हीं आँखों से देखते हैं, जिन आँखों से पुलिस क्रान्तिकारियों को देखती है. लेकिन वह कपूर के लिये बेहद परेशान है. अगर तलाशी ली गई, तो कपूर शर्तिया पकड़ा जायेगा.

'तो तुम तंग किये बिना न मानोगे? मेरी बात का विश्वास नहीं है तुम्हें?'

'विश्वास तो है, पर सरकारी ऑर्डर का क्या करूँ भाई?'

'अच्छी बात है, मैं नीलम से कह दूँ जाकर कि उसके देवर साहब घर की तलाशी लेने आये हैं.'

'कह दो भाई! मैं तो विवश हूँ. पुलिस साथ है, वर्ना यों भी चला जाता, पर दिखाने को तो काम करना ही है.'

'हाँ, हाँ साहब, दिखाने को क्यों, ख़ूब शौक़ से दिल खोलकर आप अपना फ़र्ज़ अदा कीजिये.'

नारायण धड़कते हुए दिल को लेकर ऊपर पहुँचा. फुसफुसाकर उसने नीलम से कहा—'पुलिस, कपूर और विजय की गिरफ़्तारी का वारन्ट लेकर आई है. जगदीश इस वक़्त ऑफ़ीसर है. कहता है, हर हालत में तलाशी लेनी पड़ेगी.'

नीलम का कलेजा धक से रह गया. उसका चेहरा पीला पड़ गया.

तभी उसकी निगाह मिठाइयों से भरे थाल पर पड़ी और वह मुस्करा पड़ी, कहा—'तुम कह दो जाकर कि दो मिनट बैठें; पहले नाश्ता करलें.'

'क्या होगा नीलम ?'

'ईश्वर मालिक है, घबराओ मत !'

'कहाँ है ?'

'तुम जाओ अब.' नीलम बोली और नारायण नीचे चला आया.

उसने जगदीश से कहा—'कहती हैं कि बहुत दिन बाद आये हो, पहले नाश्ता कर लो, फिर तलाशी लेते रहना. अपनी बहन के यहाँ जाने को तैयार खड़ी थीं.'

'आज बहुत ख़ुश हैं शायद !'

'हाँ, वो कुछ त्यौहार है, सो ज़रा घूमने-फिरने को ही मिल जायेगा इस बहाने.'

'ख़ैर, थोड़ी देर और सही. पुलिस तो बाहर है ही.'

'अरे, तो तुम्हारा शक दूर नहीं हुआ ?'

'अरे भाई, मेरे असिस्टॅन्ट्स भी तो हैं—उनकी तसल्ली कैसे हो ?'

× × ×

कपूर टॉवल से बाल पोंछता हुआ बाथरूम से निकला कि नीलम सामने आ गई.

कपूर ने कहा—'ज़रा तेल दो भाभी !'

'अरे' पुलिस आ गई है. ज़रा चेहरे और बदन को चुटकी बजाते, गंदा कर लो मज़दूर की तरह. और ये लो, ऊँची-ऊँची धोती और ये कमीज़ पहन इस अँगौछे की उड़री बनाकर सिर पर रख लो. मज़दूर नेता हो, तुरन्त गये-बीते मज़दूर बन जाओ. भगवान ने चाहा तो बच जाओगे.' नीलम ने अपने बीमार नौकर के मैले-कुचैले कपड़े उसे दे दिये और ख़ुद अपने कमरे में जाकर सामान ठीक करने लगी. फिर ज़ोर से कहा—'अरे, मंगल ! ले, ये थाल उठा ले.'

और कपूर मज़दूर बनकर सामने आ गया. जिन्होंने उसे जीवन में एक-दो बार ही देखा होगा, वे नहीं पहचान पाते कि वह कपूर ही है. उसने थाल उठा लिया और थाल की छाया उसके चेहरे पर हो गई.

चलते-चलते नीलम ने दुर्गा की तस्वीर की ओर हाथ जोड़कर बड़े दयार्द्र भाव से कहा—'मा, मेरी लाज रखना।'

कमरे से निकलकर जब नीलम मंगल-मज़दूर बने हुए कपूर के आगे-आगे जा रही थी, तो उसे ज़ीने पर किसी के जूतों की आवाज़ सुनाई पड़ी.

ज़ीने के बीच की सीढ़ियों पर जगदीश से भेंट हो गई, तो मुस्करा-कर बोली—'तुम्हें चैन नहीं पड़ा ज़रा देर ?'

शोख़ी से जगदीश ने कहा—'आज तो बड़े ठाठ हैं !'

नीलम ने ऊपर की सीढ़ी पर खड़े कपूर की ओर देखा और डाट कर कहा—'चलता है कि नहीं; तू क्या सुन रहा है खड़ा-खड़ा ?'

और सीढ़ियाँ उतर कर कपूर नीचे पहुँच गया.

जगदीश ने भी कपूर की ओर देखा और नीलम से कहा—'बड़ा गठीला जवान पाल रक्खा है.'

मुस्कराकर नीलम ने कहा—'बड़ा वैसा मज़ाक करते हो तुम !'

जगदीश ने कहा—'नाश्ता कराये बिना ही चल दीं ?'

जगदीश का हाथ छूकर नीलम ने कहा—'मैं अभी-अभी आती हूँ. लली राय-साहब के यहाँ आई है, ज़रा उसके बच्चों को ये मिठाई दे आऊँ; तब तक तुम आओ, बैठो. और हाँ, क्यों जी, हमारे यहाँ तलाशी लेने आये हो ?'

मुँह बना, लज्जित होकर जगदीश बोला—'ये तो डायरी की ख़ाना-पुरी और हुक्मों की तामील है, सो करनी ही होगी.'

नीचे देखकर, कपूर से नीलम ने कहा—'बैठक में बाबू जी हैं—देख मंगल, उनसे कह दे कि हम जा रहे हैं, अभी बीस मिनट में आते हैं, तब तक जगदीश बाबू को जाने न दें.'

कपूर परदा उठाकर ड्रॉइंग-रूम में चला गया और नीलम जगदीश को हाथ पकड़ कर नीचे ले आई.

ड्रॉइंग-रूम के दरवाज़े पर खड़े होकर उसने कहा—'सुनते हो ? मैं अभी आती हूँ. लली चली जायेगी इसीसे जल्दी है. जगदीश बाबू को अभी जाने न देना; नाश्ता करके जाने पायेंगे.' फिर कहा—'चल रे मंगल, वहीं जाकर बैठ रहा तू तो !'

उधर से कपूर आया और इधर हाथ से बढ़ावा देकर नीलम ने जगदीश को ड्रॉइंग-रूम के अन्दर दाख़िल कर दिया.

दो मिनट बाद इधर नीलम और कपूर सड़क पार कर रहे थे और उधर पुलिस नारायण के बँगले को घेरे पड़ी थी. बँगले के अंदर पुलिस-इन्स्पैक्टर जगदीश, नारायण के सामने की कुरसी पर बैठा, हथकड़ियाँ झुला रहा था.

× × ×

घन्टे भर के बाद जब नीलम वापस आई, तो नारायण ने कहा—'नीलम ! तुम्हारे पाँव छू लूँ लाओ ! तुमने आज मेरी लाज बचाई और देश के एक लाल की रक्षा की.'

गहरी साँस लेकर नीलम ने कहा—'परमात्मा को धन्यवाद !'

'जगदीश ने मकान की तलाशी लेने के बाद मुझसे कहा कि नीलम धोखा दे गई. कहता था कि उन दोनों पर एक-एक हज़ार रुपए का इनाम है, वह मारा गया.'

'तो दो हज़ार तुम दे देना उसे.'

'कपूर और विजय का सामान उसने देखा, पर ले कुछ भी न गया, क्योंकि इससे हम लोग फँस जाते. शाम को वह तुमसे मिलने आयेगा. लेकिन विजय ? उसका क्या होगा ?'

'मैंने कपूर को बता दिया है कि वह ब्रोचा होस्टल में है.'

२१

तीन दिन के बाद कपूर और विजय बलिया में थे और उनके हाथों में एक-एक अटैची-केस था. इस समय दोनों सिक्ख बने हुए थे और किन्हीं बीमा-कम्पनियों का एजेन्ट बताकर अपना परिचय दे रहे थे.

सात बजे वाली ट्रेन देखने के लिए, उन्हें अपने होटल के कमरे में, एक परचा मिला था और वे दोनों नियत-समय पर स्टेशन पहुँच गए थे. परचे पर जो निशान बना था, उसे कपूर नहीं पहचानता था. विजय वह निशान पहचानता है, यह उसने बाद में बताया—

'कुछ कह सकते हो विजय, कि वह चिट किसने भेजी है ?'

'कप्तान ने.'

'क्या अनिल ने ? अनिल बाबू क्या हम लोगों की गति-विधि पर इतना ध्यान रखते हैं ?'

'यह उनका फ़र्ज़ है. वे हम सबको जानते हैं, पर हममें से बहुत कम लोग ऐसे हैं, जो उन्हें जानते हैं.'

'उन्होंने क्यों बुलाया है ?'

'यह अभी नहीं कहा जा सकता.'

'पर अभी तो हमें दो-ही दिन यहाँ आए हुए हैं, उन्हें कैसे पता लगा कि हम यहाँ मौजूद हैं ? कैसे उन्हें यह मालूम हुआ कि हम किस होटल के किस कमरे में ठहरे हुए हैं ? और कौन वह परचा वहाँ डाल गया ?'

'यह सब मैं नहीं जानता, और न जानने की ज़रूरत ही है.'

'इसका मतलब यह है कि जब उन्हें हमारे यहाँ होने की बात का पता है, तो पुलिस को भी होगा.'

विजय हँसा, कहा—'पुलिस तो चोर-डाकुओं का पता लगाने में ही परेशान हो जाती है, फिर हम तो.......'

कपूर चुप रहा, कुछ सोचता रहा—

अनिल को आज वह देख लेगा, बहुत दिनों की साध पूरी हो जायेगी. जिसे देखने को वह तरसता रहा है, वह आप ही उसे दर्शन देने आ रहा है. क्या ख़ूब, कुआँ प्यासे के पास चला आ रहा है! लेकिन यह उसकी समझ में नहीं आया कि कप्तान उससे क्या काम लेना चाहता है.

ट्रेन आई. कपूर और विजय जिस जगह खड़े थे, उसके सामने फ़र्स्ट-क्लास का सर्वेन्ट्स-कम्पार्टमेंन्ट पड़ा. गाड़ी रुकते ही उसमें से दो चपरासी उतरे. विजय की निगाह उन पर पड़ी और कपूर ने भी, साथ ही, उन्हें देखा. चपरासियों के वेष में लाल और दत्त थे, जिनकी आँखों का भाव कपूर और विजय, दोनों ही, ने समझा और उनके पीछे-पीछे फ़र्स्ट-क्लास-कम्पार्टमेंन्ट में दोनों चले गये.

सूट-बूट, कॉलर-टाई से सुसजित एक अधेड़-व्यक्ति बर्थ पर बैठा अख़बार देख रहा था. उसकी आँखें हलके रंग के शीशोंवाले चश्मे से ढकी थीं और गोरे चहरे पर तेज था. चारों व्यक्तियों को कमरे में आया देख, उसने अख़बार रख दिया और स्वाभाविक मधुर स्वर में कहा—'बैठो!'

किसी ने किसी को अभिवादन नहीं किया. चारों उसकी सीट के सामने वाले बर्थ पर बैठ गए.

कपूर के ओंठ काँपे, वह धीरे से उस व्यक्ति की ओर देखकर बोला—'अनिल बाबू!'

'इस समय मेरा नाम अनिल नहीं है कपूर, मुझे हैराल्ड थॉमस कहो. मैं ऐंग्लो इंडियन हूँ!' और वह धीरे से मुस्करा दिया.

कपूर उसकी ओर बहुत अजीब ढंग से देखता रहा.

हैराल्ड थॉमस नामधारी अनिल ने गम्भीर स्वर में कहा—'दत्त और कपूर यहाँ के लोगों से मिलने के बाद कल रात मोटर से गोरखपुर जायेंगे. वहाँ हमारे पाँच साथी नागपुर से आये हैं. स्टेशन के बाहर उनमें से एक मिलेगा. विजय और लाल को आज ही मिर्ज़ापुर जाना होगा. इतवार की रात को अमितादेवी की गंगा-किनारे-वाली कोठी में सबको एकत्र होना है.'

कपूर ने कहा—'मैं गोरखपुर जाकर क्या करूँगा कप्तान ?'

'यह वहीं मालूम हो जायेगा. लेकिन यह मैं अभी बता दूँ कि अब ख़ाली हाथ काम नहीं करना होगा. बहुत जल्द तुम्हें अपने हाथों से पिस्तौल चलाने और बम फेकने का मौक़ा मिलेगा.' शान्त-स्निग्ध-गम्भीर-स्वर में अनिल ने कहा.

विजय बोला—'और मिर्ज़ापुर में मेरे लिए क्या आज्ञा ज़ारी होगी ?'

'तुम्हें लाल बतायेगा, पर याद रक्खो कि काम ख़तरे का है और लिस हम सबकी तलाश में है.' फिर लाल से कहा—'चाय-वाय लाओ ज़रा.'

लाल चला गया, इस बीच डिब्बे में शान्ति रही—जब वह चाय वग़ैरह का ट्रे लेकर आया, तो अनिल ने कहा—'एक बात सब लोग और सुनो, ख़ास तौर से कपूर, तुम सुनो कि अब खेल-कूद का समय नहीं रहा. रंगरेलियाँ तो फिर भी मनाई जा सकती हैं, पर काम फिर नहीं हो सकेगा. वक़्त चला जायेगा तो फिर न आ सकेगा.'

सब चुप थे. चाय पान आरम्भ हुआ.

गाड़ी ने सीटी दी तो अनिल ने सौ-सौ रुपए के आठ नोट विजय को दे दिये और कहा—'मेरी एक भी बात भूलना मत.'

गाड़ी चलने लगी, कपूर, विजय, लाल और दत्त उतर पड़े.

सर्वेन्ट्स-कम्पार्टमॅन्ट में कोई न रहा.

२२

कपूर को चार सौ रुपये देकर विजय और लाल कार द्वारा मिर्ज़ापुर रवाना हो गये.

दत्त और कपूर ने शाम को होटल की सीढ़ी से उतरते समय देखा कि जो व्यक्ति ऊपर आ रहा है वह, और कोई नहीं, शंकर है !

शंकर छोटी-छोटी ईरानी मूँछें और नुकीली दाढ़ी रखे हुए था. कपूर ने सीढ़ी पर उसका हाथ पकड़ते हुए कहा—'शंकर, तुम यहाँ ?'

शंकर गले से लग गया, फिर वहीं खड़े होकर धीरे-धीरे कहा—'जेल से भाग आया हूँ, पुलिस पीछा कर रही होगी.'

कपूर ने कहा—'कुछ हर्ज़ नहीं. हमारे साथ रहो. कल हम लोग गोरखपुर जा रहे हैं, तुम भी साथ चलना. जब तक हम लोग पुलिस से बचे रहेंगे, तब तक तुम्हें भी आँच न लगेगी.'

शंकर ने कहा—'मुझे माफ़ कर देना कपूर, मैंने तुम्हारे साथ इस जीवन में बहुत अन्याय किये हैं. आगे भी ग़लतियाँ हो सकती हैं ; पर मैं ज्यूनियर हूँ, तुम सीनियर होने के नाते मुझे हमेशा माफ़ कर दिया करना.'

ज़ोर से शंकर के कन्धे पर थपकियाँ देते हुए कपूर ने कहा—'कैसी बातें करते हो !'

दत्त बोला—'चलो, अच्छा.'

शंकर ने कहा—'मैं तो डर रहा हूँ, कहीं न चलूँगा. यहीं बैठा तुम लोगों की राह देखूँगा.'

कपूर ने जेब से चाभी निकालकर शंकर को दी, कहा—'तुम

पाँच नम्बर के कमरे में हमारा इन्तज़ार करना. हम लोग चालीस मिनट में ही वापस आ जायेंगे.'

शंकर 'अच्छा' कहकर ऊपर चला गया.

सड़क से गली में मुड़ते हुए दत्त ने कपूर से कहा—'मुझे शंकर पर विश्वास नहीं है कपूर !'

'छोड़ो ये बातें.'

'कहीं वह पुलिस से मिला हो ?'

'मुझे क़तई विश्वास नहीं है कि वह इतना पतित हो सकता है.'

'अविश्वास करने की इच्छा तो मेरी भी नहीं है, पर विश्वास भी न कर लेना चाहिए.'

'अच्छा, चलो भी.'

× × × ×

शंकर ने कमरे की एक-एक चीज़ देख डाली. पर सन्देह करने लायक़ कुछ भी न मिला.

दस मिनट बाद एक खद्दरधारी युवक ने कमरे में प्रवेश किया.

शंकर ने उसे देखते ही कहा—'सामान तो कुछ नहीं मिला, पर शिकार बीस-बाइस मिनट बाद हाथ लग जायेगा.'

'ठीक है.'

'तुम अपने आदमियों को तैयार कर लो. इस बार अगर वे लोग निकल जायें तो मेरा दोष नहीं होगा. मैं अपना इनाम ले लूँगा.'

'मंज़ूर है. इस बार ऐसा इन्तज़ाम है कि वे लोग निकल ही नहीं सकते. और जो निकल गये तो समझना कि भारतीय-पुलिस का हर आदमी नपुंसक है.'

'तो मैं चलूँ. अगर मैं रहूँगा तो भविष्य में मुझे गोली का शिकार होना पड़ेगा. ये लोग बड़े भयानक होते हैं. इसके अलावा, और भी काम है.'

'अच्छी बात है, तुम जाओ.'

'एक बात और—कपूर के साथ, विजय नहीं, दत्त है. विजय शायद भाग गया है.'

'कुछ हर्ज़ नहीं, इस बार यही दोनों सही.'

'मैं चलता हूँ, इन्स्पैक्टर साहब!'

'कहाँ मिलोगे?'

'कल लखनऊ में.'

और इन्स्पैक्टर ने दस का एक नोट देकर शंकर को बिदा किया.

× × × ×

चिक उठाकर ज्यों ही कपूर और दत्त ने कमरे में प्रवेश किया कि किवाड़ के पीछे छिपा हुआ वही खद्दरधारी युवक पिस्तौल तान कर उनके सामने खड़ा हो गया जिसे शंकर ने इन्स्पैक्टर कहकर पुकारा था.

दत्त ने पिस्तौल निकालने का प्रयत्न करते हुए कहा—'ओह, आप हैं, इन्स्पैक्टर साहब!' और पैर से कपूर के पैर को छू दिया. कपूर ज्योंही मुड़ने को हुआ कि पीछे से दो आदमी पिस्तौलें लिए आ खड़े हुए और कपूर का रास्ता रुक गया.

इन्स्पैक्टर ने हँसते हुए कहा—'मिस्टर दत्त, पिस्तौल न निकालिए और मिस्टर कपूर, क्या आप यहाँ से जीवित निकल जाने की उम्मीद करते हैं?'

वह पास आया और हथकड़ियाँ निकालकर दोनों के हाथों में भर दीं.

दत्त ने ज़ोर से एक लात इन्स्पैक्टर के पेट पर मारी. इन्सपैक्टर कराहता हुआ पीछे गिरा कि उसके साथ वाले लोगों ने कपूर और दत्त को कमरे के अन्दर ढकेलते हुए गालियाँ बकना शुरू किया.

इन्स्पैक्टर उठा और दत्त के गोरे-गोरे कमसिन गालों पर इतने चाँटे मारे कि वह अधमरा हो गया और खून उसके गालों पर नीला

होकर जमने लगा. कपूर से यह न देखा गया, बोला—'इन्स्पैक्टर, तुम हिन्दुस्तानी होकर हमारे साथ यह अन्याय करते हो, पर हम हिन्दुस्तानी होने के नाते तुम लोगों को सदा क्षमा कर देते हैं.

'चुप रह बदमाश कहीं के !'

कपूर ने चाहा कि उसके सिर पर हथकड़ियों से कसे हुए हाथ दे मारे, पर इन्स्पैक्टर के एक साथी ने उसे पकड़ लिया. दाँत किट-किटाकर इन्स्पैक्टर ने एक कोने में पड़े, टूटी कुरसी के, हत्थे को उठा-कर कपूर की कोहनी पर ज़ोर से मारा. कपूर तिल-मिलाकर बैठ गया.

कुछ ही देर बाद पुलिस के छः कॉन्स्टेबिल आये और कपूर व दत्त को लेकर नीचे चले गये.

होटल में ठहरे लोगों के अलावा नौकरों और मैनेजर को भी सब हाल मालूम था पर पुलिस के सामने कौन चूँ करता !

कपूर और दत्त गिरफ़्तार कर लिए गए.

२३

रविवार की रात है! एक लम्बी मेज़ के चारों ओर सूट-बूट-धारी-युवक और फ़ैशनेबुल-युवतियाँ बैठी हैं. शीला और अमिता के बीच की कुरसी ख़ाली है. अमिता के बाज़ू रस्तोगी, रञ्जन, सतीश, केशव, धीरेन्द्र और जयराज याज्ञिक बैठे हैं. शीला के बाज़ू ज़मीर, गोपालराव सावरकर, विमला पण्डित और ऐय्यर बैठे हैं. सामने की ओर, बीच में, दो कुरसियाँ ख़ाली पड़ी हैं और उनके इधर-उधर लाल और विजय बैठे हैं. विजय के बग़ल में हरिहरकृष्णप्रसाद सिन्हा और सिन्हा के बग़ल में कुमारी मोहिनी वाटल और मिस सेठ बैठी हैं. लाल के पास जोशी बैठा है.

इस तरह अठारह व्यक्ति उपस्थित हैं और तीन कुरसियाँ ख़ाली पड़ी हैं. कमरे में घोर-निस्तब्धता छाई हुई है. दरवाज़ों पर बाहर से आती हुई रोशनी पड़ रही है और अन्दर केवल एक बड़ी मोमबत्ती, मेज़ पर रखे सिगरेट के डिब्बे के ऊपर रखी, धीरे-धीरे जलते हुए गल रही है. मोमबत्ती की टिमटिमाती हुई रोशनी में, प्रत्येक बैठे हुए व्यक्ति के सामने, मेज़ पर एक-एक बढ़िया पिस्तौल पड़ी चमक रही है.

ज़मीर ने घड़ी देखकर कहा—'साढ़े बारह बज चुके हैं, इसलिए शीलादेवी से मेरी इल्तिजा है कि वे मीटिंग की कार्यवाही शुरू कर दें.'

शीला उठकर खड़ी हुई, सबकी नज़रें उसी की ओर उठ गईं. धीरे-धीरे उसने कहा—'मुझे अफ़सोस है कि मीटिंग की कार्यवाही, कप्तान की ग़ैरहाज़िरी में, शुरू नहीं की जा सकती.'

ज़मीर ने खड़े होकर कहा—'लेकिन कप्तान के आने का वक़्त बीत चुका है.'

'मैं नहीं कह सकता कि वे किसी को आने का वक़्त दे सकते हैं. मेरा ख़याल है कि हम लोग उस वक़्त तक उनका इन्तज़ार करेंगे, जब तक आसमान में अँधेरा है.'

ज़मीर बैठ गया.

शीला ने कहा—'दूसरी बात यह है कि इस मीटिंग का क्या उद्देश्य है यह कप्तान के अलावा दूसरा कोई आदमी नहीं जानता. और चूँकि यह हमारी पार्टी की मीटिंग है, इसलिए हम फ़ालतू-बातें करने का अधिकार नहीं रखते. अच्छा हो कि आप लोग, चुपचाप बैठे, कप्तान का इन्तज़ार करें.'

'लेकिन हम कपूर और दत्त के लिए कब तक कुछ न सोचें ?' विजय बैठे-बैठे ही बोला

शीला ने कहा—'आप लोग जान गए हैं कि कपूर और दत्त गिरफ़्तार हो चुके हैं. ऐसे में अगर आप जादू से लखनऊ का जेल तोड़ सकें तो कपूर और दत्त इस मीटिंग में भी शरीक़ हो सकते हैं.'

विजय लज्जित और दुखी होकर बैठ गया. रस्तोगी उठा तो सबने उसकी ओर देखा, रस्तोगी ने कहा—'यह मामला यों उड़ा देने का नहीं है मिस सरकार ! कपूर को हर हालत में हमारे बीच होना आवश्यक है. आपको जानना चाहिए कि यह यू० पी० का नगर है और सूबए यू० पी० कपूर पर अभिमान करता है.

शीला ने कहा—'मुझे क्षमा करें मिस्टर रस्तोगी, कप्तान सब प्रबन्ध करेंगे इसका हमें विश्वास करना चाहिए.'

शीला बैठ गई, तो कमरे में सन्नाटा छा गया. अमिता ने एक बार उदास आँखों से विजय को देखा, दूसरी बार शीला को, तीसरी बार रस्तोगी को और फिर सबकी तरह नीचा मुँह करके पिस्तौल पर हाथ फेरने लगी.

शीला ने वैसे ही कहा—'श्रीमती अमिता देवी, पिस्तौल को हाथ न लगाइये.'

अमिता ने धीरे से हाथ खींच लिया. इस बार उसने किसी ओर भी न देखा.

जब सामने दीवार पर टँगी हुई घड़ी में बारह बजकर पचास मिनट हुए, तो बाहर पहरे पर खड़े दो व्यक्तियों में से एक ने अन्दर आकर सूचना दी कि कप्तान आ गए हैं.

वह पहरेदार बाहर चला गया और कमरे में बैठे हुए सब व्यक्ति उठकर खड़े हो गए.

क़ीमती कपड़े की सफ़ेद बुश-शर्ट, कॉर्ड राइट का पैन्ट और नाइट-कैप लगाए, अनिल ने कमरे में प्रवेश किया. उसके पीछे शंकर और वह इन्स्पैक्टर था जिसने कपूर को बलिया में गिरफ्तार किया था. इन दोनों व्यक्तियों के हाथों में हथकड़ियाँ पड़ी थीं. इनके पीछे हट्टा-कट्टा एक दम स्याह रङ्ग का एक आदमी और था, जिसके क्ली शेव्ड चहरे पर मोम-बत्ती की हलकी रोशनी पड़ रही थी और तेल की-सी चमक ज़ाहिर कर रही थी, बनियान और तहमद पहने हुए था, पैरों में पेशावरी सैन्डिल थे. हाथ में चमचमाता हुआ छुरा था.

'बैठो!' अनिल ने कहा और जब सब लोग अपनी-अपनी कुरसियों पर बैठ गए, तो अनिल शंकर और इन्सपेक्टर के पास जा खड़ा हुआ. काले रंगवाला हट्टा-कट्टा आदमी ज़रा पीछे खिसक गया.

अनिल नें कहना आरम्भ किया—'आज जौलाई की बारह तारीख़ हम लोगों की पार्टी के इतिहास में बहुत बड़ी जगह बनायेगी. गंगा के किनारे की यह ज़मीन और इसके मालिक हमारे लिए जो कुछ कर रहे हैं, वह सब को मालूम है, लेकिन वे हम लोगों का साथ क्यों दे रहे हैं और हमारे मिशन के लिए क्यों हज़ारों रुपए ख़र्च कर रहे हैं, यह मेरे और श्रीमती अमिता देवी के अलावा कभी कोई नहीं जान सकेगा, न

किसी को जानने की ज़रूरत ही है. मैं यह भी बता दूँ कि इस वक़्त, जब कि हमें सात लाख रुपये की ज़रूरत इस सूबे के लिये है तब, दूसरे सूबों की तरह हमें ट्रेन-डकैतियाँ नहीं करनी पड़ेंगी. बड़े-बड़े नेता हमारा साथ नहीं देंगे, क्योंकि हम हिंसा पर विश्वास करते हैं, लेकिन हमें भरोसा है कि हम लोग अपनी ताक़त के आसरे पर ही काम करेंगे और कामयाब होंगे. यहाँ हिन्दुस्तान के हरेक प्रान्त से आये हुए वे बहादुर-व्यक्ति बैठे हैं, जिनके हाथों क्रान्ति का आरम्भ होगा. अभी हम दिन या तारीख़ की घोषणा नहीं करेंगे क्योंकि कुछ तैयारियाँ बाक़ी हैं.

'हमारे कुछ साथियों ने राय दी थी कि हम किसी विदेशी-हुकूमत से सहायता की प्रार्थना करें, लेकिन इसे हम बुज़दिली समझते हैं, क्योंकि हमें अपने आप पर, अपनी योजना पर और अपनी कार्य-प्रणाली पर विश्वास है. हम जानते हैं कि हमारे काम में देर हो रही है, लेकिन इसकी वज़ह सिर्फ़ यही है कि हम अभी तैयार नहीं हैं, हालाँकि संगठित हैं.

'आज से ठीक एक माह बाद हरेक प्रान्त के प्रतिनिधि, अपने प्रान्तों के बारे में इसी जगह पर बैठकर अपनी-अपनी रिपोर्ट पेश करेंगे और उसी दिन हम लोग तय करेंगे कि काम किस तरह और किस दिन से शुरू किया जायेगा.

'अब मैं ख़ास बात कहूँ—आप लोगों के सामने यह जो दो भले-मानुस हथकड़ियाँ पहने हुए खड़े हैं, इनमें से शंकर को तो यहाँ बैठे हुए कुछ व्यक्ति पहचानते ही हैं, लेकिन दूसरे सज्जन को शायद न पहचानते हों. ये ख़ुफ़िया-विभाग के इन्स्पेक्टर हैं! दोनों जो हथकड़ियाँ पहने हैं, वे इन्स्पेक्टर साहब की ही जेब से प्राप्त हुई हैं. तीसरा आदमी इकराम है जिसने मुझे इस, तीन दिन के, सफ़र में बहुत मदद दी है.'

इकराम ने झुककर अभिवादन किया. कमरे में सन्नाटा छाया रहा.

फिर अनिल की गम्भीर, मधुर और धीमी आवाज़ कमरे की

नीरवता में गूँजने लगी—'मैंने इन लोगों के बारे में जो दो चार बातें कही हैं, इससे पहले मैं जो कुछ कह चुका हूँ, वह मैंने जानबूझ कर इन लोगों के सामने कहा है, क्योंकि ये लोग कुछ ही देर के मेहमान हैं.' और अनिल ने शंकर और इन्स्पेक्टर की ओर देखा. दोनों व्यक्तियों के चेहरों पर सफ़ेदी फैल गई और भयभीत-नेत्रों से उन्होंने अनिल की ओर देखा.

शंकर ने काँपते हुए कहा—'अनिल बाबू,........' लेकिन उसकी बात सुनने से पहले ही अनिल ने हाथ उठाकर उसे रोकते हुए, कुरसियों पर बैठे, सब साथियों की ओर बारी-बारी से देखा—सब लोगों की दृष्टि कभी उन दोनों अपराधियों की ओर उठी, कभी अनिल की ओर. और तब सब की आँखें अपने-अपने सामने पड़ी पिस्तौलों पर जम गईं.

तब अनिल ने कहा—'आप लोग जानते होंगे कि कपूर और दत्त की गिरफ़्तारी के ज़िम्मेवार यही लोग हैं. बल्कि शंकर कहीं अधिक, क्योंकि इसने विश्वासघात किया है.'

शंकर के पैर काँप रहे थे, उसने विनीत-भाव से अनिल की ओर देखकर कहा—'क्या मैं बैठ सकता हूँ ?'

'ज़रूर बैठ सकते हो, लेकिन क्या तुम इस तक़लीफ़ को कलेजे में पिस्तौल से निकली गोली लगने की पीड़ा से ज़्यादा समझ रहे हो ?'

और शंकर गिर पड़ा.

लेकिन किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया. इन्स्पैक्टर बैठ गया. इकराम वैसे ही दैत्य की तरह खड़ा रहा.

अनिल गोपालराव सावरकर गया. गोपालराव कुरसी छोड़कर खड़ा हो गया, तो अनिल ने पू ।—'या लोका बद्दल तुमच्च काय मत आहे ?'

गोपाल राव ने अनिल की ओर देखकर कहा—'अनिल बाबू !'

हाथ से रोकते हुए अनिल ने धीरे से कहा—'आपल्या बाबतीत

जो निर्णय झाला तो या लोकाना माहीत पड़ावा, असी माझी इच्छा नाहीं.'

आश्चर्य से अनिल की ओर देखते हुए गोपालराव ने कहा—'काय आपण यांन्हा जीवंत सोड़ून इच्छिता ?'

मुँह ऊँचा करके अनिल ने कहा—'आपले मत काय आहे ते भी जाणूँ इच्छितों.'

गोपालराव ने इत्मीनान के साथ कहा—'ते जीवन्त राहु अशी माझी इच्छा नाहीं.'

अनिल ने फिर धीरे से कहा—'मग ?'

गोपालराव ने पिस्तौल उठाकर कहा—'मी यांन्हां गोड़ी घालावयाला तैयार आहे.'

अनिल ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा—'बसा.'

तब जयराज याज्ञिक के पास आकर धीरे से बोला—'तमे शूँ कोंछो ?'

जयराज खड़ा हो गया और उसने भी धीमे स्वर में ही उत्तर दिया—'म्हारा विचार थी, यॉवनों जीवित रहवो उचित न थी.'

अनिल ने मुस्कराकर कहा—'बेसों.' और तब वह मेज़ के चारों ओर बैठे व्यक्तियों की ओर देखते हुए घूमकर शीला के पास जा खड़ा हुआ—बैठे हुए लोगों में सब स्त्रियाँ शान्त थीं. पुरुषों में, विजय और रस्तोगी को छोड़, सब उत्तेजित हो रहे थे.

अनिल ने धीरे से कहा—'तुमी एई ऑपोराधीदेर बिशॉय की भाबो ?'

शीला ने वैसे ही बैठे-बैठे कहा—'आपनार की मॉतलॉब ऑनिल बाबू ?'

'एके की गूली मेरे देबा होबे ?'

दृढ़ स्वर में शीला ने कहा—'ना.'

मुस्करा के अनिल बोला—'आमी जानी, तुमी नारी एबोंग, तोमार छिदॉय कोमॉल आर भाबुक हॉय !'

शीला के चेहरे पर उत्तेजना के भाव थे, लेकिन जब तक कि वह कुछ कहने के लिये तत्पर हो, अनिल मुस्कराता हुआ, शीघ्र ही, उसके सामने से, हट गया.

वह शंकर के पास जा खड़ा हुआ. शीला, अमिता, विमला पण्डित, मोहिनी वाटल, मिस सेठ, विजय और रस्तोगी ने आँखें झुका लीं, अन्य उपस्थित-व्यक्ति उत्सुकता से कप्तान की ओर देख रहे थे.

अनिल की गम्भीर और कोमल आवाज़ सुनाई पड़ी—'शंकर ! तुम देश के प्रति अपना क्या कर्त्तव्य समझते हो ?'

शंकर ने अनिल को घूरते हुए कहा—'क़ुर्बानी.'

ज़ोर से अनिल ने ताली बजाई और खिलखिलाकर हँस पड़ा. वहाँ बैठे हुए लोगों ने उसे पहली बार इस तरह हँसते हुए देखा.

एकाएक अनिल गम्भीर हो गया, जेब से पिस्तौल निकाल कर हाथ में झुलाते हुए कहा—'हम लोग तुम्हें अपने क़ानून के मुताबिक अपराधी समझते हैं, तुमने हमारे एक साथी के साथ भीषण-विश्वासघात किया है, तुम इससे इन्कार नहीं कर सकते.'

शंकर एकदम उठ खड़ा हुआ, उसकी आँखें चमक रही थीं, कहा—'मैंने इन्कार नहीं किया. कपूर कभी जेल से छूटकर आये तो मेरी ओर से क्षमा माँग लें. यक़ीन है, वह मुझे क्षमा कर देगा; क्योंकि उससे ज़्यादा मेरी परिस्थिति, यहाँ बैठा हुआ, अन्य कोई व्यक्ति नहीं जानता, लेकिन मेरे बाद मेरी स्त्री, भाई और बच्चे की देख-भाल आप लोगों को करनी होगी.' और उसने आगे बढ़कर कहा—'मेरी हथकड़ियाँ खोल दीजिये और पिस्तौल मुझे दीजिये. और किसी के हाथ मेरे ख़ून से रँगे, यह मैं नहीं चाहता.'

इन्स्पैक्टर अवाक् होकर शंकर की ओर देख रहा था.

अमिता ने खड़े होकर कहा—'अनिल बाबू, शंकर को माफ़ नहीं कर सकते ?'

अनिल ने गम्भीर स्वर में कहा—'नहीं.'

अमिता ने कहा—'क्या हमारी ही तरह ये भी इन्सान नहीं हैं—क्या इनको खाने की ज़रूरत नहीं है? क्या इस तरह के श्रेणी-विभाजन और वर्ग-भेद के होते हुए आप आज़ादी हासिल कर सकेंगे?'

मुस्कराकर अनिल ने कहा—'मैं तुमसे ज़्यादा समझता हूँ अमिता! बैठ जाओ.'

अमिता बैठ गई. अनिल ने इन्स्पैक्टर से कहा—'तुम भी मरना चाहते हो?'

धीरे से उसने कहा—'मुझे छोड़ दीजिए.'

अनिल मुस्कराया, कहा—'इसलिये कि हम लोगों की ज़िन्दग़ी से खिलवाड़ करने का मौक़ा मिले?'

'आप यक़ीन करें तो कहूँ कि अब आप लोगों के बीच मैं कभी न आऊँगा.'

अनिल ने इकराम की ओर देखकर कहा—'शंकर की हथकड़ी खोल दो.'

हथकड़ी खुल जाने पर और पिस्तौल हाथ में आ जाने पर भी उसके चेहरे पर ज्योति थी. उसने अमिता की ओर देखकर कहा—'मुझे क्षमा करना बहन!'

अमिता रो पड़ी और आँखें नीचे करलीं. जो आँखें झुकाये बैठे थे, वे वैसे ही प्रस्तर-प्रतिमा की तरह बैठे रहे.

और पिस्तौल की नली कनपटी पर भिड़ाकर शंकर ने आँखें बन्द करलीं. क्षण भर बाद घोड़ा दबा दिया.

'पिट्' से आवाज़ हुई और आश्चर्य से आँखें फाड़कर शंकर ने अनिल की तरफ़ देखा, वह मुस्करा रहा था. और सब लोग—शीला, अमिता और रस्तोगी आदि—भी आश्चर्य से उधर ही देखने लगे और शंकर ने अनिल के पैरों पर मस्तक रख दिया.

अनिल ने प्रेम से हाथ पकड़कर उसे उठाया और अपनी कुरसी पर, जो कि शीला और अमिता के बीच में खाली पड़ी थी, ला बिठाया.

फिर अपने साथियों से कहा—'हमारा सबसे मज़बूत साथी, जिन्दा-शहीद शंकर, पूजनीय है. मैंने इसे समझ लिया है और इसके साथ न्याय किया है.' फिर शीला और अमिता की ओर देखकर वह मुस्करा दिया.

× × × ×

अनिल ने कहा—'विजय और लाल का काम, उम्मीद है कि पूरा होगा. कपूर और दत्त आख़िरी बार इन्हीं लोगों की देख-रेख में थे इसीलिये उन्हें लाने का काम इन्हीं को सौंपता हूँ.'

फिर अमिता से कहा—'तुम्हारी कोठी के उस तैखाने में, एक महीने तक, इन्स्पैक्टर-साहब रहेंगे. एक आदमी इनकी हिफ़ाज़त करेगा. अगली मीटिंग के बाद इन्हें छोड़ा जा सकता है.'

और अनिल ने घड़ी देखते ही, शीघ्रता से, कमरा छोड़ दिया.

२४

दोनों साथियों ने घोर परिश्रम करके एक खाट को खोल डाला और पाये अलग करके, पाटियों को, टीन की खपच्चियों की सहायता से कसकर ऐसा बाँधा कि ऊपर के रोशनदान तक पहुँचने के लायक़ एक लम्बा लठ-सा बन गया. क़ैदी-पहरेदार कुछ ही क्षण पहले ताला-जंगला और क़ैदियों की संख्या का ऐलान करके जा चुका था और कम से कम पन्द्रह मिनट तक पुनः उसके वापस आने की कोई आशा नहीं थी. तभी दो का घण्टा बोला और कपूर ने दत्त से कहा—'समय बहुत कम है. वे लोग हमारा इन्तज़ार कर रहे होंगे.'

इन लोगों को केवल पन्द्रह मिनट के अन्दर, लट्ठे के सहारे ऊपर चढ़कर रोशनदान की जाली काटनी थी, छत के पिछवाड़े से नीचे उतरना था और दीवार के पास से लुकते-छिपते, नींबू की उन झाड़ियों तक पहुँचना था, जहाँ विजय और लाल, रस्सी की सीढ़ी लटकाये हुए, जेल की चहारदीवारी के उस पार खड़े इनकी प्रतीक्षा कर रहे थे.

यह बिलकुल सच है कि कपूर और दत्त ने इतना काम पन्द्रह मिनट के अन्दर ही समाप्त कर लिया. लेकिन यह कहना कठिन है कि इतना काम इतनी जल्दी कैसे पूरा हुआ. जेल की चहारदीवारी के उस हिस्से में जहाँ नींबू के पेड़ों का घना झुरमुट है, जब ये लोग सँभलते हुए पहुँचे तब देखा कि रस्सी की सीढ़ी लटक रही है. दोनों शीघ्र ही दीवार पर जा पहुँचे और सीढ़ी खींचकर उसे बाहर की ओर लटका दिया. उस ओर जेल की इमारत का बायाँ भाग था. चहारदीवारी के

बाहर, थोड़े मैदान के बाद एक कच्ची सड़क थी, जो बीस-बाइस गज़ के बाद पक्की सड़क से जा मिलती थी.

कपूर और दत्त ने जब मैदान पार किया और सड़क पर आये तब घने पेड़ों की छाया से एक आवाज़ आई. कपूर और दत्त विजय और लाल से जा मिले. विजय को फ़ौज़ी लिबास में देख कपूर को आश्चर्य हुआ.

विजय ने तुरन्त ही कपूर और दत्त को एक-एक पिस्तौल दी, तब विजय ने कहा—'सड़क पर कार खड़ी है. एक मिनट की भी देर न करो. कहीं ऐसा न हो कि फिर पकड़ जाओ.'

कपूर ने कुछ कहा नहीं; प्रश्न-सूचक दृष्टि से उसकी ओर देखा और तब चारों साथी सड़क की ओर लपके. इतने में ही पीछे, जेल के अन्दर, ज़ोर का हुल्लड़ मचा. ख़तरे की सीटियाँ बजने लगीं और इन लोगों ने एक भारी आवाज, वहाँ से भी, स्पष्ट सुनी; कोई ज़ोर से चिल्लाकर कह रहा था—'क़ैदी भागा !'

विजय कपूर का हाथ पकड़कर शीघ्रता से सड़क की ओर लपका.

चारों आदमी कार पर सवार हुए और विजय ने कार स्टार्ट कर दी.

कपूर ने कहा—'पुलिस बहुत जल्द हमारे चारों ओर अपना जाल फैला देगी विजय ! कुछ ही देर में सभी पुलिस स्टेशनों को हमारे भागने का पता लग जायेगा. ऐसे में क्या, तुम आशा करते हो कि, हम लोग शीघ्र ही किसी निरापद स्थान पर पहुँच जायेंगे ?'

'आशा तो है कि ज़रूर पहुँच जायेंगे. तुम और दत्त तब तक कपड़े पहन लो.' फिर विजय ने लाल से कहा, जो कि पीछे की सीट पर दत्त के साथ बैठा था—'इन लोगों को कपड़े दे दो.'

लाल ने दोनों को अँगरेज़ी ढंग के कपड़े दे दिये. वहीं कार में दोनों ने कपड़े पहने और जेल के कपड़ों को लपेट कर, शीघ्र पड़नेवाली, नहर में फेंक दिया.

विजय ने कहा—'इस समय तक तुम्हारे भागने की ख़बर चारों

श्रोर फैल गई होगी. सब लोग अपनी पिस्तौलों पर ध्यान रखना, क्योंकि कहा नहीं जा सकता कि किस समय हमें ख़तरे का सामना करना पड़ जाये.'

कार अपनी पूरी गति से जा रही थी. थोड़ी ही देर में नगर की इमारतें दिखाई पड़ने लगीं. कपूर ने पूछा—'हम लोग कहाँ हैं ?'

विजय ने कहा—'उन्नाव में.'

'क्या कानपुर चलना है ?'

'हाँ.'

'लेकिन वहाँ तो पुलिस का बहुत कड़ा प्रबन्ध है.'

'हाँ, लेकिन हमारी हिफ़ाज़त करनेवाले भी हम लोगों से अधिक दूर नहीं रहते.'

'फिर भी जान-बूझकर आग में क्यों कूद रहे हो ?'

'जिस तरह पुलिसवाले हमारे बीच में आकर बच निकलते हैं, उसी तरह हम भी बच जाते हैं, यह तुम जानते हो. पुलिसवाले तो कभी-कभी हमारे सिर पर रहकर भी नहीं जान पाते कि नीचे कौन है.'

'तुम जानो, पर अगर अबकी बार पकड़े गये तो कालापानी ही होगा, यह याद रखना.'

'तुम निश्चिन्त रहो.'

विजय की दृष्टि सामने गई, तब उसने देखा कि आगे के लाइट-पोस्ट के पास कुछ पुलिसवाले खड़े हैं. उसी समय कपूर ने पूछा—'तुम ये फ़ौजी कपड़े क्यों पहने हो ?'

विजय ने कहा—'अभी मालूम हो जायगा. घबराना मत !' और उसने ठीक उस जगह कार को रोक दी जहाँ से पाँच-छः हाथ के अन्तर पर पुलिसवाले खड़े थे.

विजय कार से उतर पड़ा लपक कर शीघ्रता से उन लोगों की ओर बढ़ा. हैट उसके हाथ में था. सिपाहियों के आगे खड़े हुए दारोग़ा से

उसने कहा—'वैल, मिस्टर राजपालसिंह, आप लोग यहाँ कितनी देर से हैं ?'

'कोई आध घण्टे से.'

विजय ने घड़ी देखकर कहा—'पौने चार ! इस वक़्त पौने चार बज रहा है—आपको दो चालीस पर फोन किया गया था. इतनी देर में क़ैदी आसानी से निकल गया होगा. इस तरह ढील-ढाल से काम नहीं चल सकता. आप से जवाब तलब किया जा सकता है.'

'लेकिन हुज़ूर, मैंने आपको पहचाना नहीं.'

विजय ने एक सरकारी काग़ज़ उसकी ओर बढ़ा दिया और कहा—'कार में ग्रुप-अफ़सर बैठे हैं. मैं उन्हें रोककर आया हूँ, वर्ना आपको अभी मुसीबत में पड़ जाना पड़ता !'

दारोग़ा ने विजय को सॅल्यूट किया, साथ ही और सिपाहियों ने भी. विजय बोला—'ख़ैर, हम लोग आगे जाते हैं, क़ैदी की खोज करना ही है. बहुत ख़तरनाक आदमी है. एक होता तो ग़नीमत थी; दोनों साथ ही भागे हैं.' और विजय कार की ओर वापस लौटा. दारोग़ा और उसके साथियों ने फिर सॅल्यूट किया.

कार चल पड़ी और जब उन लोगों के पास से निकली तब पीछे बैठे हुए दत्त और लाल ने सुना कि दारोग़ा अपने किसी सहकारी से कह रहा था—'सरकिल इन्सपेक्टर थे—सब अफ़सरों के साथ क़ैदियों की तलाश में जा रहे हैं.'

जब उन्नाव बहुत पीछे रह गया, तब विजय से कपूर ने कहा—'की तो तुमने उस्तादी, पर आख़िर जान-बूझकर उन लोगों के बीच में क्यों गये थे ?'

'इसलिए भाई साहब, कि वे हमें रोकने का मौक़ा न पायें.'

'ठीक है, पर तुम पुलिस के साहब कब से हो गये ?'

'जब से ज़रूरत महसूस की.'

'किस तरह हुए?'

'जालसाज़ी से. आईडेन्टिटी कार्ड, आर्डर-फ़ॉर्म और अफ़सरों के दस्तख़त, सब अपने ही हाथ की सफ़ाई है.'

'और कहीं पकड़ गये तो?'

'इस तरह काफ़ी दिन तक बचे रहने की आशा है.'

'कानपुर में कहाँ छिपने का इरादा है? तपेश्वरी जी के मन्दिर....?'

'वहाँ तो अब कुछ भी नहीं है!'

और कपूर ने एक लम्बी साँस छोड़ दी.

'अगर रस्तोगी के घर तक सही-सलामत पहुँच सके, तो तुम्हारा सबसे अच्छा प्रबन्ध अमितादेवी कर सकेंगी.'

'आशा तो है, लेकिन तुम लोग?'

'अभी हमारे बहुत-से साथी जेलों में हैं, उन्हें किसी तरह निकालना होगा.'

'यह काम अकेले तुम्हारे करने का ही नहीं है, मैं भी साथ रहूँगा.'

'लेकिन तुम्हें अमिता अभी एक मिनट के लिए भी घर से बाहर न निकलने देंगी. एक तो पुलिस तुम्हारी खोज करेगी और दूसरे तुम बेहद क़मज़ोर मालूम होते हो.'

'यह सब देखा जायगा.'

दत्त ने आगे मुँह करके विजय से पूछा—'वे आजकल किस बँगले में हैं?'

'हैं तो शहरवाले में ही, पर आज हम लोगों का इन्तज़ार गङ्गा के किनारेवाली कोठी में कर रही होंगी. तुम लोगों को लाने का प्रबन्ध उन्होंने किया है. यह कार भी उन्हीं की है.'

चौंककर कपूर ने कहा—'यह अच्छा नहीं हुआ. पुलिस ने नम्बर नोट किया होगा.'

विजय ने हँसकर कहा—'नम्बर तो मॅजिस्ट्रेट की कार का है.'

थोड़ी देर तक कोई न बोला. आसमान साफ़ हो रहा था, तारों की चमक धुँधली पड़ने लगी थी और हवा के हलके झोंकों में जङ्गली फूलों की ख़ुशबू बह रही थी. कार तेज़ी से चली जा रही थी!

जब कार ने रस्तोगी महाशय की गङ्गा-किनारेवाली कोठी में प्रवेश किया, तब सबसे पहले कपूर की दृष्टि अमिता पर पड़ी वह कार के रुकते ही, उतरकर, उसके पास जाकर खड़ा हो गया. अमिता ने हाथ बढ़ाकर मुस्कराते हुए कहा—'आ गये तुम!'

२५

कपूर उस कोठी में कपूर के रूप में नहीं रहता—उसने चश्मा लगाना छोड़ दिया, हालाँकि इससे उसे बहुत दिक़्क़त उठानी पड़ती है. एक दाँत पर सोने का खोल लगवा लिया, हालाँकि वह उसे पसन्द नहीं. छोटी-छोटी मूँछें रख ली हैं, हालाँकि मूछों से उसे सदा चिढ़ रही है. सिर के बाल बहुत फ़र्स्ट-क्लास कटे रहते हैं और बाक़ायदा काढ़े भी जाते, हालाँकि बालों की ओर से वह हमेशा लापरवा रहा है और अब वह सूट-बूट में रहता है, हालाँकि इस वेष में रहने से उसे खुद अपने प्रति घृणा होने लगती है—वैसे उसने बहुत बार वेश बदला है, पर वह अस्थायी था, यह स्थायी-सा है. वह विवश है, उसे इस तरह वेष बदलकर रहना ही पड़ता है, अमिता की आज्ञा है. अमिता नहीं चाहती कि कपूर को पुलिसवालों की आँखें देख सकें और वह उसे फिर खो बैठे. साथ ही रस्तोगी और कप्तान का भी आदेश है कि कपूर फिर पुलिस के क़ब्जे में न जाये

और कपूर सोचता है कि जेल से भागना बेकार हुआ. वहाँ भी बन्धन था, यहाँ भी बन्धन है. हाँ अब जीवन के लिए उसके दिल में मोह पहले से अधिक हो गया है. वह फिर जेल नहीं जाना चाहता. लेकिन वह देखता है कि उसका कृत्रिम-रूप उसे विलास-वैभव की ओर आकर्षित कर रहा है.

अमिता कपूर के लिए परेशान रहती है. उसे अपने स्वामी की इतनी चिन्ता नहीं है, क्योंकि वह जानती है कि वे कई मिलों के मालिक हैं, उन्हें किसी के आश्रय की आवश्यकता नहीं. कपूर देश के लिए जान

की बाज़ी लगानेवाला ज़िन्दादिल सिपाही है—उसे सुख-चैन नहीं है, इसलिए उसे सहारे की ज़रूरत है—उसे आश्रय की आवश्यकता है.

कपूर इस क़ैद से भी भागना चाहता है. उसके सामने न तो प्रेम का कोई मूल्य है और न घृणा का ही. वह न तो कठोरता से घबराता है, न सहानुभूति से आकर्षित होता है. उसके हृदय में तूफ़ान है. वह लक्ष्यहीन-भावनाओं के आश्रित है. वह जानता है कि बढ़ना ही जीवन का लक्ष्य है. वह तूफ़ान को पसन्द करता था, धुआँधार कामों से उसे दिलचस्पी है.

अमिता के हृदय में कपूर के लिए बहुत बड़ा स्थान है. उसका पति रस्तोगी भी कपूर को बहुत चाहता है. उसके दिल में जहाँ कपूर के लिए आदर है, वहाँ उसके प्रति ममता भी है. वह जानता है कि अमिता कपूर से प्रेम करती है, लेकिन इससे उसे ईर्ष्या नहीं होती बल्कि उसकी कोमल-भावनाओं को बल मिलता है.

कपूर कोठी के ऊपरवाले कमरे में धीरे-धीरे चहलक़दमी कर रहा है. खिड़की के पास आकर उसने पर्दा हटाया—सामने गङ्गा की चमकती हुई धारा में पश्चिम की ओर झुकते हुए लाल सूर्य का प्रतिविम्ब पड़ रहा है. एक नौका धीरे-धीरे एक ओर चली जा रही है. गङ्गा के दोनों ओर हरे-भरे पेड़ हैं. दूर आकाश में पन्छी उड़े जा रहे हैं. यह सब दृश्य कपूर को बड़ा वैसा लगा ! लम्बी-लम्बी साँसें धीमे-धीमे चलने लगीं, कुर्सी खिसकाकर वहीं खिड़की के पास वह बैठ गया. खिड़की पर कोहनी टेक, हथेली पर गाल को रखकर बहुत उदास-सा होकर उधर देखता रहा. यह सब कैसा माया-जाल है ? कप्तान, रस्तोगी या विजय क्या इतनी निष्ठुरता कर सकते हैं कि एक आज़ाद पन्छी को पींजरे में क़ैद कर दें, जबकि बाहर उसकी ज़रूरत हो ? क्या यह सब उसकी भलाई के लिए हो रहा है ? लेकिन, इसके विपरीत, क्या पार्टी से भी उसका संबन्ध टूट गया है ?

उसकी आँखों में आँसू भर आए. वह वैसे ही बैठा रहा. तब वह उठा और नीचे चला गया.

उसने देखा कि रोज़ की ही तरह आज भी बाहर जाने के सब द्वार बन्द हैं; सम्भव है, ताला लगा हो. फिर वह ड्राइङ्ग-रूम में आकर बैठ रहा. इतना परिवर्तन उसने अपनी बोलचाल, रहन-सहन और चहरे में कर लिया है; फिर भी उसे छिपकर, एक क़ैदी की ही तरह, रहना पड़ रहा है. बाहर की ख़बरें उसे बहुत कम मिल रही हैं. पार्टी क्या कर रही है, इसका उसे कुछ पता नहीं. विजय या लाल भी नहीं मिले. सुना है कि लाल और दत्त उरई चले गये हैं. जो ख़बरें मिलती हैं, अमिता के द्वारा ही मिलती हैं, या कभी-कभी रस्तोगी भी कुछ बता जाता है. पर उन समाचारों पर वह किस तरह विश्वास कर ले? लाभ कुछ भी नहीं है—चाहे विश्वास करे या न करे! फिर इन बातों को बार-बार सोचने का ही क्या प्रयोजन? पड़ा रहे, जब तक अमिता चाहे; अथवा जब तक के लिए उसके भाग्य में लिखा हो. लेकिन नहीं, पड़ा न रहेगा, बाहर जाकर अपने साथियों से मिलेगा. उन लोगों ने जब सुना होगा कि वह जेल से निकल आया है तब प्रसन्न हुए होंगे और उसका इन्तज़ार कर रहे होंगे. तब वह इस मकान के दरवाज़े तोड़कर भाग जायेगा. यहाँ अब उससे नहीं रहा जाता. अमिता का प्रेम? नहीं, यह समय प्रेम करने का नहीं है. प्रेम बढ़ते हुए क़दम रोके दे रहा है—वह उस प्रेम की परवा न करेगा. उसे बढ़ना है. हर हालत में उसे यह दीवारें तोड़नी हैं. वह अमिता के मकान की इस चंहारदीवारी से मुक्ति चाहता है, वह अमिता के प्रेम-बन्धन से छुटकारा चाहता है. चाहे फिर कप्तान उसे कितनी ही बड़ी सज़ा दें, पर वह बाहर खुले मैदान में, जायेगा.

रोज़ की ही तरह निश्चित-समय पर जब अमिता आई, कपूर ने व्यग्रता-पूर्वक उससे कहा—"मुझे क्यों इस तरह बन्दी बना रक्खा है अमिता! क्या मुझे इसीलिए जेल से छुड़वाया था?"

'तुम नहीं जानते कपूर, कि पुलिस किस सरगर्मी से तुम्हारी खोज कर रही है. तुम्हारे नाम वारन्ट हैं, तुम्हारी गिरफ़्तारी के लिए इनाम हैं; इसी लिए तुम्हें छिपाकर रक्खा है.'

'लेकिन पुलिस मुझे इस रूप में देखकर नहीं पहचान पायेगी. तुम मुझे बाहर जाने दो.'

'पुलिस पहचान सकती है, यह कभी मत भूलो.'

'मुझे बहुत काम करना है, पार्टी के लोगों से मिलना है, देखना है कि वे लोग क्या कर रहे हैं, कप्तान कहाँ हैं, उनकी क्या आज्ञा है, शीला और ज़मीर किस ओर हैं, लाल, विजय और दत्त का क्या हुआ ? यह सब मुझे जानना है.'

'सब कुछ तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जायेगा कपूर !'

'नहीं अमिता, मुझे जाना होगा. मुझे अपने कर्त्तव्य की ओर देखना है. दूसरे मेरे बारे में क्या सोचेंगे, यह मैं जानना भी नहीं चाहता.'

'लेकिन मैं तुम्हें कितनी मुसीबतों से यहाँ लाई हूँ, यह तुम्हें जानना चाहिए. कप्तान को तुम्हारे लिए क्या-क्या करना पड़ा है, यह तुम्हें नहीं मालूम. साथ ही तुम यह भी समझ लो कपूर, कि मैं जान-बूझकर तुम्हें फिर से पुलिस के हाथ में नहीं जाने दूँगी.'

'तो मैं मर जाऊँगा अमिता !' कपूर की आँखों में आँसू आगये.

अमिता ने आर्द्र होकर कहा—'कपूर, तुम्हें यहाँ कोई कष्ट नहीं है. तुम्हारे जीवन की रक्षा बहुत ज़रूरी है और उस जीवन की रक्षा मैं कर रही हूँ, मुझे करने दो. ज़िद छोड़ के, हर हालत में, तुम्हें कुछ दिन अज्ञातवास करना ही होगा.'

'तो मुझे शराब पीने दो.'

'क्यों ?'

'इसलिए कि इस तकलीफ़ को मैं सहन नहीं कर सकता, जो मेरे मन को जला रही है. मैं अपने मन की नहीं कर पाता. मैं बन्धन में हूँ,

जब ऐसा सोचता हूँ, तब लगता है, जैसे मैं जीवित ही मृतक के समान हूँ. मुझे शराब ला दो; मैं अपने प्राणों को, अपने आकुल-व्याकुल प्राणों को, शराब की बेहोशी का इञ्जेक्शन दूँगा, ताकि मुझे अपने मन का दर्द उभरता हुआ न मालूम हो.'

'नहीं, ऐसा न होगा. कहो तो कल से मैं यहीं आ जाऊँ. 'उन्होंने' कह दिया है कि तुम्हारी हिफ़ाज़त का ख़याल मुझे रखना है. तुम हाथ से नहीं निकल सकोगे, इसलिए कि मैं नहीं चाहती और न कप्तान या 'वे' ही चाहें कि तुम फिर से पुलिस के हाथों में पहुँचो.'

'तब तुम मेरे साथियों से मुझे मिलाओ अमिता! अगर मुझे इसी तरह रखना चाहती हो तो उन लोगों के दर्शनों से वञ्चित न रक्खो—विजय को बुलाओ, दत्त और लाल को बुलाओ!'

'लेकिन विजय तो गिरफ्तार हो गया है.'

'हैं?' आश्चर्य से कपूर ने अमिता की ओर देखकर कहा—'विजय गिरफ्तार हो गया? तुमने उसकी हिफ़ाज़त का कोई प्रबन्ध नहीं किया, जो अपनी जान की बाज़ी लगाकर मुझे छुड़ा लाया है, उसकी तुमने कुछ भी परवा नहीं की और मेरे लिए तुम इतना प्रबन्ध कर रही हो? तुमने न्याय नहीं किया अमिता!'

अमिता कुछ न बोली. कपूर माथे पर उँगलियाँ फेरने लगा.

अमिता ने कहा—'मैं कल सुबह अपना सामान लेकर आ जाऊँगी, और तब तुम्हारे साथियों को यहाँ बुलाने का प्रबन्ध करूँगी. वैसे मैंने दत्त और लाल के पास काफ़ी रुपया भेज दिया है.'

कपूर कहना तो कुछ और चाहता था, पर उसने कहा—'अच्छा किया.'

'विजय को जेल से छुड़ा लाने का प्रबन्ध कप्तान ने कर दिया होगा. मैं यह भी जानती हूँ कि कप्तान यहाँ आयेंगे भी.'

लेकिन कपूर कुछ न बोला. वह सिर पर, दबाते हुए, हाथ फेरने लगा.

अमिता ने कहा—'क्या सर दर्द कर रहा है ?'

कपूर वैसे ही चुप बैठा रहा, तो अमिता ने उसके सिर को अपने वक्षस्थल पर सहारा देकर सहलाना शुरू कर दिया.

कपूर को हवा में उड़ते हुए पंछी और कभी-कभी आनेवाले इक़राम कसाई की आज़ादी से इर्ष्या-सी होने लगी. इन्हें बन्द करनेवाले क्या कोई नहीं हैं ?

× × ×

पहली अगस्त—प्रातःकाल कार पर सामान लादकर जब अमिता शहर से गङ्गावाली कोठी पर पहुँची और ताला खोलकर कपूर के कमरे में गई तब उसने देखा कि नदी की ओर खुलनेवाली खिड़की के सींकचे कटे हुए हैं और कपूर नहीं है. उसने चपरासी और माली को बुलाकर पूछा. लेकिन कुछ पता न लगा.

खोजने पर कपूर का पत्र मिला, जिसमें लिखा था—'पहले काम फिर आराम. पकड़ा न गया तो आऊँगा.'

अमिता ने चिट्ठी फाड़ दी और विक्षिप्त-सी हो, धीरे से आप ही आप कहा—'लेकिन रुपया तो ले जाते, बिना रुपये के और मुसीबत में पड़ोगे.'

एक ओर पुलिस कपूर की खोज में है, दूसरी ओर अमिता. कपूर के चारों ओर संघर्ष ही संघर्ष है—बाहर भी, भीतर भी.

२६

पाँचवीं अगस्त—युद्ध की भयानक ख़बरें, सात अगस्त की प्रतीक्षा, फ़ूड कन्ट्रोल, राशनिंग की पावन्दी, महँगी और बेकारी की समस्या सभी के विचारों में सबसे अधिक उभर रही हैं—हर भारतीय व्यक्ति के दिमाग़ में, ज़बान पर और आगे-पीछे, घर-बाहर चर्चा के सोचने-समझने, उलझने और परेशान होने के यही विषय रह गये हैं.

हिन्दुस्तान के मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय व्यक्ति परेशान हैं. उनके सामने संघर्षमय-भविष्य की जलती हुई तस्वीरें तैर रही हैं.

सब ज़रूरतमन्द हैं. ज़रूरत भी ऐसी जिसकी उपयोगिता से इन्कार नहीं किया जा सकता. जिसके बिना काम चल ही नहीं सकता. कौन ऐसा आदमी है, जो भूखा रह सके, जो अपने बच्चों और स्त्रियों को भूख से बिलखते, दम तोड़ते देख सके ?

भूख ! भूख !! भूख !!! लेकिन समस्या हल कैसे हो ? चाहे आस्तिक अपने देवताओं की मूर्तियों को नष्ट करके, अपनी क़िस्मत को आरी से चिरवा दे ; चाहे नास्तिक रात-दिन महनत करे; चोरी, झूठ, जाल, फ़रेब, के चक्कर में रहे ; चाहे अॅग्नास्टिक थकी आँखों से दोनों ओर देखे, लेकिन लाभ ? आस्तिक, नास्तिक और अॅग्नास्टिक सभी की समस्या, विचार अलग होने पर भी, एक ही है—भूख ! भूख !! भूख !!!

लेकिन अनाज, कपड़ा, पैसा—सब कुछ—उनके पास है जो ज़रूरत-मन्दों से कहीं कम ज़रूरतमन्द हैं, जिनके हाथ में शक्ति है. जिस ज़रूरत से इन्कार नहीं किया जा सकता, वह ज़रूरत, असफल-रूप में हक़दारों के सामने है और जिन्हें ज़रूरत नहीं है और जो दिखावे के

लिये ज़रूरतमन्द बनते हैं, उस ज़रूरत पर अनधिकार चेष्टापूर्वक हक़ जमाये बैठे हैं ; वे हैं सेठ, वे हैं ऊँची तन्ख़्वाह पाने वाले सरकारी नौकर, वे हैं पूँजीपति, वे हैं बड़े-बड़े व्यापारी और वे हैं जनता तथा देश के दुशमन.

इस बार कपूर बहुत दिनों के बाद निम्न और मध्य वर्ग की इंसानी-ज़िन्दगी के नज़दीक़ पहुँचा, लेकिन इस बार उसे लगा कि वह भूखे-नंगे लोगों के बीच में रहकर भी, इस बार तटस्थ है. ईमानदारी से तटस्थ रहकर ही दूसरे लोगों के बारे में, या दूसरी चीज़ों की अच्छाइयों-बुराइयों के बारे में, समझने पर असलियत मालूम होती है ; यह भी उसने अनुभव किया.

उसने बहुत सोचा कि अनिल बाबू देश भर में क्रान्तिकारियों का संगठन करने के लिए रात-दिन दीवाने बने रहते हैं, जान को हथेली पर लेकर ख़तरों के बीच में खड़े होकर आगे चला करते हैं. और भी ऐसे ही बहुत काम करते होंगे ; सो क्या इसलिए कि देश के ग़रीबों को रोटी मिले, बेकारों की बेकारी दूर हो, नंगों को कपड़ा मिले और ग़ुलामी की जंज़ीरें टूट जायें ? इस प्रश्न के बहुत आगे—बहुत पीछे, चारों ओर, बहुत विचार किया, पर उसकी समझ में कुछ न आया और उसे महसूस हुआ कि वह उन विचारों में ख़ुद ही बुरी तरह उलझा जा रहा है.

भूखों की रोटी, नंगों का कपड़ा और ग़रीबों का पैसा उन बड़े व्यापारियों और अमीरों के तहख़ानों , कोठियों और तिजोरियों में बन्द है, जिन्हें इसकी ज़रूरत नहीं है और जो थोड़ा पैसा लगाकर भूखों-नंगों और बेकारों की हड्डी के रक्त की कमाई से प्राप्त हुआ ढेरों पैसा खींचकर, जमा-पूँजी का कई गुना अधिक बनाते हैं. और भूखे हैं कि रोते नहीं, नंगे हैं कि मरते नहीं, बेकार हैं कि चुप-चुप सहन करते हैं सब कुछ, क्योंकि प्राणों का मोह सबको है ; लेकिन उन प्राणों का मोह जो भूख की चोट से बिलख-बिलख कर आह भर रहे हैं, जो माँ-बहनों के

कृश-तन और मूक-मन का क्रन्दन सुनकर छटपटा रहे हैं, जो हमेशा तलवार के नीचे सिसकते हैं और बाहर निकलने को बेचैन रहते हैं. कपूर आगे न सोच सका और कमरे की सील में भिनभिनाते मच्छरों का रास्ता काट, बदबूदार हवा के बीच से निकलकर बाहर भागा, जहाँ कि मूसलाधार पानी बरस रहा है और सड़कें पानी से घुटनों तक भरी हैं.

कपूर सर्द-पानी के बीच से, भीगता हुआ, एक ओर चला जा रहा है.

रात हो रही है ; अधिकांश दूकानें बन्द हो गई हैं, कुछ बन्द हो रही हैं और कुछ खुली भी हैं. पानी तेज़ी से बरस रहा है. सड़कें लबालब भरी हैं. दूकानों की क़तारों के सामने सायेदार फ़ुटपाथ पर, पानी थमने की प्रतीक्षा में, बहुत से राहगीर खड़े हैं. सड़कें जनशून्य हैं और कपूर पानी से भरी सड़क पर लप्प-झप्प, तेज़ी से, चला जा रहा है. पानी बरसने से एक घनघोर-क्रन्दन हो रहा है, जिसका आदि-अन्त नहीं है, जो सीमाहीन है. जगमगाते हुए बिजली के लट्टुओं की रोशनी, घने-अन्धकार को चीरकर, पानी से भरी सड़क की छाती पर आइनें में झलकते प्रकाश-प्रतिबिम्ब की तरह लग रही है और कपूर चला जा रहा है.

पानी की तेज़ धारा को काटती हुई एक पुलिस-पैट्रोल-कार, कपूर के पास से, सरसराती हुई निकल गई.

कपूर का सूट तर-ब-तर है. फैल्ट-हैट माथे के नीचे तक झुक गई है और पानी की धारें उसके ओठों पर रेंगती हुई गिर रही हैं.

सुनसान सड़क, पानी का गर्जन और अकेला कपूर—जैसे अपने युग के सार्वजनिक-जीवन के प्रतीक-वर्ग का प्रतिनिधि, राष्ट्र के आँसुओं में अपनी मनोवांछित वस्तु की तलाश में भटक रहा है, डुबकियाँ ले रहा है ; पर आँसू हैं कि थमते ही नहीं, जो यह प्रतिनिधि ज़रा निश्चिन्त होकर कुछ समझे, कुछ सोचे और कुछ पाने का प्रयत्न करे.

[पैरोल पर

कपूर को लग रहा है कि संघर्ष में पड़कर उसका दम घुटा जा रहा है और वह शान्ति और एकान्त की तलाश में बहुत दूर का सफ़र आरम्भ कर चुका है.

उस रात की बातें जानने के बाद कपूर को शंकर के प्रति बहुत मोह हो गया है, लेकिन बारह जौलाई की रात के, अन्तिम प्रहर के, बाद से वह ग़ायब है; अब शायद उससे मिलना न हो सकेगा. कानपुर में उसके परिवार का भी कुछ पता नहीं. विजय जेल में है. अमिता से वह इस जीवन में फिर कब मिलेगा, यह उसे नहीं मालूम! नारायण से वह मिल नहीं सकता, उसके घर पर पुलिस का पहरा है.

पानी बरस रहा है और कपूर, तेज़ी से, स्टेशन की ओर बढ़ा जा रहा है.

२७

कपूर के मन में विद्रोह की आग धधक रही है, लेकिन वह जानता है कि यह विद्रोह व्यर्थ है—आग बहुत जल्द बुझ जायेगी—क्योंकि वह अकेला है ; साथी हों, अनिल बाबू की पार्टी हो, और भी सौ-दो-सौ, हज़ार, दो हज़ार, बीस हज़ार, लाख, पचास लाख व्यक्ति उसके साथ हों, वे भी अपने दिलों में ऐसी ही विद्रोही भावनाओं का अनुभव करें, तब भी क्या होगा ! चालीस करोड़ की आबादी वाले मुल्क को चारों ओर से उठनेवाली तूफ़ानी लपटें घेरे ले रही हैं ; ऐसी स्थिति में क्या रोटी-कपड़े की ख़ास समस्या और देश के बचाव का महत्वपूर्ण प्रश्न दो-चार लाख आदमी हल कर सकते हैं ? सभी के लिये समस्या एक है ; सभी की चाहना, सभी की आशा एक है और वह है समानता ! चालीस करोड़ में कमज़ोर महनतकश हैं, फटे कपड़े पहननेवाले बेकार हैं, आधे पेट खाने वाले इज़्ज़तदार हैं, भूख से तड़पते हुए कंगाल हैं, साथ ही कारों पर घूमने वाले पूँजीपति भी हैं ; पर चैन किसे है ? युग ने सबके सामने एक सी समस्याओं को लाकर खड़ा कर दिया है. सभी को चिन्ताएँ हैं, चाहे वह मोटरवाला हो, चाहे वह भूखा हो—श्रेणी-संघर्ष काँप रहा है ! सभी समस्याएँ, सभी प्रश्न तब हल होंगे, जब सब बराबर हो जायेंगे. सब एक दूसरे को अपना समझने लगेंगे. जैसे वह अमिता को समझता है, जिसकी कारें हैं, मिले हैं और जैसे अमिता उसे समझती है, जिसके पास अपना कुछ भी नहीं है. ग़रीब अमीर का यह मेल होगा ही. आनेवाला युग दूर से खड़ा होकर अपने आने की सूचना दे रहा है ; जब सब सुखी होंगे, सबका

सुख एक सा होगा. जब चालीस करोड़ आदमी एक डोर में बँध जायेंगे तब लोग आज़ादी की साँस लेंगे, तब उनकी आँखों में शीतल हँसी और सन्तोष झलकेगा, तब सब कन्धे से कन्धा भिड़ाकर चलेंगे, तब चालीस करोड़ व्यक्तियों के क़दम साथ उठेंगे, जब चालीस करोड़ कण्ठों की आवाज़ एक होगी, तब हिन्दुस्तान हिन्दुस्तान वालों का होगा ; तब हिन्दुस्तान, जापान का ही क्या, प्राकृतिक प्रलय का मुक़ाबला अकेले ही करने को तैयार हो जायेगा ?

लेकिन वह सब आज नहीं है ! आज अमीरों और ग़रीबों के अलग-अलग दो दर्ज़े उभरे हुए हैं ; जिनमें से पहला दबाता है, दूसरा दबता है ; पहला टुकड़ा डाल देता है, दूसरा किसी तरह निगल लेता है. सुख की साँस नहीं, सुख के स्वप्न नहीं, सुख का वातावरण नहीं—आँखों में आँसू हैं, पेट खाली है—कितना तीखा व्यंग्य है.

शोषक और शोषित का यह नाता, यह बड़े छोटे की समस्या, यह भूखे-नङ्गों का सवाल जब तक है ; तब तक दबने वाला दबता ही जायेगा. भूखे और नंगे, छोटे और बड़े, ग़रीब और अमीर जैसे रहे हैं, वैसे ही बने रहेंगे. समूचा राष्ट्र तब तक घुटता ही रहेगा, सिसकता ही रहेगा. आह भरेगा, तो अंगारे उसके मुँह में भर दिये जायेंगे, रोटी माँगेगा तो लोहा मिलेगा, बल्कि वह भी नहीं.

ओ, समानता के युग ! ओ, आशा और उत्साह देने वाले समय !! ओ, जीने का सन्देश लाने वाले इन्क़लाब !!! तुम आओ, तुम्हारा स्वागत है. देर करोगे तो स्वागत करने वालों में बहुत से इन्तज़ार करते-करते ही मर जायेंगे. तुम्हारा इन्तज़ार करने वाले बेचैन हैं, रो रहे हैं, हाथ पसारे खड़े हैं. तुम दूर से खड़े होकर भुलावा देने की कोशिश न करो. आओ, ओ, मज़लूमों के मसीहा ! आओ !!

कपूर ने दूसरी सिगरेट जलाई, खिड़की पर ठोड़ी टेककर भागती हुई ट्रेन के दोनों ओर खड़े पेड़ों की क़तारों के नीचे दूर तक ऊँघती-

छाया को देखने लगा. उसे लगा, नये युग का सन्देश देती हुई ट्रेन उस ओर बढ़ी जा रही है, जहाँ इसकी प्रतीक्षा हो रही है.

उसने एक गहरी साँस-सरसराती हुई हवा में, छोड़ दी. सिगरेट का कश लिया, धुआँ छोड़ा और हवा के झोंकों की सिहरन का अनुभव करते हुए गुनगुनाने लगा. उसका स्वर लेकर हवा चारों ओर भागने लगी. वह गाता ही रहा—

कौन सुख के गीत गाये ?
कौन भूखों और नंगों
का, सिसकता-दुख बँटाये ?
दिन ढला मेरा डगर में ,
हो गई रे, शाम.
और मुझको अभी चलना,
है कहाँ आराम ?

रुक गए साथी डगर में ,
मैं अकेला ही चलूँगा !
थक गए साथी डगर में ,
मैं अकेला ही जलूँगा.
दूर है मँजिल, जहाँ ,
आकाश नित मोती लुटाता.
एक आशा के सहारे ,
कौन मेरे साथ आता !

मैं अकेला चल रहा हूँ ,
मैं अकेला चल रहा हूँ ।
कौन मेरे साथ आये ?
कौन सुख के गीत गाये ?

लखनऊ स्टेशन पर कपूर ट्रेन से उतर गया. उसे छिपने की फ़िक्र ही न रही उस समय वह, यह भी न सोच सका कि उसके नाम वारन्ट है और पुलिस उसका पीछा कर रही होगी. निश्चिन्त हो वह प्लेटफ़ॉर्म से बाहर आ गया.

उसने कभी न सोचा था कि वह, अमिता की कोठी पर कभी-कभी आनेवाले, डरावने इकराम क़साई से सहायता पायेगा. लेकिन जब अमीनाबाद की सड़कों पर चारों ओर चिन्तित आँखों से, पनाह पाने की आशा से, देखते हुए कपूर की दृष्टि उस पर पड़ गई, तो वह उसके पीछे हो लिया.

२८

कानपुर—दस अगस्त, उन्नीस सौ ब्यालीस.

रस्तोगी मकान पर नहीं है, वह मिल के काम से दिल्ली गया हुआ है. अमिता अकेली, नौकरों के साथ, इतने बड़े बँगले में पड़ी रहती है. पुलिस रस्तोगी की तलाश में आ चुकी है, मकान की तलाशी ले गई है. रस्तोगी की गिरफ़्तारी का परवाना वापस लौट गया है और अब कोठी पर पुलिस की निगाह है. देश के हर हिस्से में तरह तरह की तोड़-फोड़, दंगे-फ़साद—मतलब यह कि—सरकार के ख़िलाफ़ तरह-तरह के विद्रोही काम हो रहे हैं. लेकिन अमिता इस सब को ऐसे देख-सुन रही है, जैसे उसके सामने स्क्रीन-पिक्चर चल रही हो. उसे कोई आश्चर्य नहीं है, इस सब से वह रत्ती भर भी विचलित नहीं हुई. वह जानती है कि रस्तोगी गिरफ़्तार हो जायेगा, लेकिन उसके दिल में दर्द है तो सिर्फ़ इतना ही कि कपूर का कुछ भी पता नहीं चला !

[कभी-कभी वह सोचने लगती है कि कपूर 'देशद्रोही' के खन्ना जैसा असहाय बनकर आ जाये और वह चाँद की तरह, उसके सर को गोद में रखकर सहलाती रहे. खन्ना और चाँद का नाता तो आत्मा का था, जिसे लोग पवित्र कहते हैं, वह तो कपूर को अपनी आत्मा और देह, दोनों ही, सौंप चुकी है. लेकिन कपूर ने कभी उसके सामने उस पंछी जैसा भाव व्यक्त नहीं किया, जो बसेरे की तलाश में—आँखें फाड़े, पंख फैलाये—चारों ओर भटका करता है.]

लेकिन मानिनी बनी रहने पर भी उसने कपूर के सामने मान नहीं किया. कपूर को उसने बहुत अपना समझा है, उसे कभी अपने से अलग नहीं समझा, वह तो उसमें एकाकार हो गई है, उसमें डूब गई है.

समय भागता चला जा रहा है. बीते दिन सपना हो गए, आने वाले दिन आशा और उत्साह का सन्देश लायेंगे, पर अमिता को उन आने वाले दिनों से कोई दिलचस्पी नहीं, वह उस समय को देखने के लिए उतनी उत्सुक नहीं, जितनी कपूर का सिर अपनी गोद में रखकर सहलाने को उत्सुक है. बीते दिनों की मिठास, एक क्षण को भी, वह नहीं भूलती. वे दिन कितनी जल्दी भाग गये, दुनिया में बहुत सी तब्दीलियाँ हो गईं, पर वह कपूर के सामने वैसी ही है. वह सोचती है, कपूर के तलवों के नीचे आनेवाली धूल वह क्यों न बनी?

पिछले हफ़्ते में कप्तान दो बार उससे मिला है. उसने कहा है कि वह ज़्यादा सोच करेगी तो होने वाले बच्चे पर बहुत बुरा असर पड़ेगा, बार-बार कप्तान ने यही समझाया, पर वह कैसे क्या करे! कपूर उसके पास हो, उसे दुनिया का और कुछ भी नहीं चाहिए—आगरे का ताजमहल, अजमेर का स्वर्णमन्दिर, दिल्ली की कुतुब-मीनार, काशी-विश्वनाथ, न्यूयार्क, लन्दन, पेरिस और मॉस्को के प्रासाद झुक-झुक कर कहने लगें कि वह कपूर को भूल जाये, तब भी वह कपूर को, अपने मन से, दूर हटाना, भुलाना स्वीकार न करेगी.

—और वह ज़ोर से चीख पड़ी, फिर रोने लगी.

हिचकियाँ बन्द हो गईं पर आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें उसकी आँखों से ढुलकती रहीं और वह धुँधली दृष्टि से खिड़की के उस पार उड़ते हुए काले बादलों के टुकड़ों को देखती रही—

कपूर कहाँ होगा, कैसे होगा? दुनिया में आग लग जाये, युद्ध होता रहे, भूखे मरते रहें, पैसेवाले ज़ुल्म करते रहें, भारत आज़ाद हो जाये; चाहे गुलाम बना रहे, चाहे प्रलय हो जाये; आसमान और ज़मीन टकरा जायें, पर कपूर जहाँ भी हो, अच्छी तरह रहे. उसके सर में दर्द न हो, उसे सिगरेट की तक़लीफ़ न हो! अमिता सुखी रहेगी. चाहे रस्तोगी को भले ही कुछ हो जाये, पर कपूर का रत्ती भर भी

कष्ट उससे न देखा जायेगा. वह इतनी अशक्त हो गई है कि कपूर की सेवा न कर सकेगी. जिस तरह चाँद घायल-खन्ना की हिफ़ाज़त करने के लिये मारी-मारी फिरी थी, वह ज़रूरत के वक़्त वैसा न कर सकेगी. उसके पेट में बच्चा है, वह थोड़ी दूर तक भी नहीं चल-फिर सकती.

जहाँ पहले भगवान् शंकर की तस्वीर लगी थी वहाँ, अपनी मिलों के मज़दूरों का वेतन ड्योढ़ा करनेवाले दिन, विजय के कहने से रस्तोगी ने लेनिन की तस्वीर लगा दी थी. अमिता ने लेनिन की तस्वीर उतार कर पहले ही की जगह टाँग दी और भगवान् शंकर की तस्वीर को वहाँ लगा, आँखें पोंछ, हाथ जोड़, खड़ी होकर कहने लगी—'प्रभो, इतने दिनों बाद तुम्हारे सामने हाथ पसारे खड़ी हूँ, मेरी रक्षा करो. कपूर जहाँ भी हों, दुख से न रहें, उनके सुख-चैन के लिए मेरे प्राणों की ज़रूरत हो तो ले लो, उनके आराम के लिए तुम्हें अपनी सृष्टि का विध्वंस करना पड़े तो इस दासी की प्रार्थना है कि उसे भी नष्ट कर दो, पर नाथ, उनको कष्ट न होने पाये.........'

अमिता बहुत देर तक वैसे ही, पागल सी, हाथ जोड़े खड़ी रही, जाने क्या-क्या कहती रही, फिर कमज़ोरी के कारण चक्कर-सा आने लगा और वह पास के काउच पर बैठ गई, लेकिन हाथ तब भी जोड़े रही और तस्वीर की ओर ही देखती रही.

———

२६

कानपुर—बारह अगस्त, उन्नीससौ ब्यालीस. अमिता की गंगा किनारेवाली कोठी आँसूभरी बरसाती रात के दामन में अपने को छिपाए पड़ी है. सदर गेट पर दो पहरेदार खड़े हैं. रात दो पहर से अधिक बीती होगी ; अँगरेज़ी-हिसाब से तेरहवीं अगस्त शुरू हो गई है और भारतीय-हिसाब से सूर्योदय होने में अभी क़ाफ़ी देर है.

एक मास पहले, बारह जौलाई को, जिस हॉल में भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त से आए हुए नौजवान व्यक्ति इकट्ठे हुए थे, वह हॉल विधवा की तरह एकाकी, सूना और दर्द से भीगा—अपने में ही सीमित निर्जन, निःस्पन्द, निराश्रय सा सो रहा है .

अँधेरे-आसमान के तम्बू के नीचे, कोठी के सब से ऊपरवाली छत पर, पिछवाड़े की ओर, रैलिंग का सहारा लिए, अमिता और अनिल खड़े हैं—वहाँ से नीचे की ओर बड़ा सा बाग़ीचा है और उसके बाद अँधेरे में भी, चाँदी की तरह चमकती गंगा की चौड़ी-धारा.

अनिल धीरे से बोला—'इस बात का निश्चय है कि मिस सेठ, विमला पण्डित और ज़मीर अभी तक गिरफ़्तार नहीं हुए हैं. वे लोग अन्डर-ग्राउन्ड हैं. शीला का कोई पता नहीं ; उसके बारे में मुझे जो आख़िरी ख़बर मिली थी, उसका मतलब यह था कि वह देश में नहीं है. बाक़ी लोग गिरफ़्तार हो गए हैं.'

'लेकिन कपूर और शंकर का क्या हुआ ? क्या वे लोग आत्मघात कर सकते हैं ?' अमिता ने दर्द-भरे-स्वर में कहा.

'नहीं अमिता ! कपूर के दिल में दीवानगी है, प्राणों को उछाल

कर चलने की हिम्मत है; पर वह आत्मघात नहीं कर सकता, क्योंकि साथ ही, उसे प्राणों का मोह भी है. और शंकर? वह आत्मघात को बुज़दिली समझता है.'

'तो फिर इन दोनों का हुआ क्या?'

'आठ अगस्त की शाम को सात बजे कपूर बनारस में था. मज़दूरों की बस्ती के एक उजड़े हुए मकान में, उससे एक आदमी मिला था. कपूर ने आत्मरक्षा के लिए भी, पिस्तौल रखने से इन्कार कर दिया था. उसके बाद वह नहीं देखा गया. ख़बर देनेवाला आदमी भी गिरफ़्तार कर लिया गया है. मेरा ख़याल है, कपूर बनारस में नहीं है. एक बार विजय ने जोधपुर में रहनेवाली उसकी एक दोस्त का नाम लिया था, पर आज शाम की ख़बर है कि वह जोधपुर भी नहीं गया.'

'और शंकर?'

'ताज्जुब है कि शंकर उस रात के बाद से ही ग़ायब है. उसके बारे में कोई पता नहीं चला.'

अमिता वहीं ज़मीन पर बैठ गई. अनिल भी उसके पास बैठ गया.

उत्तेजित-भाव से नहीं, अनिल ने वैसे ही शान्त भाव से कहा—'यह मेरी बहुत बड़ी हार हुई है अमिता! मेरी सारी तपस्या, सारी साधना क्षण भर में नष्ट हो गई. मेरे मन में कैसे-कैसे सुखद-सपनों की आशा थी, वह पूरी न हुई. अगर मेरा दिल कमज़ोर होता तो मैं कब का मर गया होता. अभी मेरे सामने बहुत से काम पड़े हैं, बहुत से सवालों को हल करना है, इसलिए मैं अपने कार्यक्षेत्र से मुँह नहीं मोड़ सकता.

'तुम बीमार हो, मैंने यहीं तुम्हें बुलाया, यह भूल की; पर सब बातें एक बार तुम्हें बताना ज़रूरी था. हालाँकि इस वक्त मुझे सहायता के लिए एक लड़की की ज़रूरत है, पर मेरे सामने कोई नहीं है. तुम काम करने लायक होतीं तो मैं तुम्हें इस वक्त आराम से न बैठने देता.

लेकिन जिसे तुम असम्भव कहोगी, उसके लिए मैं तो आज भी कोशिश करूँगा, चाहे अकेला ही रह गया सही, पर पीछे न हटूँगा.'

अमिता ने एक गहरी साँस लेकर कहा—'कैसे सब कुछ इधर से उधर हो गया—कुछ समझ में नहीं आता.'

'तुम यक़ीन करो अमिता, कि देश में जो कुछ उथल-पुथल हो रही है, इसका ज़िम्मा किसी भी पार्टी पर नहीं है. हाँ, अगर सरकार कांग्रेस के नेताओं से मिलकर एक फ़ैसला कर लेती, तो कितना अच्छा होता ! मैं ये नहीं कहता कि कांग्रेस ने उचित काम किया है, हो सकता है कि कांग्रेस ने ही ग़लती की हो, पर यह निश्चय है कि सरकार ने बहुत जल्दबाज़ी से काम लिया. चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है—भड़की हुई गुमराह-जनता द्वारा ट्रेनों में आग लगाई जारही है, स्टेशनें नष्ट की जा रही हैं, पोस्ट ऑफ़िस और साथ ही रुपएवाले लूटे जा रहे हैं, जगह-जगह बम फेंके जा रहे हैं, विद्यार्थी और मज़दूर हड़-तालें कर रहे हैं, अदालतों को, पुलिस और सिविकगार्ड्स के दफ़्तरों को, नष्ट किया जा रहा है, अनाज और कपड़े की लूट हो रही है, जेलों तक तोड़ा-फोड़ा जा रहा है, पुलिस और फ़ौज़वालों पर हमले किये जा रहे हैं, अपनी अदालतें खोली जा रही हैं—सरकार की ओर से इन सब अनुचित कार्यवाहियों का दमन किया जा रहा है, गोलियाँ चलाई जा रही हैं, निर्दोष-व्यक्तियों को भी लपेट में आना पड़ रहा है, धड़ल्ले से गिरफ़्तारियाँ हो रही हैं.'

अमिता ने एक गहरी साँस ली. अनिल कुछ देर तक चुप रहा, फिर कहा—'नौ अगस्त को बम्बई में जो नेता गिरफ़्तार किए गए हैं, देश को उन पर अभिमान है. उनकी प्रतिष्ठा देश और देश के बाहर प्रत्येक वर्ग में है. लेकिन मध्यवर्ग के भूखे-नंगे लोग, जो जीवन से उकता गए हैं, इस मौके पर मैदान में आये. उन्हें लीड करनेवाला कोई न था, इसलिए वे सही रास्ते से भटक गए और मनमानी करने लगे.

मैं नहीं कह सकता कि किसकी कितनी भूल है. लेकिन ग़ुलाम जनता की कमज़ोर हड्डियाँ अपनी ग़लती की बहुत बड़ी सज़ा पा रही हैं. मैंने सुना है कि लोगों पर बेरहमी से मार भी पड़ी है. दमन के जो भी अर्थ हों अमिता, पर दया उसमें नाम को भी नहीं.'

'क्या तुम्हारी पार्टी के लोगों ने भी इस क्रान्ति में हिस्सा लिया होगा?'

'हो सकता है, पर मेरी स्कीम यह नहीं थी. इससे तो निश्चय ही जनता का अधिक नुकसान हुआ है और होगा. सरकार का कुछ न बिगड़ेगा. पर मैं समझता हूँ कि मेरे आदमी भी इसमें हिस्सा लेते, अगर वे गिरफ़्तार न हो गए होते. इसलिए कहा नहीं जा सकता कि उनके साथियों ने क्या किया.'

अमिता चुप बैठी रही,

अनिल ने कहा—'कुछ भी हो अमिता, मेरे जीवन भर की तपस्या मिन्टों में, मेरे सामने ही, देखते-देखते. नष्ट-भ्रष्ट हो गई. इसका मुझे बहुत दुख है! फिर भी मुझमें अभी काफ़ी शक्ति है, मैं कभी भी गिरफ़्तार होकर पुलिस के अत्याचारों को निमंत्रण न दूँगा, हालाँकि आज पुलिस के ही हाथों में सारी शक्ति है, हर आदमी सन्देह में ही गिरफ़्तार किया जा सकता है, चाहे वह अपराधी हो, चाहे न हो. मैं सबसे पहले इस बात की कोशिश करूँगा कि कपूर तुम्हारे सामने आ जाये.'

अमिता फिर भी चुप बैठी रही.

'तुम दुखी मत होना. ज़्यादा चिन्ता भी न करना. जब तक मैं हूँ, तब तक तुम्हें कुछ सोचने की ज़रूरत नहीं. ज़्यादा फ़िकर करोगी तो होनेवाली सन्तान पर अच्छा असर न पड़ेगा, यह याद रखना. मेरा ख़याल है, पुलिस रस्तोगी को बहुत जल्द पकड़ेगी. वे काँग्रेसी हैं, यह किसी से छिपा नहीं है, उन्होंने अगस्त प्रस्ताव को पास कराने की कोशिश की है, इसलिए उनके नाम जो वारन्ट है, वह पुलिस की ज़्यादती नहीं कही जा सकती.'

अमिता ने अनिल की ओर देखा. अनिल बोला—'लेकिन डरने की बात नहीं है. मैं हूँ तब तक, जेल में भी, उन्हें कोई तक़लीफ़ न होगी. इस बात का तुम यक़ीन करलो अमिता, कि मेरे हाथ में आज भी बहुत शक्ति है, हालाँकि आज मैं अकेला रह गया हूँ.'

तब अनिल ने हाथ पकड़ कर उसे उठाया, कहा—'अब चलो, जो होना होगा, उससे भयभीत होने से क्या लाभ! उसका मुक़ाबला तो करना ही पड़ेगा.'

'तुम्हें रुपए की ज़रूरत पड़ेगी?'

'नहीं.'

× × ×

तीन बज चुके हैं. सूनसान सड़कों पर आर्म्ड-पुलिस, तत्परता से, पैट्रोलिंग कर रही है.

अमिता घर पहुँची तो ज्ञात हुआ कि रस्तोगी को, ट्रेन से उतरते ही, गिरफ़्तार कर लिया गया है.

३०

आज़ादी के सपने देखने वाले और आज़ादी की आशा लेकर चलने वाले, परतंत्र-देश के यात्री को जीवन भर विश्राम नहीं है. उसके सामने ख़त्म न होनेवाला रास्ता पड़ा है. रास्ते में ठहरने के लिए न कोई मुकाम है, न शाम होने का भरोसा—सिर्फ़ न खत्म होनेवाला दिन ही उसका साथी है. मंज़िल कहाँ है, यह मालूम होने पर भी उसे चलते रहना है, लेकिन रास्ते का अन्त न हो सकेगा, जब तक कि मुल्क गुलामी की अज़हद मज़बूत जंज़ीरों में जकड़ा हुआ मुक्ति का इन्तज़ार करता है. इस रास्ते पर बहुत से मुसाफ़िर चल रहे हैं, मंजिल तक पहुँचने के विभिन्न-कार्यक्रम और रास्ते उनके सामने हैं, लेकिन अनिल उन सब मुसाफ़िरों से भिन्न है, उसका रास्ता और कार्यक्रम भी सबसे जुदा है, जोकि किसी को मालूम नहीं.

तपेदिक के आख़िरी स्टेज पर खड़े मरीज़ जैसा, काँपता हुआ, इकराम कसाई का मकान और अनिल जैसा मुसाफ़िर उस मकान के मालिक जैसे आदमी का महमान है—

अनिल चुप बैठा है.

इकराम ने कहा—'कपूर बाबू दस तारीख़ की रात को यहाँ आये, उन्होंने कानपुर के रस्तोगी बाबू की बेग़म साहबा से मिलने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की. आपका हुक्म था, इसलिए उनके आने पर मैं एक मिनट के लिए भी उनसे अलग न हुआ. उन्होंने कहा था कि मेरा पता आपने ही उन्हें दिया था. खैर, मुझे ये नहीं मालूम था कि वे आप लोगों की आँख बचाकर भाग आए हैं. मैंने रामलाल को बीस

रुपए देकर कानपुर भेजा, लेकिन अब आप कहते हैं कि वह गिरफ़्तार हो गया है.'

'हाँ.'

'इसके बाद एक दिन शाम को वे घर से बाहर निकले. मैं उन्हें मना न कर सका. पुलिस की चौकी की ओर वे जा रहे थे और मैं ज़रूरत के वक़्त उनकी मदद कर सकूँ, इसलिए उनके पीछे-पीछे चल रहा था, पर उन्होंने पीछे न देखा.

'पुलिस की चौकी में दंगाइयों पर मार पड़ रही थी और तीन चार सौ आदमियों की भीड़, चौकी पर हमला करने को, एक ओर से चली आ रही थी. भीड़ के पास ईंटें, लाठियाँ और बल्लमें थीं.'

'हाँ.'

'इतने में कपूर साहब भीड़ के सामने आ गए और कहा कि लड़ाई मत करो, लेकिन भीड़ रुकी नहीं. उधर पुलिस भी मैदान में आ गई. दोनों तरफ़ पूरी मुस्तैदी थी. पुलिस वालों ने बन्दूकें तान लीं. कपूर साहब ने हाथ उठाकर भीड़ को हट जाने के लिए कहा. इतने में, भीड़ के आगे खड़े, एक आदमी ने कहा कि कपूर साहब ग़द्दार हैं. तभी एक दूसरे आदमी ने उनके सिर पर लाठी मार दी. वे वहीं गिर पड़े, तो पुलिस उन्हें उठा ले गई. जब पुलिस ने हवाई-फ़ायर किये तब भीड़ तितर-बितर हो गई. इसके बाद पता नहीं, कपूर साहब का, क्या हुआ.'

अनिल ने गहरी साँस ली, धीरे से कहा—'अब मैं अमिता को क्या जवाब दूँगा! रस्तोगी गिरफ़्तार हो गया, कपूर भी अब तक किसी जेल में पहुँच गया होगा.'

'तो हुज़ूर, मैं क्या करूँ अब?'

'तुम्हें डरने की कोई बात नहीं है इकराम!' सौ रुपए का एक नोट उसे देते हुए अनिल ने कहा—'मैं आज तो जा रहा हूँ, पर कल रात को

फिर आऊँगा और तब तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हारे लिए कोई काम है या नहीं.'

इकराम ने नोट लेकर, सलाम करने के बाद, जब गर्दन उठाई तो देखा कि अनिल जाने के लिए तैयार है.

अनिल ने इकराम के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—'घबराना मत!'

इकराम कसाई की आँखें नम हो गईं, कहा—'आप की ख़िदमत करने का मौक़ा जल्दी ही मिले, ख़ुदा से यही इबादत करूँगा.'

अनिल इकराम के कन्धे पर थपकी देकर बाहर चला गया.

× × ×

काली रात की सघनता बारिश होने के कारण और भी बढ़ गई है. इकराम अपनी कोठरी में बैठा अनिल का इन्तज़ार कर रहा है. दीवारों पर पानी बह रहा है और छत जगह-ब-जगह चू रही है. एक कोने में रखी, कालिख से पुती चिमनी चढ़ी, लालटेन टिमटिमा रही है.

एकाएक दरवाजे की साँकल धीरे से खटकी. इकराम ने भाग कर द्वार खोला, तो पानी से तर-ब-तर अनिल को सामने पाया.

अनिल ने शीघ्रता से दरवाज़ा बन्द करके कहा—'पुलिस पचास ग़ज़ के फ़ासले पर मेरे पीछे है.'

दस मिनट बाद भारी जूतों की आवाज़ आई और फ़ेड-आउट हो गई, तब अनिल ने इकराम की ओर देखा और अन्दर चला गया.

'बड़ी ग़लतियाँ हो रही हैं इकराम! पुलिस आज तक मेरे इतने नज़दीक कभी नहीं आई थी, ख़ैर! कपूर घायल हुआ है. वह नज़रबन्द कर लिया गया है और जेल के अस्पताल में ही उसका इलाज हो रहा है. अगर कपूर को कुछ हो गया तो मैं गवर्नमेन्ट से जवाब तलब करने के लिए मजबूर हो जाऊँगा और बता दूँगा कि उसकी जान को कितनी क़ीमत है. दो एक दिन मैं उसकी हालत के बारे में जानने का इन्तज़ार करूँगा. अगर हालत ठीक न हुई तो मुझे रुकना होगा; वरना

आज से तीसरे दिन, मेरे लौटने पर, तुम मेरे साथ काश्मीर चलोगे. ज़मीर काश्मीर में ही है, उसीके पास चलना है.'

इकराम चुपचाप खड़ा रहा.

'हाँ, मुझे कपड़े दो. मेरे साथ तुम्हें दो मील तक चलना होगा. वहाँ एक कार मेरी राह देख रही होगी. मैं आज ही कानपुर पहुँचूँगा, क्योंकि अमिता को कपूर के बारे में सब कुछ बताना बहुत ज़रूरी है.'

इकराम ने अपना, टीन का टूटा हुआ, बक्स खोला और एक तहमद, रंगीन सिल्क का कुरता और फूलदार-बास्कट निकालकर अनिल के सामने रख दिए.

अनिल ने मुसकराके कहा—'ये कपड़े क़ाफ़ी ठीक रहेंगे इकराम !'

३१

अमिता सो रही है—पता नहीं, परियों के देशवाली सुखद-नींद उसकी आँखों में है, या ग़ुलाम देश की ग़रीबी, बेकारी, दुख और आँसुओं से भीगी दरिद्रता की नींद ; लेकिन वह सो रही है, इसमें शक नहीं. खिड़की की राह अनिल अकस्मात् कमरे में आ उपस्थित हुआ और लाइट जला दी.

अमिता को जगाकर अनिल उसी के पलंग पर चुपचाप बैठ गया. जब अमिता प्रकृतिस्थ हो गई तो अनिल ने कहा—'इकराम के कपड़े पहन कर आया हूँ, पर इकराम कसाई नहीं हूँ अमिता ! रस्तोगी बहुत जल्द छूट जाएँगे, अगर उनपर मुक़द्दमा चलाया गया. कपूर की बाबत यह पता लगा है कि—वह घायल अवस्था में गिरफ़्तार किया गया है.........'

'घायल अवस्था में ?'

'हाँ, पर मैं कह चुका हूँ कि मेरे रहते डरने की बात नहीं है. अगर उसे कुछ हो गया तो मैं यां बैठा न रहूँगा, इस बात को कभी मत भूलना. वैसे आशा है कि वह जल्द अच्छा हो जायेगा. इस बार उसका छूटना मुश्किल है, क्योंकि यह पता नहीं चल सका कि वह कहाँ बन्द है.'

'फिर क्या होगा ?'

'घबराओ मत अमिता ! इससे बच्चे की प्रकृति पर बुरा असर पड़ेगा. हाँ, कपूर सही-सलामत वापस आयेगा, यह आशा एक पल के लिये भी अपने मन से दूर न करना.'

'मेरी तबियत ठीक नहीं रहती तुम जानते हो, ऐसी हालत में अकेले मेरा मन बड़ा दुखी रहता है.'

'चिन्ता मत करो अमिता ! ज़रूरत के वक़्त मैं तुम्हारे पास हूँ, यह क्यों भूलती हो ?'

'वैसे तो कल चाची वग़ैरह आ जायेंगी, लेकिन.....'

'लेकिन कुछ नहीं अमिता ! मैं जा रहा हूँ, तुम फ़िक्र मत करना. मैंने तुम्हें वचन दिया है, कपूर सही-सलामत वापस आयेगा, समझीं ?'

'तुम कब आओगे फिर ?'

'अगर कपूर अच्छा हो गया तब तो मैं कुछ दिनों तक न आ सकूँगा, क्योंकि इस बीच थोड़े दिन के लिए बाहर जाना है—लेकिन अगर उसे कुछ हो गया तो फिर मैं तब आऊँगा जब तुम्हें यह बता सकूँगा कि मैंने उसकी मौत का कितना भयानक बदला लिया है. फिर भी मुझे आशा है कि वह अच्छा हो जायेगा. तुम क़तई चिन्ता न करना. मेरे न होने पर, दूसरे लोग मुझे हर बात का समाचार फ़ौरन देंगे और तब मैं किसी वक़्त भी तुम्हारे पास आ जाऊँगा.'

'लेकिन ऐसा न करना कि ख़ुद के लिए ख़तरा हो जाये.'

'नहीं-नहीं, अमिता ! मैं सब देख-समझ कर क़दम उठाता हूँ.'

अनिल उठ खड़ा हुआ. अमिता उठने लगी तो कहा—'तुम बैठो, मैं चला जाऊँगा.' और अनिल कमरे से निकल कर दूसरे कमरे में पहुँचा, फिर तीसरे कमरे में, फिर सीढ़ी उतर कर नीचे आया, दो कमरे पार किये, हॉल पार किया, फिर कई कमरों के बाद सदर दरवाज़े की ओर बढ़ा.

अनिल इस रास्ते से आया नहीं था. वह पीछे बाग़ की तरफ़ से ऊपर पहुँच गया था, क्योंकि आवाज़ देकर घर के नौकर-चाकरों को जगाना नहीं चाहता था ; लेकिन जाते वक़्त सदर-गेट से जाना उसने बुरा न समझा.

अनिल की बातें सुनकर अमिता मंत्र-मुग्ध सी बैठी रही, जब वह चला गया, काफ़ी देर हो गई, तो उसने आँखें फाड़कर चारों ओर देखा और धीरे से कहा—'अरे, दरवाज़े पर तो पुलिस है.'

वह उठी और भागते हुए, कमरे पार करके, शीघ्रता में सीढ़ी उतरने लगी. उसकी साँस तेजी से चल रही थी, पैर लड़खड़ा रहे थे.

उसके पैरों ने साथ छोड़ दिया और वह लुढ़कते हुए, नीचे फ़र्श पर, जा गिरी. अन्तिम बार उसने फिर कहा—'उधर न जाओ अनिल····!'

ठीक उसी वक़्त बाहर मैदान में शोर हुआ, गोलियों के चलने की आवाज़ें हुईं और अनिल क्षण भर में, पहरे पर खड़ी, पुलिस की आँखों से ओझल हो गया !

× × ×

सरकारी-अस्पताल के डॉक्टर ने रस्तोगी के चचा से कहा—'पेट में बच्चा मर गया है, पर मरीज़ा अभी जी रही है. पेट से बच्चा निकालने के बाद भी अगर ये जीती रही तो कुछ उम्मीद की जा सकती है, नहीं तो········!'

रस्तोगी के चचा ने कुछ न कहा.

३२

अमिता की मृत्यु होने से पहले रस्तोगी के चचा कई अफ़सरों के पास गए, बहुत कोशिश की—हाथ जोड़े, मिन्नतें कीं—पर उससे कोई ख़ास लाभ न हुआ.

जब अमिता न रही तो बड़ी-बड़ी शिफ़ारिशें लेकर, नए सिरे से, फिर कोशिश की.

कई दिन बाद रस्तोगी को पन्द्रह दिन के लिए—पैरोल पर—छोड़ा गया. जिस समय वह जेल से बाहर आ रहा था, लगता था जैसे उसमें शक्ति नहीं रही है ; पीला पड़ा हुआ चेहरा नीचे झुकाए वह मोटर में जा बैठा, उसके दिल का दर्द पसीने से चमकते हुए चेहरे पर फूटा पड़ रहा था.

उसे अमिता के 'फूल' ही नसीब हो सके !

काश ! अमिता के जीवन-काल में रस्तोगी और कपूर, दो क्षण के लिए ही, उसके सामने पहुँच जाते और अनिल, काश्मीर जाने से पहले, इस बलिदान की बात सुन लेता.

बिदा !

[पैरोल पर